...ی اپیل

از جلال بھارتی (جموں)

...بھگوان کرشن چندر نے اسی دن جنم لے کر ...
...نے دھرم کی یادگاروں کو از سر نو قایم کیا تھا۔
...آؤ! آج ہم بھی گیان اور کرم سے بھنڈار کی یاد میں
...میدان میں سپاہی بن کر فرض ادا کر سکیں۔ آج ہم
...ہماری ہستی نیستی کے برابر ہے۔ آؤ! ہم دنیا میں

...آؤ! ہم زمانے کو یوں سکھا دیں۔ اور قلم کو طاقت
...دنیا میں ہی گذر گئے۔ آؤ! آج ہم پرن کریں کہ ہم
...ہستی کا ثبوت دیں گے۔ بھائیو! اپنی سنگھٹن
...سنگھٹن کے لئے سب کچھ قربان کر دو۔ ایسی
...کر کام کرنے کی صلاحیت پیدا کرو۔
...کی چیز ہے۔ اگر ہماری زبان بند رہی۔ تو تم کسی
...آج ضرورت ہے۔ کہ تمہارے کئی روزنامے شایع
...دل سے مطلب میں کس طرح کام یاب ہو سکتے۔ آؤ
...قوان سے پرارتھنا کریں کہ ہمیں اپنے مقصد میں پورا

کرشن میری نظروں میں

مولانا عبد الغفار صاحب صدر محفل مقدس
پیر بہائیان کشمیر

آپ کا سندیشہ آیا کہ میں شری کرشن جی کے پوتر جیون کے متعلق کچھ لکھ کر اپنا پریم پرکٹ کروں۔ کرشن بھگوان کی حیات پاک اس قدر بتلانے آتے ہے۔ کہ میرے جیسی بدھی کا مالک یہ نہیں جان سکتا۔ کران ہیر دل میں ہے کون سا ہیرا چھپے۔ مگر ایک سبق ایسا ہے۔ کہ اس کو اگر آج کل کے ہندوستانی یاد کر لیں۔ تو ہندوستان کی اخلاقی اسماجی و اقتصادی غلامی کا پاپ آج کٹ جاتے۔ زندہ جاوید تصنیف گیتا کا ترجمہ ہندوستان میں سب سے پہلے توبیت کے خیال سے بابا اکبر بادشاہ نے کرایا۔ ایک شلوک کا ترجمہ دو شعروں میں فیضی نے یوں کیا ہے :—

شہادت گر نبود از ان برتری نیفتد کیے نسبت جز کشتری اگر مردہ گردی بخلد است جا۔ دگر فتح یابی بادشاہ —

ترجمہ :— شہادت یعنی ملک دھرم جاتی یا دھرم کے لئے جان دینے سے زیادہ کوئی عزت نہیں۔ اگر مر گئے۔ تو جنت پا اور جیت گئے۔ تو حکومت آج ہمارے ہم وطنوں میں ایسے جو کمزوری پیدا کر دی ہے۔ وہ ہماری موجودہ ذہنی اخلاقی و اقتصادی غلامی کا باعث ہے۔ اگر نوجوان ہمارے دیش باسیوں کو دوست کے خطرہ سے نکال دے۔ تو میں سمجھوں گا۔ کہ اس نے کرشن ایڈیشن نکال کر وہ کام کیا۔ جو مہاتما گاندھی سے بھی نہ ہو سکا۔



नणा इति ॥ अथवा (ससंन्यासीचयोगीचननिरग्निर्नचाक्रियः) यावचनका यहअर्थकरणा ॥ श्रौतअग्नितैंरहितपुरुष कोईसंन्यासी कह्याजावैनहीं ॥ तथा क्रियातैंरहितपुरुष कोईयोगी कह्याजावैनहीं ॥ किंतु ताश्रौतअग्निवाला तथाताक्रियावाला जोनिष्कामकर्मोंकेकरणेहारापुरुषहै सोकर्मीपुरुषहीं संन्यासीजाननणा तथायोगीजानणा ॥ इसप्रकारतैं सोनिष्कामकर्मीपुरुष स्तुतिकऱ्याजावैइति ॥ ईहां यद्यपि अक्रिय याशब्दकरिकैहीं सर्वकर्मोंकेसंन्यासीकी प्रतीतिहोइसकेहै यातैं निरग्निः यहपदव्यर्थहै ॥ तथापि अग्निशब्दतैं सर्वकर्मोंकाग्रहणकरिकै निरग्निः याशब्दकरिकैं संन्यासीका कथनकऱ्याहै ॥ तथा क्रियाशब्दतैं सर्वचित्तकेवृत्तियों काग्रहणकरिकै अक्रिय याशब्दकरिकै निरुद्धचित्तवृत्तिवालेयोगीका कथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ सोनिरग्निपुरुष संन्यासीकह्याजावैनहीं ॥ तथा अक्रियपुरुष योगीकह्याजावैनहीं ॥ किंतु सोनिष्कामकर्मोंकेकरणेहारा कर्मीपुरुषहीं संन्यासी तथायोगी कह्याजावैहै इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां जैसे (सिंहो देवदत्तः) इसवचनविषे पशुरूपसिंहतैंभिन्न मनुष्यरूपदेवदत्तविषे तासिंहकेसदृशशूरताक्रूरताआदिकगुणोंकूंग्रहणकरिकैं सोसिंहशब्द प्रवृत्तहोवैहै ॥ तैसे असंन्यासविषे संन्यासशब्दकेप्रवृत्तिका तथाअयोगविषे योगशब्दकेप्रवृत्तिका निमित्तरूपजोसमानगुणहै तागुणकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) यंसंन्यासमितिप्राहुर्योगंतंविद्धिपांडव ॥ नह्यसंन्यस्तसंकल्पोयोगीभवतिकश्चन ॥ २ ॥ यं । संन्यासम् । इति । प्राहुः । योगं । तं । विद्धि । पांडव । न । हि । असंन्यस्तसंकल्पः । योगी । भवति । कश्चन ॥ २ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन जिसकूं श्रुतियां संन्यास ईसनामकरिकै कथनकरैहैं तिसकूंहीं तूं योगरूप जान जिसकारणतैं संकल्पकेत्यागतैंरहित कोईभीपुरुष योगी नहीं होवैहै ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ (न्यासएवातिरेचयत् । ब्राह्मणाःपुत्रैषणायाश्चवित्तैषणायाश्चलोकैषणायाश्चव्युत्थायाथभिक्षाचर्यंचरंति) इत्यादिकअनेकश्रुतियां जिसफलसहित सर्वकर्मोंकेत्यागकूं संन्यास यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ तिससंन्यासकूंहीं तूं अर्जुन योगरूप जान ॥ इहां फलकीइच्छाका तथा कर्तृत्वअभिमानका परित्याग करिकै जोशास्त्रविहितशुभकर्मोंकाअनुष्ठानहै ताकानाम योगहै अर्थात् तासंन्यासकूं तूं निष्कामकर्मयोगरूप जान ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे अब्रह्मदत्तकूं यहब्रह्मदत्तहै याप्रकार जोकोईकहैहै ॥ ताकहणेकरिकै यहजान्याजावैहै ॥ यह ब्रह्मदत्तकेसदृशहै ॥ काहेतैं किसीअन्यवस्तुकावाचकजोशब्दहै ताशब्दका जबी किसीअन्यवस्तुकेजनावणेवास्ते उच्चारणहोवैहै ॥ तबी सोशब्द गौणीवृत्तिकरिकै अथवा तद्भावकेआरोपकरिकै तिसअन्यवस्तुविषे स्ववाच्यार्थके सादृश्यताकूंहीं बोधनकरैहै ॥ सो इहां प्रसंगविषे कौनसादृश्यधर्महै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तासादृश्यधर्मकूं कथनकरैहैं (नह्यसंन्यस्तसंकल्पो

योगीभवतिकश्चनइति ॥) जिसकारणतैं फलसंकल्पकेत्यागतैंरहित कोईभीपुरुष योगीहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वयोगीजन फलसंकल्पकेत्यागवालेहींहोवैहैं ॥ तिस कारणतैं फलकात्यागरूप समानधर्मतैं तथातृष्णारूपचित्तवृत्तिकेनिरोधकसमानतातैं गौणीवृत्तिकरिकै सोकर्मीपुरुषहींहै संन्यासीहै तथायोगीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ संन्यासीशब्दका मुख्यअर्थजो फलसहितसर्वकर्मोंकात्यागीहै ॥ ताकेविषे जैसे स्वर्गादिकफलोंकात्यागरहेहै ॥ तैसे निष्कामकर्मीपुरुषविषेभी सोस्वर्गादिक फलोंकात्याग रहेहै ॥ यातें सोसंन्यासीशब्द गौणीवृत्तिकरिकै ताकर्मीपुरुषविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ तथायोगीशब्दका मुख्यअर्थजो सर्वचित्तवृत्तियोंकेनिरोध वालाहै ॥ ताकेविषे जैसे फलकीतृष्णारूपचित्तवृत्तिकानिरोधरहेहै ॥ तैसे निष्कामकर्मीविषेभी सो फलकीतृष्णारूपचित्तवृत्तिकानिरोध रहेहै ॥ यातें सोयोगी शब्दभी गौणीवृत्तिकरिकै ताकर्मीपुरुषविषे प्रवृत्तहोवैहै इति ॥ अब इसीअर्थकूं योगसूत्रोंकरिकैस्पष्टकरेहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥ प्रमाणवि पर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयःइति ॥) अर्थयह ॥ चित्तकीसर्ववृत्तियोंकाजोनिरोधहै ताकानाम योगहैइति ॥ तेचित्तकीवृत्तियां प्रमाण १ विपर्यय २ विकल्प ३ निद्रा ४ स्मृति ५ यहपंचप्रकारकीहोवैहैं ॥ तहां प्रमाकाजोकरणहोवे ताकूं प्रमाणकहेहैं ॥ सोप्रमाणभी प्रत्यक्ष अनुमान शब्द उपमान अर्थापत्ति अनुपलब्धि यहषट्प्रकारकाहोवैहै ॥ याप्रकारका वैदिकपुरुष अंगीकारकरेहैं ॥ और प्रत्यक्ष अनुमान आगम यहतीनप्रकारकाप्रमाणहोवैहै याप्रकार योगशास्त्रवाले अंगीकारक रेहैं ॥ तहां किसीप्रमाणका किसीप्रमाणविषे अंतर्भावहोवैहै ॥ और किसीप्रमाणका किसीप्रमाणतेबहिर्भावहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनप्रमाणोंका परस्पर अंतर्भाव तथा बहिर्भाव अंगीकारकरिकै किसीशास्त्रविषे तिनप्रमाणोंकासंकोचकऱ्याहै ॥ और किसीशास्त्रविषे तिनप्रमाणोंकाविस्तारकऱ्याहै ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द यहच्यारिहीं प्रमाणहोवैहैं ॥ तहां नैयायिकोंनें अर्थापत्तिप्रमाणका केवलव्यतिरेकीअनुमानविषेही अंतर्भावकऱ्याहै ॥ और अनुपलब्धिप्रमा णका प्रत्यक्षप्रमाणविषेही अंतर्भावकऱ्याहै ॥ इसप्रकार अन्यमतोंविषेभी तिनप्रमाणोंकीन्यूनअधिकताजानिलेणी ॥ यद्यपिनैयायिकादिकोंकेमताविषेप्रत्यक्षादिक प्रमाकेकरणहोणेतैं इंद्रियादिकहीं प्रत्यक्षादिप्रमाणरूपहैं॥ तथापि योगशास्त्रकेमतविषे इंद्रियादिकोंकरिकैउत्पन्नहुईजेचित्तकीवृत्तियांहैं तेवृत्तियांहीं प्रत्यक्षादिप्रमाणरू पहैं ॥ और तिन वृत्तियोंविषे जोचेतनकाप्रतिबिंबहै ॥ सोप्रतिबिंब प्रत्यक्षादिप्रमारूपहै ॥ यातैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं चित्तकीवृत्तिरूपकथनकऱ्याहैइति ॥ १ ॥ और मिथ्याज्ञानकानाम विपर्ययहै ॥ सोविपर्ययभी अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश इसभेदकरिकैपंचप्रकारकाहोवैहै ॥ तिनअविद्यादिकपंचक्लेशोंकास्वरूप पूर्वपंचमअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैंइति ॥ २ ॥ और शब्दश्रवणतैंअनंतरउत्पन्नहोणेहारी तथाअर्थरूपवस्तुतैंरहित ऐसीजाचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम विकल्पहै जैसे वंध्यापुत्रोअस्ति नरशृंगोअस्ति इत्यादिक शब्दोंकेश्रवणतैंअनंतर ताश्रोतापुरुषकी वंध्यापुत्रविषयक तथानरशृंगविषयक चित्तकीवृत्ति

अवश्यकरिकै उत्पन्नहोवैहै ॥ और तावृत्तिकाविषयरूप वंध्यापुत्र तथानरशृंग अत्यंतअसत्हैं ॥ यातैं असत्अर्थविषयक तेवृत्तियां विकल्परूपकहीजावैहैं ॥ सोयहविकल्प विषयरूपवस्तुतैंरहितहोणेतैं प्रमारूपभी कह्याजावैनहीं ॥ तथा यहविकल्प बाधज्ञानकेविद्यमानहुएभी अवश्यकरिकैउत्पत्तिवालाहोणेतैं तथाव्य वहारकाहेतुहोणेतैं विपर्ययरूपभीनहींहै ॥ जैसे चैतन्यहींपुरुषहोवैहै याप्रकारतैं चैतन्य पुरुष दोनोंके अभेदकेनिश्चयहुएभी पुरुषकाचैतन्यहै याप्रकारकेशब्दश्रवण तेअनंतर चैतन्यपुरुषकेभेदकूंविषयकरणेहाराविकल्पज्ञानहोवैहै यातै सोविकल्पज्ञान विपर्ययरूपभीनहींहैं ॥ बाधज्ञानकेविद्यमानहुए सोविपर्ययज्ञान उत्पन्नहोता नहीं ॥ किंतु सोविकल्पज्ञान प्रमाज्ञानतैं तथाभ्रमज्ञानतैं विलक्षणहींहोवैहै ॥ यहहींविकल्पकास्वरूप (शब्दज्ञानानुपातीवस्तुशून्योविकल्पः) इससूत्रविषे पतं जलिभगवान्ने कथनकऱ्याहैइति ॥ ३ ॥ और प्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति याच्यारिप्रकारकीवृत्तियोंकेअभावकाकारणरूपजोतमोगुणहै ॥ तिसतमोगुणकूं विषयकरणेहारी जावृत्तिविशेषहै ताकानाम निद्राहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै ज्ञानादिकोंकेअभावमात्रकानाम निद्राहै यामतकाभी खंडनकऱ्या ॥ यहहींनिद्राकास्वरूप (अभावप्रत्ययालंबनावृत्तिर्निद्रा) इससूत्रविषे पतंजलिभगवान्ने कथनकऱ्याहैइति ॥ ४ ॥ और पूर्वअनुभवजन्यसंस्कारमात्रतैं जोज्ञान उत्पन्नहोवैहै ताकानाम स्मृतिहै सास्मृति सर्ववृत्तियोंकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं पतंजलीभगवान्ने तास्मृतिकूं सर्ववृत्तियोंकेअंतविषेकथनकऱ्याहैइति॥५॥यद्यपि लज्जादिक अनेकप्रकारकी वृत्तियांहोवैहैं ॥ तथापि तिनलज्जादिकसर्ववृत्तियोंकाइनप्रमाणादिकपंचवृत्तियोंविषेहीं अंतर्भावहै ॥ इसप्रकारकी सर्वेचित्तवृत्तियोंकाजोनिरोधहै ॥ सोनिरोधहीं योगकह्याजावैहै ॥ तथा समाधिकऱ्याजावैहै ॥ और कर्मोंकेफलकाजोसंकल्प सो संकल्पभी पंचप्रकारकेविपर्ययविषे रागनामा तीसराविपर्ययविशेषहै तिसरा गरूपफलसंकल्प केनिरोधमात्रकूंही ईहां गौणीवृत्तिकरिकै योगनामकरिकै तथासंन्यासनामकरिकै कथनकऱ्याहैं ॥ यातैं किंचित्मात्रभीईहां विरोधहोवैनहीं इति ॥ २ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्व आपने कर्मयोगकी श्रेष्ठताकथनकरी ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ श्रेष्ठहोणेतैं सोकर्मयोगहीं इसअधिकारीपुरुषकूं जीवत्कालपर्यंत करणेयोग्यहै ॥ और (यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोति) यहश्रुतिभी जीवत्कालपर्यंत अग्निहोत्रादिककर्मोंकीकर्त्तव्यताकूंही कथनकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकर्मयोगकेअवधिकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥योगारूढस्यतस्यैवशमः कारणमुच्यते ॥ ३ ॥ आरुरुक्षोः । मुनेः । योगं । कर्म । कारणम् । उच्यते । योगारूढस्य । तस्य । एव । शमः । कारणम् । उच्यते ॥ ३ ॥(इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन योगविषे आरू

ढहोणेकीइच्छावान् मुनिकूं तायोगकीप्राप्तिविषे नित्यकर्मही समाधानरूप कथनकऱ्याहै तथा तायोगविषेआरूढहुए तिसीहीपुरु
षको ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतै संन्यास हीं साधनरूप कथनकऱ्याहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक जोसर्वविषयसुखोंतैं तीव्रवैराग्यहै ताकानाम योगहै ऐसेयोगविषेआरूढहोनेंकीइच्छावाला जोपुरुषहै ताकानाम आरुरुक्षु है और सोआरुरुक्षुपुरुष अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर आगे सर्व कर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासवालाहोणाहै यातैं अबी ताकूं मुनिकह्याहै ॥ अथवा अबीहीं फलकीतृष्णातैंरहितहै यातैं ताकूं मुनिकह्याहै ॥ ऐसे आरुरुक्षुमुनिकेप्रति तायोगविषेआरूढहोणेवास्ते अर्थात् तायोगकीप्राप्तिवास्ते वेदविहित निष्काम अग्निहोत्रादिकनित्यनैमित्तिककर्महीं साधनरूपकरिकै हमने तथावेदभगवान्ने विधानकऱ्याहै ॥ और सोईहीकर्मीपुरुष जबी तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिरूपयोगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष योगारूढकह्याजावैहै ॥ ऐसेयोगारूढपुरुषकूं पुनः तेकर्म कर्त्तव्यनहींहै ॥ किंतु तायोगारूढपुरुषकूं ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवास्ते सर्वकर्मोंकासंन्यासरूपशमहीं साधनरूपकरिकै विधानकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जितनैंकालपर्यंत इसअधिकारीपुरुषकूं अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक वैराग्यकीप्राप्तिनहींभई ॥ तितनैंकालपर्यंत यहअधिकारीपुरुष तावैराग्यकी प्राप्तिवास्ते फलकीइच्छातैंरहितहोइकै शास्त्रविहित नित्यनैमितिककर्मोंकूंहींकरै ॥ और जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक तावैराग्यकूंप्राप्तहोवै तिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष पुनःतिनकर्मोंकूंकरैनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे श्रवणमननादिद्वारा ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवास्ते सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकूंहींकरै ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिपर्यंतहीं तेकर्म कर्त्तव्यहैं ॥ जीवतकालपर्यंत तेकर्म कर्त्तव्यनहींहै ॥ और यावज्जीवं यहश्रुतितौ वैराग्यहीनपुरुषऊपरिहै ॥ वैराग्यवान्पुरुषऊपरि यहश्रुतिहैनहीं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसयोगारूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेका अधिकारीहोवैहै ॥ तिसयोगारूढअवस्थाकूं यहअधिकारीपुरुष किसकालविषे प्राप्तहोवैहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकालका निरूपणकरैहै ॥

(मू० श्लो०) यदाहिनेंद्रियार्थेषुनकर्मस्वनुषज्जते ॥ सर्वसंकल्पसंन्यासीयोगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥ यदा । हि । न । इंद्रियार्थेषु । न । कर्मसु । अनुषज्यते । सर्वसंकल्पसंन्यासी । योगारूढः । तदा । उच्यते ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष शब्दादिकविषयोंविषे नहीं आसक्तहोवैहै तथा कर्मोंविषे नहीं आसक्तहोवैहै तथा सर्वसंकल्पोंतैंरहितहोवैहै तिसकालविषे योगारूढ कह्याजावैहै ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिस चित्तकेनिरोधकालविषे यहअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंके शब्दादिकविषयोंविषेअनुषंगकूं नहींकरेहै ॥ तथा नित्यकर्म नैमित्तिककर्म काम्यकर्म लौकिककर्म प्रतिषिद्धकर्म इत्यादिककर्मोंविषे अनुषंगकूं नहींकरेहै ॥ अर्थात् तिनशब्दादिकविषयोंविषे तथातिनकर्मोंविषे मिथ्यात्वबुद्धिकरिकै तथा अकर्त्ताअभोक्ताअद्वितीयपरमानंदस्वरूपआत्माकेदर्शनकरिकै तिनविषयोंतैं तथातिनकर्मोंतै स्वप्रयोजनकेअभावकानिश्चयकरिकै जोपुरुष इनकर्मोंका मैंकर्त्ताहूं तथामेरेकूं यहशब्दादिकविषय भोगणेयोग्यहै याप्रकारकेअभिनिवेशरूप अनुषंगकूंनहींकरेहै ॥ याकारणतैंहीं जोपुरुष सर्वसंकल्पोंकासंन्यासीहै ॥ अर्थात् यहकर्म हमनैं करणाहै यहफल हमने भोगणाहै इसप्रकारके मनकीवृत्तिविशेषरूप जेसंकल्पहैं ॥ तथा तिनसंकल्पोंकेविषयभूत जेनानाप्रकारके कामहैं ॥ तथा तिनकामोंकेसाधनरूप जितनेकिकर्महैं ॥ तिनसर्वोंका त्यागकऱ्याहैजिसनैं ऐसाआसक्तितैंरहितपुरुष तिसकालविषे समाधिरूपयोगविषेआरूढहोणेतैं योगारूढ कह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषयोंविषे तथाकर्मोंविषे जोअभिनिवेशरूप अनुषंगहै ॥ तथा ताअनुषंगकाकारणरूपजोसंकल्पहै ॥ यहदोनोंहीं तायोगारूढपणेकेप्रतिबंधकहैं ॥ तिसप्रतिबंधकका जिसकालविषे अभावहोवैहै ॥ तिसकालविषे यह अधिकारीपुरुष योगारूढ कह्याजावैहै ॥ इति ॥ ४ ॥ ❋ ॥ किंवा जोअधिकारीपुरुष जिसकालविषे इसप्रकारका योगारूढहोवैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष तिसकालविषे आपणेआत्माकूं आत्माकरिकैहीं इससंसारसमुद्रतैं उद्धारकरेहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष योगारूढहोइकै आपणेआत्माकूं इससंसारसमुद्रतैं अवश्यकरिकै उद्धारकरै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) उद्धरेदात्मनात्मानंनात्मानमवसादयेत् ॥ आत्मैवह्यात्मनोबंधुरात्मैवरिपुरात्मनः ॥ ५ ॥ उद्धरेत् । आत्मना । आत्मानं । न । आत्मानम् । अवसादयेत् । आत्मा । एव । हि । आत्मनः । बंधुः । आत्मा । एव । रिपुः । आत्मनः ॥ ५ ॥ (इतिपद०)

हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष आपणेजीवात्माकूं विवेकयुक्तमनकरिकै इससंसारतैं उद्धारकरै ताजीवात्माकूं संसारसमुद्रविषे नहीं डुबावै जिसँकारणतैं आपणाआत्मा हीं आत्माका बंधुहै तथाआत्मा हीं आत्माका शत्रुहै ॥ ५ ॥ (इतिप०) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन लोकप्रसिद्धसमुद्रकीन्यांई यहसंसारसमुद्रभी स्त्री पुत्र धन मित्र इत्यादिकपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे महामोहरूप अनेकआवर्त्तोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा काम क्रोध लोभ अहंकार ममकार इत्यादिकचित्तकेविकाररूप अनेकमहाग्राहोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अनेकप्रकारके महारोगरूप तिमिंगिलोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अशनायापिपासादिरूप महान्कल्लोलोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा तीनतापरूप वडवानलकरिकैयुक्तहै ॥ तथा प्रियपदार्थोंकेवियोगजन्य अनेकप्रकारकेप्रलापरूप महाध्वनिरूपशब्दकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नित्यनिरंतर दुर्वासनारूप शैवालपटलकरिकैयुक्तहै ॥ तथा विषयरूपविषकरिकै परिपूर्णहै ॥ इसप्रकारकेसंसारसमुद्रविषे

निमग्नहुआ जोयहजीवात्माहै ॥ तिसआपणेजीवात्माकूं यहअधिकारीपुरुष विवेकयुक्तशुद्धमनकरिकै तासंसारसमुद्रतैं बाह्यनिकासे ॥ अर्थात् विषयासक्तिकाप रित्यागकरिकै तिसयोगारूढताकूं संपादनकरै ॥ यहहीं जीवात्माका तासंसारसमुद्रतैं उद्धरणहै ॥ परंतु यहअधिकारीपुरुष तिनविषयोंविषेआसक्तिकरिकै आपणेआत्माकूं तासंसारसमुद्रविषे निमग्नकरैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मा आपहीं आपणा हितकारीबंधुहैं ॥ अर्थात् इससंसारबंधनतैं मुक्तकरणेहाराहै ॥ आत्मातैंभिन्न दूसराकोईबंधु इसआत्माका हितकारीनहींहै ॥ काहेतैं इसलोकविषेप्रसिद्ध जितनैंकि स्त्री पुत्र भ्राता आदिकबांधवहैं ॥ तेबांधवतौ आपणेविषे स्नेहकीउत्पत्तिद्वारा तथाभरणपोषणकीचिंताद्वारा इसजीवके बंधनकेंहींहेतुहोवैहैं ॥ यातैं तिनोंविषे बंधुरूपता संभवतीनहीं ॥ और जैसे कोशकारजंतु आपहीं आपणा अहितकारीहोवैहैं ॥ तैसे विषयरूपबंधनग्रहविषेप्रवेशकरणेतैं यहआत्मा आपहीं आपणा अहितकारीशत्रु होवैहै ॥ दूसराकोई इसआत्माका शत्रुहै नहीं ॥ और जेलोकप्रसिद्धबाह्यशत्रुहैं ॥ तिनोंविषेभीइसआत्मानैंहीं शत्रुताकरीहै ॥ यातैं यहजीवात्मा आपहीं आपकाशत्रुहैइति ॥ ५ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ किसप्रकारकाआत्मा आपणा बंधुहोवैहै ॥ तथाकिसप्रकारकाआत्माआपणा शत्रुहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् बंधुआत्माका तथाशत्रुआत्माका लक्षण कथनकरैहैं ॥

(मू०श्लो०)बंधुरात्मात्मनस्तस्ययेनात्मैवात्मनाजितः ॥ अनात्मनस्तुशत्रुत्वेवर्त्तेतात्मैवशत्रुवत् ॥६॥ बंधुः । आत्मा । आत्मनः । तस्य । येन । आत्मा । एव । आत्मना । जितः । अनात्मनः । तु । शत्रुत्वे । वर्त्तेत । आत्मा । एव । शत्रुवत् ॥६॥(इतिप०)हेअर्जुन जिस आत्मानैं यहसंघात विवेकयुक्तमनकरिकै हीं जीत्याहै तिसआत्माका स्वस्वरूपहीं आत्माका बंधुहै और अजितआत्माके शत्रुभावविषे बाह्यशत्रुकीन्यांई आपणाआत्मा हीं वर्त्तेहै ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसआत्मानैं यहदेहइंद्रियादिरूपसंघात केवल विवेकयुक्तशुद्धमनकरिकैहीं आपणेवशकन्याहै ॥ दूसरेकिसीशस्त्रादिकउपायोंकरिकै तासंघात कूंवशकन्यानहीं ॥ तिसआत्माका आपणाआत्माहींआत्माका बंधुहै ॥ काहेतैं जैसे शृंखलारूपबंधनयुक्तपुरुषकी यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे तिसआत्माकीभी यथाइच्छापूर्वककहांभीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥और इसजीवात्माकी नेत्रादिकइंद्रियद्वारा जारूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तिहै साप्रवृत्तिहींइसआत्माके अनेकप्रकार केअनर्थकाहेतुहै ॥ साप्रवृत्ति तिनदेहइंद्रियादिकोंकेवशकरणेतैं निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैंविवेकयुक्तमनकरिकै तासंघातकूंवशकरणेहाराआत्मा आपहीं आपणाबंधु है ॥ औरजिसआत्माने तादेहइंद्रियादिरूपसंघातकूं विवेकयुक्तमनकरिकै आपणेवशनहींकन्याहै ॥ तिसआत्माका आपणा आत्मास्वरूपहीं बाह्यशत्रुकीन्यांई श

नुभावविषे वर्त्तेहै ॥ तात्पर्ययह॥जैसे शृंखलारूपबंधनतैंरहितपुरुष आपणीइच्छापूर्वक विचरेहै ॥ तैसे जिसआत्मानैं विवेकयुक्तमनकरिकै तादेहइंद्रियादिरूपसंघा तकूं आपणेवशनहींकन्याहै सोआत्माभी यथाइच्छापूर्वक शब्दादिकविषयोंविषे विचरेहै ॥ ताविषयपरायणप्रवृत्तिकरिकै सोआत्मा आपहीं आपणाशत्रुहोवैहै इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ अब तासंघातकेवशकरणेहारेआत्माकूं आपणाबंधुपणा स्पष्टकरिकैकथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) जितात्मनःप्रशांतस्यपरमात्मासमाहितः ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषुतथामानापमानयोः ॥ ७ ॥ जितात्मनः । प्रशांतस्य । परमात्मा । समाहितः । शीतोष्णसुखदुःखेषु । तथा । मानापमानयोः ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन शीतउष्णसुखदुः खकेप्राप्तहूएभी तथा मानअपमानकेप्राप्तहूएभी जोआत्मा जितात्माहै तथा प्रशांतहै तिसआत्माकाही परमात्मा समाधिकाविष यहोवैहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन चित्तकूं विक्षेपकीप्राप्तिकरणेहारे जे शीतउष्ण सुखदुःख इत्यादिकद्वंद्वधर्महैं ॥ तिनद्वंद्वधर्मोंकेविद्यमानहुएभी ॥ तथा चित्तकूंविक्षेपकीप्राप्ति करणेहाराजो पूजारूपमानहै तथापराभवरूपअपमानहै ॥ तामानअपमानकेविमानहुएभी ॥ तिनशीतउष्णादिकोंकीप्राप्तिविषे समत्वबुद्धिकरिकै जोआत्मा जितात्मा है ॥ अर्थात् श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियजिसने आपणेवशकरेहैं ॥ तथा जोआत्मा प्रशांतहै ॥ अर्थात् सर्वत्रसमबुद्धिकरिकै रागद्वेषादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ ऐसेजीवा त्माका स्वप्रकाशज्ञानस्वभाव आत्मा समाहित क्या समाधिकाविषय होवैहै ॥ अर्थात् योगारूढहोवैहै ॥ अथवा (परमात्मा) इसवचनविषे परम् आत्मा यहदोपद पृथक्करणे ॥ तहां परं यापदका केवल यहअर्थकरणा ॥ ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जोआत्मा जितात्माहै तथाप्रशांतहै ॥ तिसआत्माकाहीं केवलआत्मा समाहितहोवैहै॥तिसतैंभिन्नआत्माका सोआत्मा समाहितहोवैनहीं॥यातैं यहजीवात्मा जितात्मा तथाप्रशांत अवश्यकरिकैहोवै इति ॥ ७ ॥

(मू० श्लो०) ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माकूटस्थोविजितेंद्रियः ॥ युक्तइत्युच्यतेयोगीसमलोष्टाश्मकांचनः ॥ ८ ॥ ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थः । विजितेंद्रियः । युक्तः । इति । उच्यते । योगी । समलोष्टाऽश्मकांचनः ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः ॥) हेअर्जुन ज्ञानवि ज्ञानकरिकैतृप्तहुआहैचित्तजिसका तथासर्वविक्रियातैंरहित तथाजीत्येहुएहैंइंद्रियजिसनै तथासमानहैमृत्पिंडपाषणकांचनाजिसकूं ऐसायोगीपुरुष योगारूढ इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ गुरुकेउपदेशतैंउत्पन्नभई जाशास्त्रउक्तपदार्थोंकूंविषयकरणेहारीबुद्धिहै ताबुद्धिकानाम ज्ञानहै ॥ और ताबुद्धिविषयक अप्रामाण्यशंकाकीनिवृत्तिहै

फलजिसका ऐसाजोविचारहै ताविचारकरिकै तिसीप्रकार तिनशास्त्रउक्तपदार्थोंका जो आपणेअनुभवकरिकै अपरोक्षकरणाहै ताकानाम विज्ञानहै ॥ ऐसे ज्ञान विज्ञान दोनोंकरिकै तृप्तहुआहै आत्मा क्या चित्त जिसका ताकानाम ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माहै ॥ याकारणतैंहीं जोपुरुष कूटस्थहै अर्थात् जैसे लुहारपुरुषका कूट चलायमानतातैंरहितहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष विषयोंकेसमीपप्राप्तहुएभी तथातिनविषयोंकेभोगणेविषेसमर्थहुआभी चलायमानहोतानहीं ॥ याकारणतैंहीं जोपुरुष विजितेंद्रियहै ॥ तहां रागद्वेषपूर्वक जोशब्दादिकविषयोंकाग्रहणहै तिसतैं निवृत्तकरेहैंश्रोत्रादिकइंद्रियजिसनै ताकानाम विजितेंद्रियहै ॥ विजितेंद्रिय होणेतैंहीं जोपुरुष समलोष्टाऽश्मकांचनहै ॥ अर्थात् यहवस्तु हमारेकूं ग्रहण करणेयोग्यहै यहवस्तु हमारेकूं परित्यागकरणेयोग्यहै याप्रकारकी ग्रहणत्यागबुद्धितैंर हितहोणेतैं समानहै लोष्ठ क्या मृत्पिंड तथाअश्म क्या पाषाण तथाकांचन क्या सुवर्ण जिसकूं ॥ ऐसा परमहंसपरिव्राजक योगी परवैराग्यरूपयोगकरिकैयु क्तहुआ योगारूढ इसनामकरिकै कह्याजावैहै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ किंवा जिसपुरुषकी शत्रुमित्रादिकोंविषे समबुद्धिहै ॥ सोपुरुषतौं सर्वयोगीजनोंतैं श्रेष्ठहै ॥ इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबंधुषु ॥ साधुष्वपिचपापेषुसमबुद्धिर्विशिष्यते ॥ ९ ॥ सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थ द्वेष्यबंधुषु । साधुषु । अपिच । पापेषु । समबुद्धिः । विशिष्यते ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सुहृदमित्रअरिउदासीनमध्य स्थद्वेष्यबंधुइनसर्वोंविषे तथासाधुवोंविषे तथापापियोंविषे तथा अन्यसर्वप्राणीयोंविषैसमबुद्धिकरणेहारापुरुष सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ प्रतिउपकारी नहींअपेक्षाकरिकै पूर्वस्नेहतैंविनाहीं तथापूर्वसंबंधतैंविनाहीं जोपुरुष उपकारकरेहै ताकानाम सुहृदहै ॥ और पूर्वस्नेहकीअपेक्षाकरिकैहीं जोपुरुष उपकारकरेहै ताकानाम मित्रहै ॥ और स्वकृत अपकारकी नहींअपेक्षाकरिकै केवल आपणे क्रूरस्वभावतैंहीं जोपुरुष अपकारकरेहै ताकानाम अरिहै ॥ और परस्परविवादकरतेहुएजेदोपुरुषहैं तिनदोनोंपुरुषोंके हितकी तथा अहितकी नहींइच्छाकरताहुआ जोपुरुष तिनदोनोंकीउपेक्षाहींकरेहै ताकानाम उदासीनहै ॥ और परस्पर विवादकरतेहुएजेदोपुरुषहैं तिनदोनोंकेहितकीइच्छाकरणेहारा जोपुरुषहै ताकानाम मध्यस्थहै ॥ और स्वकृतअपकारकी अपेक्षाकरि केही जोपुरुष अपकारकरेहै ताकानाम द्वेष्य है ॥ और किंचित्संबंधकरिकै जोपुरुष उपकारकरेहै ताकानाम बंधुहै ॥ और जेपुरुष शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूं करेहै तिनोंकानाम साधुहै और जेपुरुष शास्त्रनिषिद्धअशुभकर्मोंकूंकरेहैं तिनोंकानाम पापहै ॥ इसप्रकार सुहृद मित्र अरि उदासीन मध्यस्थ द्वेष्य बंधु साधु पाप

इनसर्वोंविषे तथाअन्यसर्वप्राणीयोंविषे जोपुरुष समबुद्धिकरेहै ॥ अर्थात् कौनपुरुष किसकर्मवालाहै याप्रकार बुद्धिविषे नल्याइके सर्वत्र रागद्वेषतैंरहितहैं ॥ ऐसासमबुद्धिवालापुरुष सर्वतैंउत्कृष्टहै और किसीपुस्तकविषे (विशिष्यते) इसपदकेस्थानविषे (विमुच्यते) यहभीपाठहोवेहै ॥ तापक्षविषे यह अर्थकरणा ॥ सोसर्वत्रसमबुद्धिवालापुरुष इससंसारबंधनतैं मुक्तहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकोंविषे श्रीभगवान्नें योगारूढपुरुषका लक्षण तथाफल कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् (योगीयुंजीतसततम्) इसवचनतैंआदिलैके (सयोगीपरमोमतः) इसवचनपर्यंत त्रेवीसश्लोकोंकरिकै तिसयोगारूढपुरुषकूं अंगोसहितयोगकूं कथन करेहै ॥

(मू० श्लो०) योगीयुंजीतसततमात्मानंरहसिस्थितः ॥ एकाकीयतचित्तात्मानिराशीरपरिग्रहः ॥ १० ॥ योगी । युंजीत । सततम् आत्मानं । रहसि । स्थितः । एकाकी । यतचित्तात्मा । निराशीः । अपरिग्रहः ॥ १० ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन सोयोगारूढ पुरुष एकांतदेशविषे स्थितहोइकै तथाएकाकी होइकै तथायतचित्तात्माहोइकै तथानिराशीहोइकै तथाअपरिग्रहतैरहितहोइकै आपणेचित्तकूं निरंतर समाहितकरै ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोयोगारूढपुरुष आपणेचित्तकूंनिरंतर समाहितकरै ॥ अर्थात् क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यातीनभूमिकावोंकापरित्यागकरिकै एकाग्र निरोध यादोनोंभूमिकावोकरिकै ताचित्तकूं समाहितकरै ॥ किसप्रकारकाहुआसोयोगारूढपुरुष ताचित्तकूंसमाहितकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताप्रकारकूं वर्णनकरेहै (रहसिस्थितःइति) हेअर्जुन सोयोगारूढपुरुष योगकीसिद्धिविषे प्रतिबंधकरणेहारेजेदुष्टजनहै तिनदुर्जनादिकोंतैरहित किसीपर्वतकी गुहादिक एकांतदेशविषेस्थितहोवै ॥ तथाएकाकीहोवै अर्थात् गृहकेसर्वपरिजनोंकापरित्यागकरिकैं संन्यासीहोवे ॥ तथा यतचित्तात्माहोवै ॥ ईहां चित्तनाम अंतःकरणकाहै और आत्मनाम इंद्रियसहितशरीरकाहै तेदोनों योगकेप्रतिबंधकव्यापारतैंरहितहुएहैंजिसके ताकानाम यतचित्तात्माहै ॥ तथा निराशीहोवै ॥ अर्थात् दोषदृष्टिपूर्वकवैराग्यकीदृढताकरिकै सर्वपदार्थोंकीतृष्णातैंरहितहोवै ॥ तथा अपरिग्रहहोवे ॥ अर्थात् योगकीसिद्धिविषे प्रतिबंधकरणेहारेजेपदार्थ है तिनपदार्थोकेसंग्रहतैंरहितहोवै ॥ इसप्रकारकाहोइकै सोयोगारूढपुरुष आपणेचित्तकूं समाहितकरै ॥ ईहां (सततं) यापदकरिकै तायोगाभ्यासकेकरणेविषे निरंतरता कथनकरी॥ और (निराशीः) यापदकरिकै सत्कार कथनकऱ्या ॥ अर्थात् निरंतर सत्कारपूर्वक कऱ्याहुआयोगाभ्यासही फलकाहेतुहोवैहै इति ॥ १० ॥ तहां तिसयोगकी सिद्धिवासतै प्रथम आसनकानियम अवश्यकरिकैचाहिये ॥ यातैं ताआसनकेनियमकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) शुचौदेशेप्रतिष्ठाप्यस्थिरमासनमात्मनः ॥ नात्युच्छ्रितंनातिनीचंचैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ११ ॥ शुचौ । देशे ।

प्रतिष्ठाप्य । स्थिरम् । आसनम् । आत्मनः । न । अति । उच्छ्रितम् । न । अति । नीचम् । चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ११ ॥ (इतिपद०) ॥ हेअर्जुन सोयोगारूढपुरुष पवित्र देशविषे आपणे निश्चल आसनकूं स्थापनकरै जोआसन नहीं तौं अत्यंत ऊंचाहोवै तथा नहीं अत्यंत नीचाहोवै तथाकुशाकेऊपरिमृगचर्मतथावस्त्रकरिकैयुक्तहोवै ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोदेश स्वभावतैंहींशुद्धहोवै ॥ अथवा मृत्तिकादिकोंकेलेपनतैं जोदेश शुद्धकऱ्याहोवै ॥ तथा जोदेश जनोंकेसमुदायतैंरहितहोवै ॥ तथा भयतैंरहितहोवै ॥ ऐसे गंगातट अथवा पर्वतकीगुहा आदिक समानस्थलविषे यहअधिकारीपुरुष आपणे निश्चलआसनकूं स्थापनकरै ईहां (स्थिरं) यापदक रिकै ताआसनकी निश्चलता कथनकरी ॥ सानिश्चलता मृत्तिकामयस्थलरूपआसनविषेहीं संभवैहै ॥ काष्ठमयआसनविषे सानिश्चलतासंभवतीनहीं ॥ यातैं स्थिरं याआसनकेविशेषणकरिकै काष्ठमयआसनकीव्यावृत्ति कथनकरी ॥ कैसाहोवैसोआसन ॥ अत्यंत ऊचाभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंत नीचाभीनहींहोवै ॥ काहे तैं अत्यंतऊचेआसनविषेतौं कदाचित् परवशताकरिकै नीचेभीपतनहोइजावैहै ॥ औरअत्यंतनीचेआसनविषेभी शीत उष्ण वर्षाजलकाप्रवेश पाषाणादिकोंका घर्षण आदिकहोवैहैं ॥ ताकरिकै योगाभ्यासविषेविघ्न प्राप्तहोवैहै ॥ यातैंअत्यंतऊचा तथाअत्यंतनीचा आसन करणानहीं ॥ किंतु दोनोंतैंविलक्षणकरणा ॥ तथा तामृत्तिकामयस्थलरूप आसनऊपरि प्रथम कुशा बिछावणे ॥ तिनकुशावोंऊपरि अत्यंतकोमल मृगकाचर्म अथवा व्याघ्रकाचर्म बिछावणा ॥ और तामृगादिचर्मऊपरि कोमलवस्त्र बिछावणा ॥ यद्यपि (वस्त्रंदारिद्र्यदुःखायदारुरोगायचोपलः) इसस्मृतिवचननैं वस्त्रकानिषेधकऱ्याहै ॥ तथापि सोनिषेध केवल गृहस्थविषयकहै ॥ संन्यासीविषयक सोनिषेध हैनहीं ॥ ईहां (आत्मनः) यापदकरिकै अन्यपुरुषकृतआसनकीनिवृत्ति कथनकरी ॥ जिसकारणतैं अन्यपुरुष केइच्छाका कोईनियमनहींहै ॥ कदाचित् ताअन्यपुरुषकीइच्छाकृतकार्य आपणे अनुकूलभीहोवैहै कदाचित् प्रतिकूलभीहोवैहै ॥ यातैं अन्यपुरुषकृतआस नभी योगकेविक्षेपकाहींहेतुहोवैहै ॥ यातैं यहअभ्यासवान्पुरुष आपणाआसन आपहींस्थापनकरै इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेआ सनकूंस्थापनकरिकै सोयोगाभ्यासवान्पुरुष क्याकार्यकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकीकर्त्तव्यता कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) तत्रैकाग्रंमनःकृत्वायतचित्तेंद्रियक्रियः ॥ उपविश्यासनेयुंज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥ १२ ॥ तत्र । एकाग्रं । मनः । कृत्वा । यतचित्तेंद्रियक्रियः । उपविश्य । आसने । युंज्यात् । योगम् । आत्मविशुद्धये ॥ १२ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन

तिसै आसनऊपरि बैठकरिकै चित्तइंद्रियोंकीक्रियाकेजयवालापुरुष आपणेमनकूं एकाग्र करिकै अंतःकर्णकीशुद्धिवासतै संमाधिविषयक अभ्यांसकरै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोयोगाभ्यासकरणेहारापुरुष तापूर्वउक्तआसनऊपरिबैठिकरिकै निग्रहकरीहै चित्तकीक्रिया तथाश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीक्रिया जिसनैं ऐसाहुआ समाधिरूपयोगका अभ्यासकरै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकास्मरणकरणा यहचित्तकीक्रियाहै ॥ और तिनशब्दादिकविषयोंकाग्रहणकरणा यह श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीक्रियाहैं ॥ तेदोनोंप्रकारकीक्रिया तासमाधिरूपयोगका प्रतिबंधकहोवैहैं ॥ यातैं ताअभ्यासवान्पुरुषनैं तिनक्रियावोंकानिग्रहअवश्यकरिकै कऱ्याचाहीये ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोयोगकेअभ्यासवालापुरुष किसप्रयोजनकीसिद्धिवासतै तासमाधिकाअभ्यासकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (आत्मविशुद्धयेइति) ईहां आत्मशब्दकरिकै अंतःकरणकाग्रहणकरणा ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धिवासतै ताअभ्यासकूंकरै ॥ ईहां ताअंतःकरणविषे सर्वविक्षेपोंकीनिवृत्तिकृत जोअत्यंतसूक्ष्मताहै तासूक्ष्मताकरिकै प्राप्तभई जाब्रह्मसाक्षात्कारकीयोग्यताहै यहहीं ताअंतःकरणकीशुद्धिजानणी ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथन करीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः) ॥ अर्थयह ॥ सूक्ष्मदर्शिपुरुषोंनैं एकाग्रसूक्ष्मबुद्धिकरिकैहीं यहप्रत्यक्अभिन्नब्रह्म साक्षात्कारकरीताहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअधिकारीपुरुष क्याकरिकै तायोगाभ्यासकूंकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (एकाग्रंमनः कृत्वाइति) पूर्वकथनकरीहुईजे राजसतामसरूप क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यहव्युत्थानरूप तीनभूमिकाहैं तिनोंकापरित्यागकरिकै विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैं रहित एकप्रत्यक्ब्रह्मविषयक जोअनेकसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै तावृत्तियोंकेप्रवाहकरिकैयुक्त जोसत्त्वगुणप्रधानमनहै ताकूं एकाग्रमनकहेहैं ॥ ऐसीमनकी एकाग्रताकूं दृढभूमिकायुक्तप्रयत्नतैंसंपादनकरिकै ताएकाग्रताकीवृद्धिवासतै संप्रज्ञातसमाधिरूपयोगका अभ्यासकरै ॥ सोब्रह्माकार मनकेवृत्तियोंकाप्रवाहहीं निदिध्यासन कह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक (ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवाहोऽहंकृतिंविना ॥ संप्रज्ञातसमाधिःस्याद्ध्यानाभ्यासप्रकर्षतः) ॥ अर्थयह ॥ अहंकृतितैंविनाहीं जो ब्रह्माकारमनकेवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम संप्रज्ञातसमाधिहै ॥ सासंप्रज्ञातसमाधि ध्यानाभ्यासकी अधिकताकरिकै सिद्धहोवैहैइति ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् (योगीयुंजीतसततं । युंज्याद्योगमात्मविशुद्धये । युक्तआसीतमत्परः) इत्यादिकअनेक वचनोंकरिकै ताध्यानाभ्यासकेअधिकताकूं कथनकरताभयाहै इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां (शुचौदेशेप्रतिष्ठाप्य) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै पूर्व तायो

गाभ्यासकेवासतै बाह्यआसनका कथनकरचा ॥ अब ताबाह्यआसनऊपरिबैठिकै सोयोगाभ्यासवान्पुरुष किसप्रकार आपणेशरीरका धारणकरै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) समंकायशिरोग्रीवंधारयन्नचलंस्थिरः ॥ संप्रेक्ष्यनासिकाग्रंस्वंदिशश्चानवलोकयन् ॥ १३ ॥ समं । कायशिरोग्रीवं । धारयन् । अचलं । स्थिरः । संप्रेक्ष्य । नासिकाग्रं । स्वं । दिशः । चं । अनवलोकयन् ॥ १३ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन सोयोगाभ्यासवान्पुरुष दृढप्रयत्नवालाहोइकै कायशिरग्रीवायातीनोंकूं समान तथाअचल धारण करताहुआ तथा आपणे नासिकाकेअग्रकूं देखताहुआ तथा दिशांवोंकूं नहींदेखताहुआ स्थितहोवै ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोयोगाभ्यासवान्पुरुष अत्यंतदृढप्रयत्नवालाहोइकै आपणे शरीरकेमध्यदेशरूपकायकूं तथाशिरकूं तथाग्रीवाकूं समान धारणकरताहुआ अर्थात् वक्रभावतैंरहित दंडकीन्यांई ऋजु धारणकरताहुआ ॥ तथाशिरकूं तथाग्रीवाकूं अचल धारणकरताहुआ अर्थात् कंपतैंरहित धारणकरताहुआ स्थितहोवैहै ॥ यद्यपि ताकायशिरग्रीवाकेऋजुधारणकीयेहुए वामदक्षिणभागविषेस्थित तथापृष्ठदेशविषेस्थित कोईभीवस्तु देखीजावैनहीं तथास्पर्शकरीजावैनहीं ॥ तथापि मशकपिपीलिकादिकजीवोंकृत उपद्रवकेहुए कदाचित्शरीरके चलायमानताकी संभावनाहोइसकैहै ॥ ताकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं अचल यह विशेषण कथनकरचाहै ॥ तथा सोयोगाभ्यासवान्पुरुष आपणेनासिकाकेअग्रभागकूं चक्षुकरिकैदेखताहुआ स्थितहोवै ॥ ईहां चक्षुकरिकै नासिकाकेअग्रभागका जो दर्शन कथनकरचाहै सो चक्षुकरिकै रूपादिकविषयोंकूं नहींग्रहणकरै इसनियमकेवासतै कथनकरचाहै ॥ कोई नासिकाकेअग्रभागकेदेखणेवासतै सोवचन कथनकऱ्यानहीं ॥ जोकदाचित् तावचनकरिकै नासिकाकेअग्रभागका दर्शनहीं भगवान्कूं विवक्षितहोवै ॥ तौं मन तदाकारताकरिकै तानासिकाकेअग्रभागविषेहीं स्थितहोवैगा ॥ ताकरिकै चित्तकी ब्रह्मविषेस्थिति नहींहोवैगी ॥ और ब्रह्मविषे जोचित्तकास्थापनहै ताकानामहीं समाधिहै ॥ यहहींसमाधिस्वरूप श्रीभगवान्नैं (आत्मसंस्थंमनःकृत्वा) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं नासिकाकेअग्रभागकादेखणा रूपादिकोंकेअग्रहणकूं लखावैहै ॥ तथा चक्षुइंद्रियके चंचलताकीनिवृत्तिवासतैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे (संप्रेक्ष्यनासिकाग्रं) यावचनकरिकै श्रीभगवान्कूं चक्षुकरिकै रूपादिकविषयोंकाअग्रहण विवक्षितहै ॥ तैसेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयौंकाअग्रहणभी विवक्षितहै ॥ काहेतैं जैसे चक्षुइंद्रियकाव्यापार योगकाप्रतिबंधकहै ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेव्यापारभी तायोगकेप्रतिबंधकहैंइति ॥ तथा सोयोगाभ्यासवान्पुरुष पूर्वपश्चिमादिकदिशावोंकूं नहींदेखताहुआ स्थितहोवै ॥ यद्यपि

नासिकाकेअग्रभागकेदेखणेकारिकैहीं दिशादिकसर्वपदार्थोंकेदेखणेकानिषेध सिद्धहोवैहै ॥ यातैं पृथक् तिनदिशावोंकेदेखणेकानिषेधकरणा संभवतानहीं ॥ तथापि कदाचित् तिनपूर्वपश्चिमादिकदिशावोंविषे किसीभयानक विपरीतशब्दकेउत्पन्नहुए तिनदिशावोंकेदेखणेकी संभावनाहोइसकैहै ॥ सो ऐसेविपरीतशब्दकेउत्पन्न हुएभी तिनदिशावोंकूंदेखेनहीं ॥ और (दिशश्च) यावचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ ताचकारकरिकै आपणेशरीरकाग्रहणकरणा ॥ अर्थात् सोयोगाभ्यासवा नूपुरुष तिसकालविषे आपणेशरीरकूंभी नहींदेखै ॥ जिसकारणतैं तिनदिशावोंकादेखणा तथाशरीरकादेखणा योगकाप्रतिबंधकहींहै ॥ इसप्रकार सर्ववृत्ति योंकानिरोधकारिकै सोयोगाभ्यासवानूपुरुष तिसआसनऊपरिस्थितहोवै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) प्रशांतात्माविगतभीर्ब्रह्मचारिव्रतेस्थितः॥ मनःसंयम्यमच्चित्तोयुक्तआसीतमत्परः ॥ १४ ॥ प्रशांतात्मा । विगतभीः । ब्रह्मचारिव्रते । स्थितः । मनः । संयम्य । मच्चित्तः । युक्तः । आसीत । मत्परः ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन सोअभ्यासवानूपु रुष प्रशांतआत्माहुआ तथाभयतैंरहितहुआ तथाब्रह्मचारीकेव्रतविषे स्थितहुआ तथा मनकूं निग्रहकरिकै मेरेविषेचित्तवालाहुआ तथा मैंपरमेश्वरपरायणहुआ संप्रज्ञातसमाधिमानहुआस्थितहोवै ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ रागद्वेषादिकोंकेकारणकीनिवृत्तिकरिकै प्रशांतहुआहै क्या रागद्वेषादिकोंतैंरहितहुआहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम प्रशांतात्मा है ॥ तथाशास्त्रकेदृढनिश्चयकरिकै निवृत्तहोइगयाहैभय जिसका ताकानाम विगतभीहै ॥ तहां सर्वकर्मोंकात्यागकरणा हमारेकूं युक्त है अथवा नहींयुक्तहै याप्रकारकी ताकर्मोंकेत्यागविषेजाशंकाहै ताशंकाकानाम भयहै ॥ सोशंकारूपभय जिसका शास्त्रकेदृढनिश्चयकरिकै निवृत्तहोइगयाहै ॥ तथा ब्रह्मचर्य गुरुशुश्रूषा भिक्षा भोजन इत्यादिकजोब्रह्मचारीकाव्रतहै ॥ ताव्रतविषेस्थितहोइकै आपणेमनकूं विषयाकारवृत्तियोंतैंशून्यकरिकै मैंप्रत्यक्चैतन्यरूपपरमेश्वरकेसगुणरूपविषे अथवा निर्गुणरूपविषे चित्तहै जिसका ताकानाम मच्चित्तहै ॥ अर्थात् जोपुरुष मैंपरमेश्वरविषयकहीं चित्तवृत्तियोंकेप्रवाहवालाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् चिंतनकरणेयो ग्यस्त्री पुत्र धनादिक प्रियपदार्थोंकेविद्यमानहुए सो मच्चित्तपणा कैसेहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (मत्परःइति) मैंपरमेश्वरहीं परमानंद स्वरूपहोणेतैं परमपुरुषार्थरूपहूं अर्थात् परमप्रियरूपहूं जिसकूं ताकानाम मत्परहै ॥ ऐसामत्परपुरुष अन्यपदार्थोंकूं प्रियरूपजाणतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तदेत त्प्रेयःपुत्रात्प्रेयोवित्तात्प्रेयोऽन्यस्मात्सर्वस्मादंतरतरंयदयमात्माइति॥) अर्थयह ॥ जो आनंदस्वरूपआत्मा देहइंद्रियप्राणमनबुद्धिआदिकसर्व पदार्थोंतैं अत्यंत अंतरहै ॥ सोयहआत्मादेव पुत्रतैंभीप्रियहै तथाधनतैंभीप्रियहै तथाअन्यसर्वपदार्थोंतैंभीप्रियहै इति ॥ इसप्रकार विषयाकारसर्ववृत्तियोंकानिरोधकरिकै एकभगवत्आकार

कियाहै चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाह जिसनैं ऐसासंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगवालापुरुष यथाशक्तिपरिमाण तहांस्थितहोवै ॥ स्वइच्छाकरिकै शीघ्रहीं तहांतैंउठैनहीं इति ॥ ईहां (मच्चित्तःमत्परः) यादोनोंपदोंका श्रीभाष्यकारोनैं यहअर्थकऱ्याहे ॥ जैसे कोईविषयासक्तरागीपुरुष आपणेचित्तविषे निरंतरस्त्रीकाचिंतनकरताहुआ स्त्रीचित्ततौं होवैहे ॥ परंतु सोरागीपुरुष तास्त्रीकूं परत्वरूपकरिकै तथाआराध्यत्वरूपकरिकै ग्रहणकरतानहीं ॥ किंतु सोरागीपुरुष महाराजाकूं अथवा किसीदेवताकूं परत्वरूपकरिकै तथाआराध्यत्वरूपकरिकै ग्रहणकरेहे ॥ और यहअधिकारीपुरुषतौं एकमैंपरमेश्वरविषेहीं मच्चित्तहोवैहे तथामत्परहोवैहे ॥ अर्थात् सर्व आराध्यत्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहींमानेहैइति ॥ इसप्रकारके भाष्यकारोंकेव्याख्यानतैं पूर्वउक्तकिंचित्‌विलक्षणव्याख्यानकूंकरिकै तिसटीकाकारनैं श्रीभाष्यकारोंतैं इसप्रकार आपणीन्यूनता कथन करीहे ॥ तहां श्लोक ॥ (व्याख्यातृत्वेपिमेनात्रभाष्यकारेणतुल्यता ॥ गुंजायाःकिंनुहेम्नैकतुलारोहेपितुल्यता ॥) अर्थयह ॥ इसगीताकेव्याख्यानकरणेहारेभी हमारी भगवान्‌भाष्यकारोंकेसाथितुल्यताहोवैनहीं ॥ जैसे एकहींतुलाविषेसुवर्णकेसाथि आरूढहुएजेगुंजाहैं तिनगुंजावोंकी तासुवर्णकेसाथि तुल्यताहोवैनहीं ॥ तैसे एकहींगीताशास्त्रकेव्याख्यानकरणेविषेप्रवृत्तहुए जोश्रीभाष्यकारहैं तथा मैंटीकाकारहूं ॥ तिसहमारी श्रीभाष्यकारोंके साथि तुल्यताहोवैहेनहीं इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार संप्रज्ञातसमाधिरूपयोगकरिकै स्थितहुआजोपुरुषहै तिसपुरुषकूं कौंनफलप्राप्तहोवैहे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेफलका कथनकरेहे ॥ अधिकारीजनोंकूं तासमाधिरूपयोगविषे प्रवृत्तकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) युंजन्नेवंसदात्मानंयोगीनियतमानसः । शांतिंनिर्वाणपरमांमत्संस्थामधिगच्छति॥१५॥युंजन् । एवं । सदा । आत्मानं । योगी । नियतमानसः । शांतिं । निर्वाणपरमां । मत्संस्थाम् । अधिगच्छति ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन पूर्वउक्तप्रकारसैं आपणे मनकूं समाहितकरताहुआ सर्वदा योगाभ्यासवान्‌पुरुष मनकेनिरोधवालाहुआ मेरांस्वरूपभूत निर्वाणपरम शांतिकूं प्राप्तहोवैहे ॥ ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन एकांतदेशविषेस्थितितैं आदिलेके जितनैंकीनियम पूर्वकथनकरेहैं ॥ तिनसर्वनियमोंकरिकैआपणेमनकूं अभ्यासवैराग्यकेबलतैं समाहितकरताहुआ सर्वदा योगाभ्यासपरायण जोयोगीपुरुषहै ॥ सोयोगीपुरुषनियतमानसहुआ शांतिकूं प्राप्तहोवैहे ॥ तहां अभ्यासकीदृढताकरिकै निरुद्धकऱ्याहेआपणामनजिसनैं ताकानामनियतमानसहे ॥ अथवा ताअभ्यासकीदृढताकरिकै निवृत्तकरेहैंमनकेवृत्तिरूपविकार जिसनैं ताकानाम नियतमानसहे ॥ ऐसानियतमानस सोयोगीपुरुष सर्ववृत्तियोंकीउपरामतारूप प्रशांतवाहितानामा शांतिकूं प्राप्तहोवैहे ॥ कैसीहे शांति ॥ निर्वाणपरमाहे ॥ अर्थात् जाशांति तत्त्वसाक्षात्कारकीउत्पत्तिद्वारा सर्व

काम कर्म अविद्याकीनिवृत्तिरूपमुक्तिविषे पारिअवसानवालीहै ॥ पुनः कैसीहैशांति मत्संस्थाहै॥ अर्थात् मेरेपरमानंदस्वरूपकीनिष्ठारूपहै ॥ इसप्रकारकीशांतिकूंहीं सोयोगी पुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ अनात्मवस्तुवोंकूं विषयकरणेहारे सांसारिकऐश्वर्यतारूप जेसमाधिके फलहैं तिनफलोंकूं सोयोगीपुरुष प्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं तेऐश्वर्यरूपसिद्धियां मोक्षकै उपयोगीसमाधिके विघ्नरूपहींहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभी योगसूत्रोंविषे समाधिकेतिसतिसव्यावहारिकसिद्धिरूपफलोंकूंकथनकरिकै कहताभयाहै ॥ तहांसूत्रद्वयं ॥ (तेसमाधावुपसर्गाव्युत्थाने सिद्धयः ॥ १ ॥ स्थान्युपमंत्रणेसंगस्मयाऽकरणंपुनरनिष्टप्रसंगात् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ पूर्वकथनकरीहुई नानाप्रकारकी सिद्धियोंकरिकैहीं यहयोगीपुरुष कृतकृत्यहोवैंगा ॥ ऐसीआशंकाकरिकैं श्रीपतंजलिभगवान् कहेहै ॥ मोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारेसमाधिविषे प्रीतिमान्जोयोगीपुरुषहै ॥ तिसयोगीपुरुषकूंतौं तेपूर्वउक्तव्यावहारिकसिद्धियां विघ्नरूपहींहोवैहैं ॥ यातैं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छावान्पुरुष तिनप्रतिबंधकसिद्धियोंकीउपेक्षाहींकरै ॥ जिसकारणतैं आत्मज्ञानतैंविना कोटीसिद्धियोंकरिकैभी साकृतकृत्यताहोवैनहीं ॥ और जोयोगीपुरुष तिसमोक्षकेहेतुभूतसमाधिविषे प्रीतिमान्नहींहै किंतु व्युत्थानविषेहीं प्रीतिमान्है ॥ तिसयोगीपुरुषकूंतौं तेव्यावहारिकसिद्धियांहींहोवैहैंइति ॥ १ ॥ तहां तिसतिसस्थानकेअधिपतिरूप जेमहेंद्रादिकदेवताहैं ॥ ते देवता तिसयोगीपुरुषकेप्रति याप्रकारकीप्रार्थनाकरेहैं॥ हेयोगिन् इनस्वर्गादिकस्थानोंविषे आप आइकेनिवासकरौ॥ तथारमणकरौ ॥ देखो यहदेवकन्या कैसीरमणीकहै ॥ तथा यहदिव्यभोग कैसेरमणीकहैं॥ तथा यहरसायनअमृतादिक जरामृत्युकेनिवृत्तकरणेहारेहैं॥ तथा यहविमानकैसेदिव्यहैं॥ ऐसे दिव्य पदार्थोंकूं ईहांआइकैभोगो ॥ इसप्रकार तिनदेवतावोकरिकैप्रार्थनाकरयाहुआभी सोयोगीपुरुष तिनपदार्थोंविषे कामरूपकूं कदाचित्भी नहींकरै ॥ तथा इसहमारेयोगका बहुतआश्चर्यरूपप्रभावहै ॥ जिसकरिकै साक्षात्देवताभी हमारेआगे इसप्रकारकीप्रार्थनाकरतेहैं ॥ याप्रकारकेगर्वरूपस्मयकूंभी सोयोगीपुरुष कदाचित्नहींकरै ॥ किंतु सोयोगीपुरुष तिनविषयभोगोंविषे याप्रकारकीदोषदृष्टिकरै ॥ बहुतकालतैं इससंसाररूप अग्निविषेजलतेहुये तथाजन्ममरणकेप्रवाहरूपचक्रविषे आरूढहुए हमनैं किसीपूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं बहुतप्रयत्नसैं यह क्लेशकर्मरूपअंधकारकेनाशकरणेहारा योगरूपदीपक प्रज्वलितकऱ्याहै ॥ तायोगरूपदीपककेनाशकरणेहारा यह तृष्णाकाजनक विषयरूपवायुहै ॥ ऐसेयोगरूपदीपककेप्रकाशकूंप्राप्तहोइकैभी मैं अनेकवार इसविषयरूपमृगतृष्णाकेजलकरिकैवंचितहुआभी पुनःतिन विषयोंकी प्राप्तिवासतै इससंसाररूपअग्निका आपणेकूंकाष्ठरूप किसवासतैकरौं ॥ किंतु पुनःऐसाकरणा हमारेकूंयोग्यनहींहैं ॥ यातैं कृपणपुरुषोंकरिकैप्रार्थनाकरणेयोग्यतथास्वप्नपदार्थोंकीन्यांई मिथ्यारूप ऐसेभोगोंतैं हम उपरामहैं ॥ इसप्रकार तिनभोगोंविषे दोषदृष्टिकरिकै सो योगीपुरुष तासमाधिकूंदृढकरै ॥ और ताकामनारूपसंगविषे पतितताकूं तथातागर्वरूपस्मयविषे कृतकृत्यताकूं मानणेहारेपुरुषकूं योगकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तासंगस्मयकेवशतैं तायोगभ्रष्टपु

रुषकूं पुनः अनिष्टरूपसंसारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तासंगस्मयदोनोंकाजोनहींकरणाहै सोकैवल्यमोक्षकेविघ्नकेनिवृत्तिकाउपायहै इति ॥ २ ॥ तहां (युंजन्नेवंसदात्मानम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं एकाग्रभूमिकाविषेसंप्रज्ञातसमाधि कथनकऱ्या ॥ और (नियतमानसः) इसवचनकरिकै निरोधभूमिकाविषे तासंप्रज्ञातसमाधिकाफलभूत असंप्रज्ञातसमाधि कथनकऱ्या ॥ और (शांतिं) यापदकरिकै तानिरोधसमाधिजन्यसंस्कारोंकाफलभूत प्रशांतवाहिता कथनकरी और (निर्वाणपरमां) यावचनकरिकै धर्ममेघनामासमाधिकूं तत्त्वज्ञानद्वारा कैवल्यमुक्तिकीहेतुता कथनकरी ॥ और (मत्संस्थां) यावचनकरिकै वेदांतसिद्धांतविषे अंगीकृत कैवल्यमोक्ष कथनकऱ्या ॥ इनसमाधियोंका योगशास्त्रविषे विस्तारतेनिरूपणकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं इसप्रकारकेमहान् फलकीप्राप्तिकरणेहारा यह योगहै ॥ तिसकारणतैं यह अधिकारीपुरुष महान्प्रयत्नकरिकैभी तायोगकासंपादनकरै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै तायोगाभ्यासवान्पुरुषके आहारादिकोंकेनियमकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०)नात्यश्नतस्तुयोगोस्तिनचैकांतमनश्नतः ॥ नचातिस्वप्नशीलस्यजाग्रतोनैवचार्जुन ॥ १६ ॥ न । अति । अश्नतः । तु । योगः । अस्ति । न । च । एकांतम् । अनश्नतः । न । च । अति । स्वप्नशीलस्य । जाग्रतः । न । एव । च । अर्जुन ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अत्यंत अन्नकेभोजनकरणेहारेका भी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै तथा अत्यंत नहींभोजनकरणेहारेकाभी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै तथा अत्यंत निद्रालुपुरुषकाभी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै तथा अत्यंतजागणेहारेपुरुषका भी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जो अन्न भोजनकऱ्याहुआ जठराग्निकरिकै जीर्णभावकूंप्राप्तहोइजावैहै तथाशरीरविषे कार्यकरणेकी सामर्थ्यताकूं संपादनकरेहै ॥ सोअन्न शास्त्रविषे आत्मसंमित कह्याजावैहै ॥ ताआत्मसंमितअन्नकूं नहींभोजनकरिकै जोपुरुष लोभकेवशतै अधिकअन्नकूं भोजनकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंभी सोसमाधिरूपयोग सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोभोजनकऱ्याहुआअधिकअन्न अजीर्णभावकूंप्राप्तहोइकै तिसपुरुषविषे धातुवोंकीविषमताद्वारा नानाप्रकारकी ज्वरशूलादिकव्याधियोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तिनज्वरशूलादिकव्याधियोंकरिकैपीडितहुए पुरुषतैं सोयोगाभ्यास कऱ्याजावै नहीं ॥ और जोपुरुष अत्यंत अन्नकाभोजनहीं नहींकरेहै अथवा अत्यंत अल्पअन्नकाभोजनकरेहै ॥ तिसपुरुषकाभी सोयोग सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं अन्नकेनहींभोजनकरणेतैं अथवा अत्यंतअल्पभोजनकरणेतैं शरीरका रसादिकधातुवोंकरिकै पोषणहोवैनहीं ॥ ताकरिकै सोशरीर किसीभीकार्यकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तथा क्षुधाकरिकैपीडितपुरुषकी वृत्तिभी एकाग्रहोवैनहीं ॥ ऐसे असमर्थशरीरतैं सोयोभ्यास

सिद्धहोइसकैनहीं ॥ यहवार्ता शतपथकीश्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदुहवाआत्मसंमितमन्नंतदवतितन्नहिनस्तियद्भूयोहिनस्तितद्यत्कनीयोनतदवति इति) ॥ अर्थयह ॥ जोआत्मसंमितअन्न भोजनकऱ्याजावैहै ॥ सोअन्न ताभोक्तापुरुषविषे वेदअर्थकेअनुष्ठानकीयोग्यतासंपादनकरिकै ताअनुष्ठानद्वारा ताभोक्तापुरुषका रक्षणकरेहै ॥ सोआत्मसंमितअन्न धातुवोंकीविषमताकूंकरिकै ज्वरशूलादिकव्याधियोंकीउत्पत्तिद्वारा ताभोक्तापुरुषका हननकरैनहीं ॥ और ताआत्मसंमितअन्नतैं जोअधिकअन्नभोजनकऱ्याजावैहै ॥ सोअधिकअन्नतौं धातुवोंकीविषमताद्वारा ज्वरशूलादिकव्याधियोंकूंउत्पन्नकरिकै ताभोक्तापुरुषकूं हननकरेहै ॥ तथा तापुरुषके धर्मकाभीनाशकरेहै ॥ और जोअत्यंतअल्पअन्न भोजनकऱ्याजावैहै ॥ सोअल्पअन्नतौं ताभोक्तापुरुषकूं रक्षणकरैनहीं ॥ अर्थात् क्षुधाकीनिवृत्तिकरणेवासतै तथाधर्मकेनिर्वाहकरणेवासतै समर्थहोवैनहीं ॥ यातैं योगाभ्यासवान्पुरुषनैं अत्यंतअधिकअन्नका तथाअत्यंतअल्पअन्नका तथाअत्यंतनहींभोजनका यातीनोंका परित्यागकरिकै सो आत्मसंमितअन्नहीं भोजनकरणाइति ॥ अथवा ॥ (पूरयेदशनेनार्द्धं तृतीयमुदकेनतु ॥ वायोः संचरणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत्) ॥ अर्थयह ॥ यहयोगाभ्यासवान्पुरुष आपणेउदरके दोभागोंकूंतौं अन्नकरिकैपूरणकरै ॥ और तीसरेभागकूं जलकरिकै पूरणकरै ॥ और प्राणवायुके सुखपूर्वकसंचारवासतै चतुर्थभागकूं खालीराखैइति ॥ इसप्रकार योगशास्त्रविषे अन्नकेभोजनकरणेका परिमाण कथनकऱ्याहै ॥ तिसपरिमाणतैं न्यूनपरिमाण अथवा अधिकपरिमाण अन्नकेभोजनकरणेतैं सोयोग सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु तिसयोगशास्त्रउक्तपरिमाण अन्नकेभोजनतैंहीं सोयोग सिद्धहोवैहै ॥ और जोपुरुष अत्यंतनिद्रावालाहींहोवैहै ॥ तिसपुरुषकाभी सो योगसिद्धहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं सानिद्रा योगका प्रतिबंधकहींहै और जो पुरुष अत्यंत जाग्रतकूंहींकरेहै ॥ तिसपुरुषकाभी सोयोग सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं अत्यंत जागरणकरणेतैं तायोगाभ्यासकालविषे अवश्यकरिकै निद्राकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां (नैवचार्जुन) यावचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ईहांनहींकथनकरेहुएदोषोंके ग्रहणकरावणेवासतेहै ॥ तेदोष मार्कंडेयपुराणविषेकथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (नाध्मातःक्षुधितःश्रांतोनचव्याकुलचेतनः ॥ युंजीतयोगंराजेंद्रयोगीसिद्ध्यर्थमात्मनः ॥ १ ॥ नातिशीतेनचैवोष्णेनद्वंद्वेअनिलान्विते ॥ कालेष्वेतेषुयुंजीतनयोगंध्यानतत्परः ॥ २ ॥) ॥ अर्थयह ॥ हेराजेंद्र यहयोगीपुरुष अत्यंतअन्नखाइकैफुल्याहुआ अत्यंत क्षुधातुरहुआ तथाअत्यंतश्रमयुक्तहुआ तथाव्याकुलचित्तवालाहुआ योगकूं करैनहीं ॥ १ ॥ तथा अत्यंतशीतकालविषे तथाअत्यंतउष्णकालविषे तथाअत्यंतपवनकालविषे यहध्यानपरायणपुरुष तायोगकूं करैनहीं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे आहारादिकोंकेनियमतैंरहितपुरुषकूं तायोगकीप्राप्तिहोवैनहीं याप्रकारकेव्यतिरेककरिकै तिनआहारादिकों

केनियमविषे योगकीकारणता कथनकरी ॥ अब तिनआहारादिकोंकेनियमवालेपुरुषकूं तायोगकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै याप्रकारके अन्वयकरिकैभी तिनआहारादिकोंकेनियमविषे तायोगकीकारणताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) युक्ताहारविहारस्ययुक्तचेष्टस्यकर्मसु ॥ युक्तस्वप्नाववोधस्ययोगोभवतिदुःखहा ॥ १७ ॥ युक्ताहारविहारस्य । युक्तचेष्टस्य । कर्मसु । युक्तस्वप्नाववोधस्य । योगः । भवति । दुःखहा ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन नियमतैंहैआहारतथाविहारजिसका तथाप्रणवजपादिकर्मोंविषे नियमतैंहैप्रवृत्तिजिसकी तथानियमतैंहैनिद्रातथाजाग्रतजिसकाऐसेपुरुषकाहीं सोसमाधिरूपयोग दुःखकेनाशकरणेहारा सिद्धहोवैहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अन्नरूपजोआहारहै तथागमन आगमनरूपजोविहारहै तेआहारविहारदोनों युक्तहै क्या नियमपूर्वकहै जिसके ॥ तथाप्रणवादिकमंत्रोंकाजपं तथाउपनिषदोंकापाठ इत्यादिकजेकर्महैं तिनकर्मोंविषेयुक्तहै क्या कालकेनियमपूर्वकहै चेष्टा क्या प्रवृत्ति जिसकी ॥ तथा निद्रारूप जोस्वप्नहै तथाजाग्रतरूपजो प्रबोधहै तेदोनों युक्तहैं क्या कालकेनियमपूर्वकहैं जिसके ॥ ऐसेसाधनसंपन्नपुरुषकाहीं तिनसाधनोंकीदृढताकरिकै सोसमाधिरूपयोग सिद्धहोवैहै ॥ तिनआहारविहारादिकोंकेनियमतैंरहितपुरुषका सोसमाधिरूपयोगसिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेप्रयत्नविशेषकरिकै संपादनकऱ्याजोयोगहै ॥ तायोगकरिकै तिसयोगीपुरुषकूं कौनफल प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (दुःखहाइति) हेअर्जुन संसारसंबंधीसर्वदुःखोंकाकारण जाअविद्याहै ॥ ता अविद्याकेनाशकरणेहारीजाब्रह्मविद्याहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेउत्पन्नकरणेहारा यहयोगहै ॥ यातैं यहसमाधिरूपयोग ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिद्वारा मूलअविद्यासहित सर्व दुःखोंकेनिवृत्तिकाहेतुहै ॥ ऐसेमहानफलवाले इससमाधिरूपयोगकूं यह अधिकारीपुरुष अवश्यकरिकै संपादनकरै ॥ तहां आहारकानियमतौं पूर्वश्लोकविषे (यद्दुग्धवा) इसश्रुतिवचनकरिकै तथा (पूरयेदशनेनार्द्धं) इसयोगशास्त्रकेवचनकरिकै कथनकरिआयेहैं ॥ और गमनआगमनरूपविहारकानियमतौं (योजनान्नपरंगच्छेत्) अर्थयह योजनपरिमाणतैं अधिक नहींचले किंतु योजनपरिमाणके भीतर भीतर चलै इत्यादिकवचनोंकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और वाकादिकइंद्रियों केचपलताकाजोपरित्यागहै यहहीं तिनजपादिकर्मोंविषे चेष्टाका नियमहै ॥ और सूर्यकेअस्तकालतैंलेके पुनःउदयकालपर्यंत जितनीकीरात्रिहै ॥ तासंपूर्णरात्रिकै समान तीनविभागकरणे ॥ तिन तीनोंविभागोंविषे प्रथमविभागविषे तथाअंत्यकेविभागविषेतौं जागरणकरना ॥ और मध्यकेविभागविषे निद्राकरणी ॥ यहहीं

जाग्रतका तथानिद्राका नियमहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेनियमयोगशास्त्रविषेकथनकरेहैं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगकरिकै एकाग्रभूमिका विषे संप्रज्ञातसमाधिकाकथन कऱ्या अब निरोधभूमिकाविषे असंप्रज्ञातसमाधिकेकहणेवासतै प्रारंभकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यदाविनियतंचित्तमात्मन्येवावतिष्ठते । निःस्पृहःसर्वकामेभ्योयुक्तइत्युच्यतेतदा ॥ १८ ॥ ॥ यदा । विनियतं । चित्तम् । आत्मनि । एवं । अवतिष्ठते । निःस्पृहः । सर्वकामेभ्यः । युक्तः । इति । उच्यते । तदा ॥ १८ ॥ (इतिपद०) हेअर्जुन जिसकालविषे निरुद्धहुआ चित्त आत्माविषे हीं स्थितहोवै तथासर्वविषयोंतैं निस्पृहहोवैहै तिसकालविषे युक्त इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ १८॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकालविषे यह अंतःकरणरूपचित्त आपणेस्वच्छस्वभावकेवशतैं स्वविषयकेआकारकूंग्रहणकरणेविषेसमर्थहुआभी परवैराग्यकेवशतैं सर्ववृत्तियोंकेनिरोधवालाहुआ तथारजतमतैंरहितहुआ प्रत्यक्चैतन्यस्वरूपआत्माविषेहींसर्वदा अचलस्थितहोवैहै॥ तिससर्ववृत्तियोंकेनिरोधकालविषे समाधिरूपयोगकरिकै युक्त कह्याजावैहै ॥ कौन युक्तकह्याजावैहै ऐसीशंकाकेहुए कहेहैं (निःस्पृहःसर्वकामेभ्यःइति) इसलोकके तथापरलोकके जितनैंकीविषय हैं तिनोंकानाम कामहै॥ तिनविषयरूपसर्वकामोंतैं निवृत्तहुईहैतृष्णारूपस्पृहाजिसकी ताकानाम निःस्पृहहै ॥ ऐसा निःस्पृहपुरुष युक्त इसनामकरिकै कह्याजावैहै॥ इतनैंकहणेकरिकै दोषदृष्टिपूर्वकपरवैराग्यविषेअसंप्रज्ञातसमाधिकीसाधनरूपता कथनकरी इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अब समाधिविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहितहुएचित्तकेउपमानकूंकथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यथादीपोनिवातस्थोनेंगतेसोपमास्मृता । योगिनोयतचित्तस्ययुंजतोयोगमात्मनः ॥ १९ ॥ यथा । दीपः । निवातस्थः । न । इंगते । सा । उपमा । स्मृता । योगिनः । यतचित्तस्य । युंजतः । योगम् । आत्मनः ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जैसे वायुतैंरहितदेशविषेस्थित दीपक नहीं चलायमानहोवैहै सोईहीं दृष्टांत निरुद्ध चित्तवाले तथायोगकूं अनुष्ठानकरणेहारे योगी पुरुषके अंतःकरणका कथनकऱ्याहै ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन दीपककेचलनकाहेतुजोवायुहै ॥ तिसवायुतैंरहितदेशविषेस्थित जोदीपकहै ॥ सोदीपक जैसे चलावनेहारेवायुकेअभावहोणेतैं चलायमानहोता नहीं ॥ तैसे जोयोगीपुरुष एकाग्रभूमिकाविषे संप्रज्ञातसमाधिरूपयोगवालाहै ॥ तथा अभ्यासकीबाहुल्यताकरिकै निरुद्धकरीहैंसर्वचित्तकीवृत्तियांजिसनैं ॥ तथा जोयोगीपुरुष निरोधभूमिकाविषे असंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगकूं अनुष्ठानकरणेहाराहै ॥ ऐसेयोगीपुरुषकाजोअंतःकरणहै ॥ सोअंतःकरणतादीपककीन्यांई निश्चलहै

तथासत्त्वगुणकीअधिकताकरिकै प्रकाशकहै ॥ यातैं तायोगीपुरुषके अंतःकरणका योगशास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं सोनिश्चलदीपकरूपदृष्टांत कथनकरी अर्थात् जैसे सोदीपक चलायमानतातैंरहितहोवैहै ॥ तैसे तायोगीपुरुषकाअंतःकरणभी चलायमानतातैंरहितहोवैहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (आत्मनः) यापदकरिकै अंतःकरणकाग्रहणकऱ्यानहीं ॥ किंतु ताआत्मशब्दकरिकै प्रत्यक्आत्माकाहींग्रहणकऱ्याहै ॥ तहां (आत्मनःयोगंयुंजतः) याप्रकारतैं पदोंकाअन्वयकरिकै आत्माविषयकयोगकूंकरणेहाराजोयोगीपुरुषहै ॥ याप्रकारकाअर्थकऱ्याहै ॥ सोइसव्याख्यानविषे दीपकरूपउपमानका कोईउपमेय सिद्धहोतानहीं ॥ दृष्टांतकानाम उपमानहै ॥ और दार्ष्टांतिककानाम उपमेयहै ॥ किंवा इसव्याख्यानविषे (आत्मनः) यहपदहीं व्यर्थहोवैहै ॥ काहेतैं सर्वअवस्थाविषे ताचित्तकूं आत्माकारता स्वभावतैंहींसिद्धहै ॥ कोईयोगनैं ताचित्तकीआत्माकारता संपादनकरीतीनहीं ॥ किंतु ताचित्तविषे कर्मजन्य जा कादाचितिक अनात्माकारताहै साअनात्माकारता तायोगनैं निवृत्तकरीतीहै ॥ यहवार्त्ता संक्षेपशारीरकविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (स्वाभाविकीहिवियदन्विततताघटादेःक्षीरादिवस्तुघटनापुनरन्यहेतुः ॥ एवंधियामपिचिदन्विततताऽनिमित्तंशब्दादिवस्तुघटनाखलुकर्महेतुः ॥) अर्थयह ॥ घटादिकोंका आकाशकेसाथि जोसंबंधहै सोतौं स्वाभाविकहींहै ॥ किसीकेप्रयत्नकरिकैकऱ्यानहीं ॥ और तिसीघटादिकोंका क्षीरादिकपदार्थोंकेसाथिजोसंबंधहै सोसंबंधतौं स्वाभाविकहैनहीं किंतु कर्मजन्यहै ॥ तैसे बुद्धियोंका जोचेतनकेसाथिसंबंधहै सोसंबंधकिसी कर्मजन्यनहींहै ॥ किंतु सोसंबंध स्वभावसिद्धहै ॥ और तिनबुद्धियोंका जोविषयोंकेसाथिसंबंधहै ॥ सोसंबंधतौं केवल कर्मजन्यहींहै ॥ स्वभावसिद्धहैनहींइति ॥ यातैं (आत्मनः) यहपद प्रत्यक्आत्माकावाचकनहींहै ॥ किंतु अंतःकरणरूप दार्ष्टांतिकका बोधकहै ॥ अथवा इसव्याख्यान विषे दार्ष्टांतिककेलाभवासतै (यताचित्तस्य) यापदविषे (यतंचतत्चित्तंच) अर्थयह निरुद्धहुआ ऐसाजोचित्तहै याप्रकारका कर्मधारयसमास अंगीकारकरिकै ताचित्तकाहीं ग्रहणकरणाइति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार सामान्यरूपतैं समाधिकाकथनकरिकै अब तिसीअसंप्रज्ञातनामा निरोधसमाधिकूं विस्तारतैं निरूपणकरताहुआ श्रीभगवान् प्रारंभकरेहै ॥

(मू॰श्लो॰) यत्रोपरमतेचित्तंनिरुद्धंयोगसेवया ॥ यत्रचैवात्मनात्मानंपश्यन्नात्मनितुष्यति ॥२०॥ यत्र । उपरमते । चित्तं । निरुद्धं । योगसेवया । यत्र । च । एव । आत्मना । आत्मानं । पश्यन् । आत्मनि । तुष्यति ॥२०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन योगाभ्यासकेसेवनकरिकै जिसपरिणामविशेषकेउत्पन्नहुए यहनिरुद्धहूआ चित्त उपशमकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा जिसपरिणामकेहूए शुद्धअंतःकरणकरिकै प्रत्यक्चैतन्यआत्माकूं साक्षात्कारकरताहूआ तौआत्माविषे हीं तोषकूंप्राप्तहोवैहै ताकूं योगजानणा ॥२०॥ (इ॰ प॰)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन निरंतर श्रद्धापूर्वक तायोगाभ्यासकेसेवनकरिकै जिसपरिणामविशेषकेउत्पन्नहूए यहनिरुद्धहुआचित्त एकवस्तुकूंविषयकरणेहारीवृत्तियोंकाप्र वाहरूप एकाग्रहताकूंपरित्यागकरिकै इंधनोंतैंरहितअग्निकीन्यांई उपशमकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोचित्त सर्ववृत्तियोंतैरहितहोणेतैं सर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा ॥ जिसपरिणामविशेषकेउत्पन्नहुए रजतमकरिकैनहींपराभवकूंप्राप्तहुएशुद्धसत्त्वमात्ररूपअंतःकरणकरिकैपरमात्मातैंअभिन्न सत् चित् आनंदघन अनंत अद्वितीय प्रत्यक्आत्माकूं वेदांतप्रमाणजन्यवृत्तिकरिकै साक्षात्कारकरताहुआ तिसपरमानंदघनआत्माविषैंहीं तोषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्मातैं भिन्न देहइंद्रियादिरूपसंघातविषे तथातासंघातकेभोग्यपदार्थोंविषे तुष्टिकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तहांश्रुति॥(समोदतेमोदनीयंहिलब्धा)॥अर्थयह॥ ब्रह्मातैं आदिलैकेस्तंबपर्यंत सर्वप्राणीयोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारा जोपरमात्मादेवहै तापरमात्मादेवकूंसाक्षात्कारकरिकैं सोविद्वान्पुरुष मैंकृतार्थहुं याप्रकारकेमोदकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ तिसस ववृत्तियोंकेनिरोधरूप अंतःकरणकेपरिणामकूंहीं योगशब्दका अर्थरूप जानणा ॥ इसप्रकार (तंविद्याद्दुःखसंयोग) इसत्रेवीसवेंश्लोककेसाथि इसवीसवेंश्लोकका तथावक्ष्यमाण एकवीसवेंबावीसवेंश्लोकका अन्वयकरणा ॥ और किसीटीकाविषेतौं (यत्रउपरमतेचित्तम्) इसवचनविषेस्थित यत्र इसशब्दका जिसकालविषे याप्र कारकाअर्थकर्‍याहै ॥ सोइसव्याख्यानविषे (तंविद्यात्) इसवक्ष्यमाणवचनविषेस्थिततत्शब्दका ताकालकेसाथि अन्वय संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं कालविषे योगशब्दकीअर्थरूपतासंभवतीनहीं ॥ यातैं यहव्याख्यान समीचीननहीं इति ॥ २० ॥ ❁ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे प्रत्यक्आत्माविषेहीं तोषकूंप्राप्तहो वैहै यहअर्थकथनकर्‍या ॥ अब ताअर्थकीसिद्धिविषे हेतुका कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०)सुखमात्यंतिकंयत्तद्बुद्धिग्राह्यमतींद्रियम् ॥ वेत्तियत्रनचैवायंस्थितश्चलतितत्त्वतः ॥२१॥ सुखम् । आत्यंतिकं । यत् । तत् । बुद्धिग्राह्यम् । अतींद्रियं । वेत्ति । यत्र । न । च । एव । अयं । स्थितः । चलति । तत्त्वतः ॥ २१ ॥ (इ० प०) हेअर्जुन। जो सुख अनंतहै तथा इन्द्रियका अविषयहै तथाकेवलशुद्धबुद्धिकरिकैग्रहणहोवैहै तिससुखकूं यहयोगीपुरुष जिसअवस्थाविशेषविषे अनुभवकरेहै तथा जिसविषे स्थितहूआ यहविद्वान् आपणेआत्मास्वरूपतैं कदाचित्भी नहीं चलायमानहोवैहै तिसकूंहीं योगशब्दकाअर्थ रूपजानणा ॥ २१ ॥ (इतिप०) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोसुख आत्यंतिकहै ॥ अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित निरतिशयब्रह्मरूपहै ॥ तथा जोसुख अतिइंद्रियहै ॥ अर्थात् नेत्रादि कइंद्रियोंकेसंबंधजन्यज्ञानका विषयनहींहै ॥ तथा जोसुख रजतमरूपमलतैंरहित केवल सत्त्वप्रधानबुद्धिकरिकैहीं ग्रहणकर्‍याजावैहै ऐसेस्वरूपसुखकूं यहयोगी

पुरुष जिसअवस्थाविशेषविषे अनुभवकरैहै ॥ तथा जिसअवस्थाविशेषविषेस्थितहुआ यह विद्वान्पुरुष आपणे परिपूर्णअद्वितीयआत्मास्वरूपतैं कदाचित्भी चलायमानहोतानहीं ॥ तिसनिरोधपरिणामरूपअवस्थाकूंहीं योगशब्दकाअर्थरूप जानणा ईहां श्रीभगवान्नैं तास्वरूपसुखके (आत्यंतिकम् अतिइंद्रियं बुद्धिग्राह्यं) यहतीनविशेषणकथनकरेहैं ॥ तहां (आत्यंतिकं) याविशेषणकरिकैतौं ताब्रह्मरूपसुखका (योवैभूमातत्सुखम्) इसश्रुतिकरिकैसिद्ध देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंर हित अनंतस्वरूप कथनकऱ्या ॥ और (अतींद्रियं) याविशेषणकरिकै ताब्रह्मरूपसुखविषे विषयजन्यसुखतैंभिन्नपणा कथनकऱ्या ॥ जिस कार णतैं सोविषयजन्यसुख विषयइंद्रियकेसंबंधकीअपेक्षा अवश्यकरिकैकरेहै ॥ और (बुद्धिग्राह्यं) याविशेषणकरिकै ताब्रह्मरूपसुखविषे सुषुप्तिकेसुखतैंभिन्न पणा कथनकऱ्या ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे बुद्धिकेलयहोणेतैं सोसुषुप्तिकासुखबुद्धिकरिकैग्रहणहोवैनहीं ॥ और समाधिअवस्थाविषेतौं साबुद्धि सर्ववृत्तियों तैंरहितहुई स्थितहोवैहै ॥ यातैं समाधिअवस्थाविषे सोब्रह्मरूपसुख बुद्धिकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ यहवार्त्ता गौडपादाचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोकार्द्ध ॥ (लीयतेतुसुषुप्तौतन्निगृहीतंनलीयते ॥) अर्थयह ॥ सोमन सुषुप्तिअवस्थाविषेतौं अज्ञानमैं लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और समाधिविषेतौं सोनिगृहीतमन लयभावकूं प्राप्तहोवैनहींइति॥यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (समाधिनिर्धूतमलस्यचेतसो निवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत् ॥ नशक्यतेवर्णयितुंगिरातदायदे तदंतःकरणेनगृह्यते ॥) अर्थयह ॥ समाधिकरिकैनिवृत्तहोइगयाहै रजतमरूपमल अथवा पापरूपमलाजिसका ऐसाजो आत्माविषेस्थितचित्तहै ॥ ताचित्तकूं तिस कालविषे जोसुख प्राप्तहोवेहै ॥ सोसुख वाणीकरिकै वर्णनकऱ्याजावैनहीं ॥ किंतु निरुद्धहुईयांहैसर्ववृत्तियाजिसकी ऐसेअंतःकरणकरिकैहीं सोसुख ग्रहणकऱ्याजा वैहैइति ॥ किंवा तासमाधिअवस्थाविषे वृत्तियोंकरिकै सुखका आस्वादनकरणा श्रीगौडपादाचार्यनैंहीं निषेधकऱ्याहै ॥ तहांश्लोकार्द्ध ॥ (नास्वादयेत्सुखंतत्रनिः संगः प्रज्ञयाभवेत्) अर्थयह ॥ इससमाधिविषे मैं इसमहान्सुखकूं अनुभवकरताहुं याप्रकारकीसविकल्पकवृत्तिकानाम प्रज्ञाहै ॥ ताप्रज्ञाकरिकै जोसुखकाआ स्वादनहै सोव्युत्थानरूपहोणेतैं समाधिकाविरोधीहीहै ॥ यातैं ताप्रज्ञाकरिकै सुखकेआस्वादनकूं योगीपुरुष कदाचित्भी नहींकरै ॥ इसीकारणतैं सोयोगीपुरुष ताप्रज्ञाकेसाथि संगतैरहितहोवै ॥ अर्थात् तावृत्तिरूपप्रज्ञाकूं निरोधकरैइति ॥ और सर्ववृत्तियोंतैंरहितचित्तकरिकै तास्वरूपसुखकाअनुभवतौं तिसीगौ डपादाचार्यनैंहीं (स्वस्थंशांतंसनिर्वाणमकथ्यंसुखमुत्तमम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ इसअर्थकूं आगेस्पष्टकरैंगे इति ॥ २१ ॥ ❁ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे (यत्रनचैवायंस्थितश्चलतितत्त्वतः) इसवचनकरिकै जिसअवस्थाविशेषविषेस्थितहुआ यहयोगीपुरुष आपणे अद्वितीयआत्मस्वरूपतैं चला यमानहोतानहीं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ अब इसश्लोककरिकै तिसीअर्थका उपपादनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यंलब्ध्वाचापरंलाभंमन्यतेनाधिकंततः ॥ यस्मिन्स्थितोनदुःखेनगुरुणापिविचाल्यते ॥ २२ ॥ यं । लब्ध्वा । च । अपरं । लाभं । मन्यते । न । अधिकं । ततः । यस्मिन् । स्थितः । न । दुःखेन । गुरुणा । अपि । विचाल्यते ॥ २२ ॥ (इतिप०)
हेअर्जुन जिसअवस्थाविशेषकूं प्राप्तहोइकै सोयोगीपुरुष दूसरे लाभकूं तिसतें अधिक नहीं मानताहै तथा जिसं अवस्थाविषे स्थितहुआ सोयोगीपुरुष महान् दुःखनैं भी नहीं चलायमानकरीताहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन निरतिशय आत्मास्वरूपनित्यसुखका अभिव्यंजक जा सर्ववृत्तियोंतैंरहितचित्तकीनिरोधनामा अवस्थाविशेषहै ॥ ऐसीजिसअवस्थाविशेषकूं निरंतर योगाभ्यासकीपरिपक्वतातैं संपादनकरिकै योगीपुरुष जिसअवस्थाविशेषतैंपरे दूसरेकिसीलाभकूं अधिकमानतानहीं ॥ किंतु तिसअवस्थाविशेषकीप्राप्ति करिकैहीं सोयोगीपुरुष आपणेकूं कृतकृत्य मानैहै ॥ तथा प्राप्तप्रापणीय मानैहै ॥ अनेकउपायोंकरिकैप्राप्तहोणेहारेसुख जिसकूं एकहींकालविषेप्राप्तहोवैं ताकूं प्राप्तप्रापणीय कहैहै ॥ तहांस्मृति (आत्मलाभान्नपरंविद्यते) ॥ अर्थयह ॥ आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनैंकी स्वर्गलोक वैकुंठलोक गोलोक ब्रह्मलोक इत्यादिकलोकहैं ॥ तेसर्वलोक सातिशयता तथादीनता तथानीचैपतनकाभय तथाईर्षा इत्यादिकदोषोंकरिकै सर्वदाग्रस्तहैं ॥ यातैं तेसर्वलोक अलाभरूपहींहैं ॥ यद्यपि वेदांतसिद्धांतविषे प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मसाक्षात्कारहीं परमलाभकह्याहै ॥ यातैं चित्तकीनिरोधअवस्थाकूंपरमलाभरूपता संभवतीनहीं ॥ तथापि जैसे श्रुतिविषे सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारे महावाक्यजन्यवृत्तिरूपज्ञानकूंभी सत्यरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तैसे ईहां श्रीभगवान्नैंभी तापरमलाभरूपआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति करणेहारी चित्तकीनिरोधअवस्थाकूं परमलाभरूपकरिकै कथनकऱ्याहैइति ॥ तहां श्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै बाह्यविषयोंकीवासनाकरिकै तायोगीपुरुषकातिससमाधितैं विचलन नहींहोवैहै यहवार्त्ता कथनकरी ॥ अब शीत आतप वायु मशक इत्यादिकोंनैंकऱ्याजोउपद्रवहै ॥ ताउपद्रवकेनिवृत्तकरणेवासतैभी तायोगीपुरुषका तिससमाधितैंविचलन नहींहोवैहै इसअर्थकूं श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै कथनकरेहैं (यस्मिन्स्थितःइति) जिसआत्मास्वरूपसुखकाअभिव्यंजक सर्ववृत्तियोंतैंरहित चित्तकीअवस्थाविशेषविषे स्थितहुआ योगीपुरुष शस्त्रप्रहारादिकनिमित्तजन्य महान्दुःखनैंभी चलायमान करीतानहीं ॥ तौं शीत आतपादिकोंके उपद्रवजन्यअल्पदुःख तायोगीपुरुषकूं कैसेचलायमानकरिसकैंगे ॥ किंतु तेदुःख नहींचलायमानकरिसकैंगे इति ॥ २२ ॥ ❋ ॥ तहां (यत्रोपरमतेचित्तं) इसश्लोकतैंलेकेतीनश्लोकोंकरिकेकथनकरीजाचित्तकीअवस्थाविशेषहै ताअवस्थाविशेषविषे योगशब्दकीअर्थरूपताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तंविद्याद्दुःखसंयोगवियोगंयोगसंज्ञितम् ॥ सनिश्चयेनयोक्तव्योयोगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥२३॥ तं । विद्यात् । दुःखसंयो

गवियोगं । योगसंज्ञितं । सः । निश्चयेन । योक्तव्यः । योगः । अनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दुःखके संबंधतैंरहित तिसनिरोधअवस्थाकूंहीं योगशब्दकाअर्थ जानणा सो योग निश्चयकरिकै तथाउद्वेगतैंरहितचित्तकरिकैंहीं अभ्यास करणेयोग्यहै ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ (यत्रोपरमतेचित्तं) इसवचनतैंआदिलैके बहुतविशेषणोंकरिकै कथनकऱ्याजो सर्ववृत्तियोंतैंरहित तथापरमानंदकाअभिव्यंजक चित्तकीनिरोधनाम अवस्थाविशेषहै ॥ सोचित्तवृत्तियोंकानिरोध चित्तवृत्तिमयसर्वदुःखोंकाविरोधीहोणेतैं तिनदुःखोंकेसंबंधकावियोगरूपहींहै ॥ अर्थात् आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक जितनैंकीदुःखहैं ॥ तिनसर्वदुःखोंकेसंबंधका जिसनिरोधविषे अभावहै ॥ यातैं सोसर्ववृत्तियोंकानिरोध यद्यपि वियोग इस नामकरिकै कहणेकूंयोग्यहै ॥ तथापि विरोधीलक्षणाकरिकै तिसनिरोधकूं योगशब्दकाअर्थ जानणा ॥ तायोगशब्दकेअनुसारतैं सोनिरोध किंचित्मात्रभी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इसीअर्थकूं भगवान्‌पतंजलिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥) अर्थयह ॥ सर्वचित्तवृत्तियोंकाजोनिरोधहै ताकानाम योगहैइति ॥ इतनैंकहणेकरिकै (योगोभवतिदुःखहा) इसवचनकरिकै जोपूर्व योगकाफल कथनकऱ्याथा ताकाउपसंहारकऱ्या ॥ अब निश्चयविषे तथानिर्वेदतैंरहितपणेविषे तिसयोगकीसाधनरूपताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ (सनिश्चयेनयोक्तव्यःइति) इसप्रकारकेमहान्‌फलकीप्राप्तिकरणेहारासोयोग इसअधिकारीपुरुषनैं निश्चयकरिकै अभ्यासकरणेकूंयोग्यहै ॥ ईहां आचार्यकेवचनोंके तथाशास्त्रकेवचनोंके तात्पर्यका विषयीभूत जोजोअर्थहै सोसर्वअर्थ सत्यहै याप्रकारकीदृढबुद्धिकानाम निश्चयहै ॥ ऐसेनिश्चयकरिकै सोयोगाभ्यासकरणा ॥ तथा इसअधिकारीपुरुषनैं निर्वेदतैंरहितहोइकैभी तायोगाभ्यासकूंकरणा ॥ ईहां इतनैंकालपर्यंत अभ्यासकरते हुएभी हमारेकूं योगसिद्धहुआनहीं तौंइसतैंआगे कैसेसिद्धहोवैंगा याप्रकारकेअनुतापकानाम निर्वेदहै ॥ ऐसेनिर्वेदतैंरहितचित्तकरिकै तायोगाभ्यासकूंकरै ॥ अर्थात् निरंतरअभ्यासकरतेहुए इसजन्मविषे अथवा जन्मांतरविषे अवश्यकरिकैयोगसिद्धहोवैंगा याकेविषे अतिशीघ्रताकरणेकाक्याप्रयोजनहै ॥ याप्रकारकेधैर्ययुक्त मनकरिकै तिसयोगाभ्यासकूंकरैं ॥ यहवार्त्ता श्रीगौडपादाचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उत्सेकउदधेर्यद्वत्कुशाग्रेणैकबिंदुना ॥ मनसोनिग्रहस्तद्वद्भवेदपरिखेदतः ॥) अर्थयह ॥ जैसे कोईटिटिभपक्षी समुद्रकेसुकावणेकानिश्चयकरिकै कुशाकेअग्रभागसमान आपणीचंचुसैं समुद्रकेजलकेबिंदुकूंग्रहणकरिकैं तीर ऊपरि पावताभया ॥ तैसे खेदतैंरहितहोइकै अभ्यासकरणेतैंहीं इसमनकानिग्रह होवैहै ॥ ईहां वेदांतसंप्रदायकेवेत्ता वृद्धपुरुष याप्रकारकीआख्यायिकाकूं कहते भयेहैं ॥ समुद्रकेतीरविषेस्थित किसीटिटिभनामापक्षीकेअंडोंकूं समुद्र आपणेतरंगकेवेगकरिकै हरणकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोटिटिभपक्षी क्रोधवान्‌होइकै इस

समुद्रकूं मैं अवश्यकरिकैसुकावौंगा याप्रकारकानिश्चयकरिकै तिससमुद्रकेसुकावणेविषे प्रवृत्तहोताभया॥तहां आपणेमुखकेअग्रभागकरिकैं एकजलकेबिंदुकूंग्रहणक रिकै तासमुद्रतैंबाहरिजाइके छोडताभया ॥ तिसकालविषे ताटिटिभपक्षीकूं आपणेबांधव बहुतपक्षी तासमुद्रसुकावणेतैं निवृत्तकरतेभये ॥ तौंभी सोटि टिभपक्षी तिसतैं उपराम नहींहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर तिसस्थानविषे दैवयोगतैं नारदमुनि आवताभया ॥ सोनारदमुनिभी तिसटिटिभपक्षीकूं तासमुद्रके सुकावणेतैं निवृत्तकरताभया ॥ तौंभी सोटिटिभपक्षी तिसतैंनिवृत्त नहींहोताभया ॥ किंतु इसजन्मविषे अथवा दूसरेजन्मविषे मैं इससमुद्रकूं अवश्य करिकैसुकावौंगा याप्रकारकीप्रतिज्ञा सोटिटिभपक्षी नारदकेआगेकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर दैवकी अनुकूलतातैं सोकृपालुनारद गरुडकेसमीपजाइके याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेगरुड यहसमुद्र तुमारेसजातीयपक्षीयोंकाद्रोहकरिकै तुमाराहीं अपमानकरेहै ॥ याप्रकारकावचन कहिकै सोनारदमुनि तागरुडकूं तहांभेजताभया ॥ तिसगरुडकेपक्षोंकेपवनकरिकै सूकताहुआ सोसमुद्रभी भयभीतहोइके तिनअंडोंकूं तिसटिटिभपक्षीकेतांई देताभयाइति ॥ इसप्रकार जोयोगीपुरुष खेदतैंरहितहोइके तिसमनकेनिरोधरूप परमधर्मविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ तिसयोगीपुरुषऊपरि साक्षात् आपईश्वरहीं अनुग्रहकरेहै ताईश्व रकेअनुग्रहकरिकै तिसटिटिभपक्षीकीन्यांई तिसयोगीपुरुषकाभी सोमनकानिरोधरूपवांछित अर्थ अवश्यकरिकैसिद्धहोवैहै ॥ यहटिटिभपक्षीकाआख्यान आत्म पुराणके एकादशैअध्यायविषे हम विस्तारतैं कथनकरिआयेहैंइति ॥ ❃ ॥ तहां किसउपायकरिकै सोयोगअभ्यासकरणेयोग्यहै ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाके हुए श्रीभगवान् तायोगके उपायकावर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वासर्वानशेषतः ॥ मनसैवेंद्रियग्रामंविनियम्यसमंततः॥२४॥ संकल्पप्रभवान् । कामान् । त्यक्त्वा । सर्वान् । अशेषतः । मनसा । एव । इंद्रियग्रामं । विनियम्य । समंततः ॥ २४॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहअधिकारी पुरुष संकल्पजन्य सर्व कामोंकूं वासनासहित परित्यागकरिकै तथामन करिकै हींइंद्रियोंकेसमूहकूं सर्वविषयोंतैं रोकिकेंरिकै मन कानिरोधकरे ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ जेविषय इसलोकविषे तथापरलोकविषे अनर्थकाहेतुहोणेतैं अत्यंतदुष्टहै ॥ ऐसेदुष्ट विषयोंविषेरह्याहुआजोअशोभनपणाहै ॥ ताअशोभनपणेकूं नदेखिकैं जो तिनविषयोंविषे यहविषय बहुतरमणीकहै याप्रकारका शोभनपणेकाअध्यासहै ताकानाम संकल्पहै॥तासंकल्पतैउत्पन्नभयेजे यहविषय हमारेकूंप्राप्तहो वैं याप्रकारकीविषयअभिलाषारूपकामहैं ॥ तिन शोभनअध्यासजन्य विषयकीअभिलाषारूप सर्वकामोंकूं अशेषतैं परित्यागकरिकैयहअधिकारी पुरुष शनैशनैक

रिकै मनकानिरोधकरै ॥ अर्थात् आध्यात्मशास्त्रकेविचारतैं उत्पन्नभयाजो तिनविषयोंविषे अशोभनत्वनिश्चयहै ॥ ताअशोभनत्वनिश्चयकरिके तिसशोभनत्वअ ध्यासकेबाधहुएतैं अनंतरस्रक्चंदनवनिताआदिकदृष्टविषयोंविषे तथा चंद्रलोक पारिजात अमृत अप्सरा इत्यादिकअदृष्ट विषयोंविषे श्वानकेवांतग्रासकी न्यांई सर्वकर्मोंका सूक्ष्मवासनासहित परित्यागकरिकै मनकानिरोधकरै ॥और ताविषयकीअभिलाषारूपकामपूर्वकहीं नेत्रादिकइंद्रियोंकी तिनविषयोंविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ कामतैंविना तिनइंद्रियोंकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं ताकामके अभावहुए विवेकयुक्तमनकरिकै चक्षुआदिकइंद्रियोंकेसमूहकूं रूपादिकसर्वविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै यहअधिकारी पुरुष शनैशनैकरिकै आपणेमनकानिरोधकरै ॥ इसप्रकार अगलेश्लोककेसाथि इसश्लोककाअन्वयकरणा ॥ ईहां (अशेषतः) यापदकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यहअर्थसूचनकरया ॥ जैसे किसीपात्रविषे तैलकूं पाइकै तिसपात्रतैं पुनःसोतैल निकासिदईयें ॥ तिसतैंअनंतर तापात्रविषे जोलेपरूपकरिकै तैलरहैहै ताकानाम शेषहै ॥ तैसे विषयअभिलाषारूपकामके परित्यागकीयेहुएभी जबपर्यंत तिसकामका वासनारूपशेषरहैहै ॥ तबपर्यंत तिनवासनावोंकरिकै आकर्षणकूंप्राप्तहुआ सोमन समाधिविषेस्थितहोवैनहीं ॥ यातैंवासनारूपशेष जैसेबाकीनहींरहै तैसे तिनसर्वकामोंका परित्यागकरै ॥ और (मनसैव) यावचनकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यहअर्थसूचनकरया ॥ यहनेत्रादिकइंद्रिय मनकेसंबंधतैंविना किसीभीविषयविषे स्वतंत्र प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु मनकेसंबंधकूंप्राप्तहोइकैहीं यहनेत्रादिक आपणेआपणेविषयोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ यातैंतिननेत्रादिकइंद्रियोंकेसाथि जोमनकासंबंध नहींकरणाहै ॥ यहहीं तिननेत्रादिकइंद्रियोंका नियमहै इति ॥ २४ ॥ ❀

(मू० श्लो०) शनैःशनैरुपरमेद्बुद्ध्याधृतिगृहीतया ॥ आत्मसंस्थंमनःकृत्वानकिंचिदपिचिंतयेत् ॥ २५ ॥ शनैः । शनैः । उपरमेत् । बुद्ध्या । धृतिगृहीतया । आत्मसंस्थं । मनः । कृत्वा । न । किंचित् । अपि । चिंतयेत् ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोयोगीपुरुष धैर्ययुक्त बुद्धिकरिकै शनैः शनैःकरिकै मनकानिरोधकरै तथा प्रत्यक् आत्माविषेस्थित मनकूं करिकै किंचित्‌मात्र भी नहीं चिंतनकरै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ धैर्यरूपजाधृतिहै ताधृतिकरिकैअनुगृहीत जाअवश्यकर्त्तव्यताकानिश्चयरूपबुद्धिहै ॥ अर्थात् जिसीकिसीकालविषे यहयोग अवश्यकरिकेसिद्धहोवैंगा याकेविषेबहुतशीघ्रताकरणेकाक्याप्रयोजनहै याप्रकारके धैर्यकरिकैअनुगृहीतजाबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकरिकै यहअधिकारीपुरुष गुरुउपदिष्टमार्गकरिकै भूमिकावोंके जयक्रमतैं शनैशनैकरिकै मनकानिरोधकरै ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्व योगकासाधनरूपकरिकैकथनकरयेजे अनिर्वेद तथानिश्चय तेदोनों दिखाए ॥ यहवार्त्ताश्रुति विषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनि ॥ ज्ञानमात्मनिमहतिनियच्छेत्तद्यच्छेच्छांतआत्मनीति) ॥ अर्थयह ॥

लौकिक तथावैदिक जितनीकीवाचाहै ॥ तिसवाचाकूं यहबुद्धिमान् अधिकारी सव्यापारमनविषेलयकरै ॥ अर्थात् वाक्इंद्रियकेसर्वव्यापारकापरित्याग करिकै केवल मनकेव्यापारमात्रवालाहोवै ॥ तहांश्रुति ॥ (नानुध्यायाद्बहूञ्छब्दान्वाचोविग्लापनंहितत्) ॥ अर्थयह ॥ अनात्मपदार्थोंकेवाचक बहुतशब्दोंकूं यहअधिकारीपुरुष नहींउच्चारणकरै ॥ जिसकारणतैं तेशब्द वाक्इंद्रियकूं केवल परिश्रमकीहींप्राप्तिकरणेहारेहैं इति ॥ और वागादिकपंचकर्मइंद्रिय तथाश्रोत्रादि कपंचज्ञानइंद्रिय यहदशइंद्रियहैं सहकारीजिसके तथानानाप्रकारकेसंकल्पविकल्पोंकासाधनरूप ऐसाजोकारणरूपमनहै ॥ तिसमनकूं ज्ञानरूपआत्माविषेलयकरै ॥ ईहां (जानातीतिज्ञानं)॥अर्थयह ॥ जो वस्तुकूं जानै ताकानाम ज्ञानहै॥याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै ज्ञानशब्द ज्ञाताकावाचकहै ॥ऐसेज्ञाताआत्माविषेतामनकूंलय करै॥ अर्थात् आत्माविषे ज्ञातृपणेकाउपाधिजोअहंकारहै ताअहंकारविषे तिसमनकालयकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसमनकेसंकल्पविकल्पादिकसर्वव्यापारोंकूंपरित्या गकरिकै ताअहंकारमात्रकूं परिशेषतैं राखै ॥ तिसतैंअनंतर तिसज्ञातृपणेकाउपाधिअहंकाररूपज्ञानकूं सर्वत्रव्यापकमहत्तत्वआत्माविषे लयकरै ॥ तहां सोअहंकार दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ विशेषरूपअहंकारहोवैहै ॥ दूसरा सामान्यरूपअहंकार होवैहै ॥ तहां यहदेवदत्तनामामैं इसयज्ञदत्तकापुत्रहूं इसप्रकारकाजो स्पष्टअभि मानहै सोविशेषरूपअहंकारहै ॥ यहहींविशेषरूपअहंकार व्यष्टिअहंकार कह्याजावैहै ॥ और अहमस्मि इतनामात्रजोअभिमानहै सोअभिमान सामान्यअहंकार है ॥ सोसामान्यअहंकारहीं समष्टिअहंकार कह्याजावैहै ॥ सोसमष्टिअहंकार सर्वत्र अनुस्यूतहोणेतैं हिरण्यगर्भ तथा महान्आत्मा कह्याजावैहै ॥ तिसदोनोंप्रकारके अहंकारतैं पृथक्कन्याहुआ जोसर्वकेअंतर चिदेकरसआत्माहै ताकानाम शांतआत्माहै॥तिस शांतआत्माविषे तिस समष्टिबुद्धिरूपमहान्आत्माकूं लयकरै ॥ इसप्र कार तासमष्टिबुद्धिरूपमहत्तत्वका कारणरूपजो अव्यक्तहै तिसअव्यक्तकूंभी ताशांतआत्माविषे लयकरै ॥ इसप्रकार सर्वकार्यकारणरूपसंघातकेलयकीयेतैं अनंतर इसअधिकारीपुरुषकूं सर्वउपाधियोंतैंरहित त्वंपदकालक्ष्यअर्थरूप शुद्धआत्माका साक्षात्कारहोवैहै ॥ तहां तिस शुद्धचिदेकरसप्रत्यक्आत्माविषे जडशक्तिरूप अनिर्वचनीयअव्यक्तनामा प्रकृति उपाधिरूपहै ॥ साप्रकृति प्रथम तासामान्यअहंकाररूप महत्तत्वनामकूंधारणकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर बाह्यविशे षअहंकाररूपकारिकै प्रगटहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तिसतैंभीबाह्य मनरूपकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तिसमनतैंभीबाह्य वाक्इंद्रियरूपकरिकै प्रगटहोवैहै इति ॥ यहसर्वअर्थ साक्षात्श्रुतिनैंहीं कथनकऱ्याहै॥तहांश्रुति॥ (इंद्रियेभ्यः पराह्यर्था अर्थेभ्यश्चपरंमनः॥मनसस्तुपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः ॥ महतःपरमव्यक्तम व्यक्तात्पुरुषःपरः॥पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः॥इति) अर्थयह ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ परहैं॥और तिनअर्थोंतैं मनपरहै ॥ और तामनतैंव्य ष्टिबुद्धि परहै॥और ताव्यष्टिबुद्धितैं महत्तत्त्वनामासमष्टिबुद्धि परहै ॥ और तामहत्तत्वतैं अव्यक्त परहै ॥ और ताअव्यक्ततैं अधिष्ठानरूप परमात्मापुरुष परहै ॥

तापुरुषतैंपरे कोईभीपदार्थहैनहीं ॥ किंतु सोपुरुषहीं सर्वकीअवधिरूपहै तथापरागतिरूपहैइति॥ तहां जैसे गौमहिषादिक पशुवोंविषे वाक्इंद्रियकानिरोधरहेहै ॥ तैसे वाक्इंद्रियकानिरोधकरणा यहप्रथमभूमिका कहीजावैहै॥और जैसे बालकविषे तथामूढपुरुषविषे निर्मनस्त्व रहेहै ॥ तैसे निर्मनस्त्ववालाहोणा यहदूसरीभूमिका कहीजावैहै ॥ और जैसे तंद्राअवस्थाविषे मैंब्राह्मणहूं मैंमनुष्यहूं याप्रकारका अहंकार रहतानहीं ॥ तैसे सर्वदा अहंकारतैंरहितहोणा यहतृतीयभूमिका कही जावैहै और जैसे सुषुप्तिविषे महत्तत्वनहींरहेहै ॥ तैसे जोमहत्तत्वतैंरहितपणाहै ॥ साचतुर्थभूमिका कहीजावैहै ॥ इनच्यारिभूमिकावोंकीअपेक्षाकरिकैहीं श्रीभगवान्नैं (शनैःशनैरुपरमेत्) यहवचन कथनकर्‍याहै ॥ ईहां यद्यपि महत्तत्त्व तथाशांतआत्मा यादोनोंकेमध्यविषे (इंद्रियेभ्यःपराह्यर्थाः) इसश्रुतिनैं तामहत्तत्त्वकाउपादानकारण अव्याकृतनामातत्त्व कथन कर्‍याहै ॥ तथापि जैसे वागादिकतत्त्वोंका मनादिकतत्त्वोंविषेलय श्रुतिनैं कथनकर्‍याहै तैसे तिसमहत्तत्वनामा तत्वका अव्याकृत नामा तत्व विषे लय श्रुतिनैं कथनकर्‍यानहीं ॥ याकेविषेयहकारणहै ॥ जोकदाचित् तामहत्तत्त्वका तिसअव्याकृतविषेलय करीये ॥ तौंसुषुप्तिकीन्यांई स्वरूपलयकीहीं प्राप्तिहोवैगी ॥ और सोअव्याकृत विषेमहत्तत्त्वकालय भोगप्रदकर्मोंकेक्षयहुएतैंअनंतर पुरुषप्रयत्नतैंविना स्वतःहींसिद्धहै ॥ तथा सोअव्यक्तविषेमहत्तत्त्वकालय तत्त्वदर्शनविषे उपयोगीभीहैनहीं ॥ और (दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः) याप्रकारकावचन पूर्वकथनकरिकै तिससूक्ष्मताकीसिद्धिवासतै (यच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञः) इसश्रुतिनैं निरोधसमाधिकाविधानकर्‍याहै ॥ यातैं सोनिरोधसमाधि जिज्ञासुजनकूंतौं तत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै अपेक्षितहै॥औरतत्त्ववेत्तापुरुषकूंतौं सर्वक्लेशोंकीनिवृत्तिरूपजीवन्मुक्तिकीप्राप्तिवासतै अपेक्षितहै ॥ यातैं जिज्ञासुजननैं तथातत्त्ववेत्तापुरुषनैं सोनिरोधसमाधि अवश्य करिकैसंपादनकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् शांतआत्माविषे अवरुद्धजोचित्तहै सोचित्त तिसकालविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहितहै ॥ यातैं सुषुप्तचित्तकीन्यांई तिसचित्तविषे आत्मदर्शनकीहेतुताहीं संभवतीनहीं ॥ समाधान ॥ तिसनिरोधकालविषे सर्ववृत्तियोंकेअभावहुएभी तिसनिरुद्धचित्तकरिकै स्वतःसिद्धजोआत्माकादर्शनहै ताकूं कोईभीवादी निवृत्तकरणे विषेसमर्थहैनहीं ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (आत्मानात्माकारंस्वभावतोऽवस्थितंसदाचित्तम् ॥ आत्मैकाकारतयातिरस्कृतानात्मदृष्टिंविदधीत ॥) अर्थयह ॥ यहचित्त आपणेसविषयस्वभावतैंहीं सर्वदा आत्माकार अथवा अनात्माकार हुआहीं स्थितहोवैहै ॥ तहां यहअधिकारीपुरुषताचित्तकी आत्मैकाकारताकूंसंपादनकरिकै अनात्मदृष्टिकापरित्यागकरिकै ताचित्तकानिरोधकरै ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे उत्पन्नहुआघट स्वतः आकाशकरिकैपूर्णहुआहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ किसीपुरुषप्रयत्नकरिकै सोघट आकाशकरिकैपूर्णकर्‍याजावैनहीं ॥ और ताघटविषे जलतंडुलादिकपदार्थोकाजो पूरणहोवैहै ॥ सोतौं ताघटकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर पुरुषकेप्रयत्नकरिकैहोवैहै॥ तहां तिसघटतैं जलतंडुलादिकोंकेनिकास्येहुएभी सोआकाश ताघटतैंबाहरिनिकास्याजा

वैनहीं ॥ तथा तावटकेमुखकेबंदकीयेहुएभी सोआकाश ताघटकेअंतरहींरहेहै ॥ तैसे यहचित्तभी उत्पन्नहुआहीं चैतन्यआत्माकरिकेपूर्णहींउत्पन्नहोवैहै ॥ उत्पन्नहुए तिस चित्तविषे पश्चात् मृषाविषेपायेहुएद्रुतताम्रकीन्यांई घटदुःखादिरूपता भोगकेहेतुधर्मअधर्मसहकृतसामग्रीकेवशतैं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां योगाभ्यासकेबलतैं तिस चित्ततैं ताघटदुःखादिकअनात्माकारताकेनिवृत्तकीयेहुएभी विनाहींनिमित्ततैं जोचित्तविषेचिदाकारताहै ॥ सोचिदाकारता ताचित्ततैं निवृत्तकरी जावैनहीं ॥ यातैं निरोधसमाधिकरिकैसर्ववृत्तियोंतैंरहित तथासंस्कारमात्ररूपहोणेतैं अत्यंतसूक्षम ऐसाजो निरुपाधिकचेतनआत्माकेअभिमुख चित्तहै ॥ तानिरुद्धचित्तकरिकै वृत्तितैंविनाहीं निर्विघ्नआत्माकाअनुभव संभवहोइसकेहै ॥ इसीपूर्वउक्तसर्वअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ (आत्मसंस्थंमनःकृत्वानकिंचिदपिचिंतयेत्) सर्वउपाधितैंरहित प्रत्यक्आत्माविषेहै संस्था क्या समाप्ति जिसकी ताकानाम आत्मसंस्थहै ॥ अर्थात् सर्वप्रकारकीवृत्तियोंतैंरहित स्वभावसिद्धआत्माकारमात्रजोमनहै ॥ ऐसेआत्मसंस्थमनकूं पूर्वउक्तधैर्यकरिकैअनुगृहीतबुद्धितैं संपादनकरिकै असंप्रज्ञातसमाधिविषेस्थितहुआ यहयोगीपुरुष किसीभी वस्तुका चिंतनकरैनहीं ॥ अर्थात् किसीअनात्मपदार्थकूं अथवा प्रत्यक्आत्माकूं वृत्तिकरिकैविषयकरैनहीं ॥ काहेतैं तिसअसंप्रज्ञातसमाधिकालविषे जोकदाचित् अनात्माकारवृत्तिकूंउत्पन्नकरैगा ॥ तौं तिससमाधितैंव्युत्थानहीं प्राप्तहोवैगा और जोकदाचित् आत्माकारवृत्तिकूं उत्पन्नकरैगा तौं संप्रज्ञातसमाधिहीं प्राप्तहोवैगी ॥ असंप्रज्ञातसमाधि रहैगीनहीं ॥ यातैं सोयोगीपुरुष ताअसंप्रज्ञातसमाधिकी स्थिरताकरणेवासतैं किसीभी आत्माकारवृत्तिकूं अथवा अनात्माकारवृत्तिकूं उत्पन्नकरैनहीं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार निरोधसमाधिकूंकरताहुआ योगीपुरुष आपणेमनकूं सर्वऔरतैंरोकिकै अंतरआत्माविषे निरुद्धकरै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यतोयतोनिश्चरतिमनश्चंचलमस्थिरम् ॥ ततस्ततोनियम्यैतदात्मन्येववशंनयेत् ॥ २६ ॥ यतः । यतः । निश्चरति । मनः । चंचलम् । अस्थिरं । ततः । ततः । नियम्य । एतत् । आत्मनि । एव । वशं । नयेत् ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जिसंजिसंनिमित्ततैं विक्षेपकेअभिमुखहूआ तथालयकेअभिमुखहूआ यहमन विषयाकारवृत्तिकूंउत्पन्नकरेहै तिसं तिसंनिमित्ततैंइसं मनकूं रोकिकै आत्मा विषे हीं निरोधकूं प्राप्तकरै ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन चित्तकूंविक्षेपकीप्राप्तिकरणेहारे जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तिनशब्दादिकविषयोंकेमध्याविषे जिसजिसशब्दादिकविषयरूपनिमित्ततैं तथारागद्वेषादिकनिमित्ततैं विक्षेपकेअभिमुखहुआ यहमन निश्चरताहै ॥ अर्थात् विषयकेअभिमुखहुई जेप्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति यहसमाधिकीविरोधि च्यारिप्रकारकीवृत्ति

याहैं तिनवृत्तियोंविषे किसीभीवृत्तीकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तथालयकेहेतुरूपजे निद्राशेष बहुअन्नभोजन परिश्रम इत्यादिकनिमित्तहैं ॥ तिनोंकेमध्यविषे जिसजिसनिमित्ततैं लयकेअभिमुखहुआ यहमन निश्चरताहै ॥ अर्थात् लीनहुआ समाधिकीविरोधिनिद्रारूपवृत्तिकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तिसतिस विक्षेपकेनिमित्ततैं तथा लयकेनिमित्त इसमनकूं नियम करिकै अर्थात्सर्ववृत्तियोंतैंरहितकरिकै स्वप्रकाशपरमानंदघनआत्माविषेहीं निरुद्धकरै ॥ जिसआत्माविषे निरुद्धहुआ यहमन विक्षेपकूंभी प्राप्तहोवैनहीं तथा लयकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ यहसर्वअर्थ श्रीगौडपादाचार्यनैंभीकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उपायेननिगृह्णीयाद्विक्षिप्तंकामभोगयोः॥सुप्रसन्नंलयेचैवयथाकामोलयस्तथा ॥ १ ॥ दुःखंसर्वमनुस्मृत्य कामभोगान्निवर्त्तयेत् ॥ अजंसर्वमनुस्मृत्यजातंनैवतुपश्यति ॥ २ ॥ लयेसंबोधयेच्चित्तंविक्षिप्तंशमयेत्पुनः ॥ सकषायंविजानीयाच्छमप्राप्तंन चालयेत् ॥ ३ ॥ नास्वादयेत्सुखंतत्रनिःसंगःप्रज्ञयाभवेत् ॥ निश्चलंनिश्चलंचित्तमेकीकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ४ ॥ यदानलीयतेचित्तंनचविक्षिप्यतेपुनः ॥ अनिंगनमनाभासंनिष्पन्नंब्रह्मतत्तदा ॥ ५ ॥ अब यथाक्रमतैं इनपंचश्लोकोंकाअर्थनिरूपणकरेहैं ॥ कामभोग यादोनोंविषे विक्षिप्तजोमनहै ॥ अर्थात् प्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति याच्यारिवृत्तियोंविषे किसिभीवृत्तिरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तभयाजोमनहै तिसमनकूं यहयोगीपुरुष वक्ष्यमाणवैराग्यअभ्यासरूप उपायकरिकै प्रत्यक्आत्माविषेहीं निरुद्धकरै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकी दोप्रकारकीअवस्थाहोवैहै ॥ एकतौ चिंत्यमान अवस्थाहै ॥ और दूसरी भुज्यमान अवस्थाहोवैहै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकाचिंतनकरणायाकानाम चिंत्यमान अवस्थाहैं ॥ और तिनशब्दादिविषयोंकाजोभोगणाहै ताकानाम भुज्यमान अवस्थाहै ॥ तिनदोनोंअवस्थावोंकेबोधनकरणेवासतै (कामभोगयोः) यावचनविषे द्विवचनकथनकऱ्याहै ॥ तेदोनोंअवस्था मनकेविक्षेपकाहींहेतुहोवैहैं ॥ और लयभावकूंप्राप्तहोवैजिसविषे ताकानाम लयहै ऐसीसुषुप्तिहै ॥ तासुषुप्तिरूपलयविषे यहमन सुप्रसन्नहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वआयासतैंरहितहोवैहै ॥ ऐसे सुप्रसन्नमनकूंभीसोयोगीपुरुष निग्रहकरै ॥ शंका ॥ सुषुप्तिविषे सर्वविक्षेपरूपआयासतैं जोमन रहितहोवैहै ॥ तौ किसवासतै तामनकानिग्रहकरणा ॥ ऐसीशंकाकेहुए कहेहैं (यथाकामोलयस्तथाइति) जैसे काम विषयगोचर प्रमाणादिकवृत्तियोंकूंउत्पन्नकरिकैसमाधिकाविरोधीहोवैहैं ॥ तैसे सोलयभी निद्रारूपवृत्तिकूंउत्पन्नकरिकै समाधिकाविरोधीहींहोवैहै ॥ जिसकारणतैं सर्ववृत्तियोंकानिरोधहीं समाधिकह्याजावैहै ॥ यातैं कामादिककृतविक्षेपतैं जैसे सोमन निरोधकरणेयोग्यहै ॥ तैसे परिश्रमादिकृतलयतैंभी सोमन निरोधकरणेयोग्यहैइति ॥ १ ॥ तहांप्रथम श्लोकविषे । उपायेननिगृह्णीयात् । यावचनकरिकैसामान्यतैं उपाय कथनकरया ॥ सोमनकेनिग्रहकरणेकाउपाय कौनहै ऐसीशंकाकेहुए ताउपायकाकथनकरेहैं ॥ दुःखंसर्वमनुस्मृत्येति ॥ अविद्याकरिकैरचित जितनाकीयहद्वैतप्रपंचहै ॥ सोसर्वद्वैतप्रपंच परिच्छिन्नहोणेतैंदुःखरूपहींहै इसप्रकारकानिरंतर चिंतनकरिकै ॥ अर्थात् (योवैभूमातत्सुखंनाल्पेसुखमस्ति अथयदल्पंतन्मर्त्यंतद्दुःखमिति ॥) अर्थयह ॥ जोचेतन देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै सोईहीं सुखरूपहै ॥ परिच्छिन्नपदार्थों

विषेसुखरूपता होवैनहीं ॥ जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहै सोसोपदार्थ नाशवान्है तथादुःखरूपहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंकेअर्थकूं गुरुकेउपदेशतैं अनंतर निश्चयक रिकै सोयोगीपुरुष कामभोगोंकूं आपणेमनतैं निवृत्तकरै ॥ अर्थात् चिंत्यमानअवस्थावालेविषयोंकूं तथाभुज्यमान अवस्थावालेविषयोंकूं आपणेमनतैं निवृत्तकरै ॥ अथवा तिसकामभोगतैं आपणेमनकूं निवृत्तकरै ॥ इतनैंकहणेकरिकै द्वैतप्रपंचकेस्मरणकालविषे वैराग्यभावनामैं तामनकेनिग्रहीउपायरूपता कथनकरी ॥ अब सर्वद्वैतप्रपंचकाविस्मरणरूप परमउपायकूं कथनकरेहैं अजंसर्वमनुस्मृत्यइति । जन्मतैंरहितजोब्रह्महै ॥ तद्रूपहीं यहसर्वजगत्है ॥ तिसब्रह्मतैं अतिरिक्त किंचित् मात्रभीवस्तुहैनहीं ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रके उपदेशतैंअनंतर विचारकरिकै तिसअद्वितीयब्रह्मतैंविपरीत इसद्वैतमात्रकूं सोयोगीपुरुष देखतानहीं ॥ जिसकारणतैं अधिष्ठानकेज्ञानहुए कल्पितवस्तुका अभावहींहोवैहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुए ताकेविषेकल्पित सर्पदंडादिकोंकाअभावहींहोवैहै ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्म केसाक्षात्कारहुए ताकेविषेकल्पितद्वैतप्रपंचकाअभावहींहोवैहै ॥ तहां वैराग्यभावनारूप पूर्व उक्तउपायकीअपेक्षाकरिकै इससर्वद्वैतकीनिवृत्तिरूपउपायविषे विलक्ष णताबोधनकरणेवासतै श्लोकविषे तु यहशब्दकथनकऱ्याहैइति ॥ २ ॥ इसप्रकार वैराग्यभावना तथा तत्त्वदर्शन यादोनोंउपायोंकरिकै विषयोंतैंनिवृत्तकऱ्याहुआ जोचित्तहै ॥ सोचित्त जोकदाचित् दिनदिनविषेलयहोणेकेअभ्यासवशतैं तालयकेअभिमुखहोवै ॥ तौं निद्राशेषबहुअन्नभोजन अतिपरिश्रम इत्यादिकजे लयके कारणहैं तिनकरणोंकानिरोधकरिकै सोयोगीपुरुष उत्थानकेप्रयत्नकरिकै ताचित्तकूं तिसलयतैं प्रबोधनकरै ॥ इसप्रकार तिसलयतैं प्रबोधनकऱ्याहुआ सोचित्त जो कदाचित् दिनदिनविषे ताप्रबोधनके अभ्यासवशतैं पुनः ताकामभोगविषे विक्षिप्तहोवै ॥ तौं पूर्वउक्त वैराग्यभावनाकरिकै तथातत्वसाक्षात्कारकरिकै पुनः ताचि त्तकूं निरुद्धकरै ॥ इसप्रकार पुनःपुनः अभ्यासकेबलतैं तालयतैंप्रबोधनकऱ्याहुआ तथाशब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तकऱ्याहुआजोचित्तहै ॥ अर्थात् लय निक्षेप यादोनोंदोषोंतैंरहितकऱ्याहुआ जोचित्तहै ॥ सोचित्त जबी ब्रह्मरूपसमभावकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ किंतु मध्यविषेस्थितहुआ सोचित्त स्तब्धहोइजावैहै तास्तब्धभा वकूं कषायदोष कहेहैं ॥ सोकषायदोष रागद्वेषादिकोंकीप्रबलवासनारूपरागकेवशतैं प्राप्तहोवैहै ॥ ताकषायदोषकरिकै युक्तजोचित्तहै ताकूं सकषायकहेहैं ॥ ऐसे सकषायचित्तकूं सोयोगीपुरुष समाहितचित्ततै विवेककरिकैजानैं ॥ तिसतैंअनंतर यहहमाराचित्त अबी समाहितनहींभयाहै इसप्रकारकानिश्चयकरिकै सोयोगीपुरुष जैसे लयविक्षेपदोषतैं ताचित्तकूंनिवृत्तकऱ्याथा तैसे ताकषायदोषतैंभी तिसचित्तकूं निवृत्तकरै ॥ तिसतैंअनंतर लयविक्षेपकषायदोषतैंरहितहुआ सोचित्त परिशेषतैं तिस समरूपब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तासमब्रह्मविषेप्राप्तहुए चित्तकूं सोयोगीपुरुष कषायलयकीभ्रांतिकरिकै नहींचलायमानकरै ॥ किंतु धैर्य अनुगृही तबुद्धिकरिकै तालयकषायकीप्राप्तितैं विवेचनकरिकै तिससमब्रह्मकीप्राप्तिविषेहीं अत्यंत प्रयत्नकरिकै तिसचित्तकूंस्थापनकरै इति ॥ ३ ॥ किंवा सोनिरोधसमाधि

यद्यपिपरमसुखका अभिव्यंजककहै ॥ तथापि सोयोगीपुरुष तानिरोधसमाधिविषे तासुखकूं आस्वादननहींकरै ॥ अर्थात् इतनैंकालपर्यंत मैं सुखीहुआस्थितहूं इसप्रकारकी सुखकाआस्वादनरूपवृत्तिकूं सोयोगीपुरुष नहींउत्पन्नकरै ॥ जोकदाचित् तासुखाकारवृत्तिकूंकरैगा ॥ तौं तिसअसंप्रज्ञातसमाधिकाहीं भंगहोवैगा ॥यह वार्ता पूर्वहींकथनकरिआयेहैं ॥ किंवा प्रज्ञाकरिकै जोसुख प्रतीतहोवैहै सोसुख अविद्याकरिकैकल्पितहोणेतैं मिथ्याहींहै याप्रकारकी भावनाकरिकै सोयोगीपुरुष सर्वसुखोंविषे निःसंग होवै ॥ अर्थात् तासुखकीइच्छातैंरहितहोवैहै ॥ अथवा ॥ (निःसंगः प्रज्ञयाभवेत्) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ सविकल्प सुखाकारवृत्तिरूपजाप्रज्ञाहै तिसप्रज्ञाकेसाथि सोयोगीपुरुष संगकापरित्यागकरै ॥ और सर्ववृत्तियोंतैंरहिताचित्तकरिकै जोस्वरूपसुखकाअनुभवहोवैहै ॥ ताअनुभवकातौं सोयोगीपुरुष कदाचित्भी परित्यागकरैनही ॥ जिसकारणतै वृत्तितैंविना स्वभावतैंहीप्राप्तजो स्वरूपसुखका अनुभवहै सो निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ इसप्रकार सर्वओरतैंनिवृत्तकरिकै प्रत्ययकेवलतैं निश्चलकऱ्याजोचित्तहै सोचित्त जोकदाचित् आपणेचंचलस्वभावतैं विषयोंकीअभिमुखताकरिकै बाह्यगमनकरै ॥ तौंभी सोयोगीपुरुष निरोधकेप्रयत्नतैं तिसचित्तकूं पुनः ता समब्रह्मविषे एकताकूंप्राप्तकरै इति ॥ ४ ॥ तासमब्रह्मविषे प्राप्तहुआसोचित्तकिसप्रकारकाहोवैहै ऐसीजिज्ञासाकेहुए ताकास्वरूप कथनकरेहैं (यदानलीयतेइति) जिसकालविषे सोचित्त लयकूंभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथा स्तब्धभावरूपकषायकूंभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथा शब्दादिकविषयाकारवृत्तिरूप विक्षेपकूंभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तासमाधिकेसुखकूंभी वृत्तिकरिकैनहींआस्वादनकरेहै ॥ यद्यपि श्लोकविषे लय विक्षेप यादोनोंकाहींकथनकरयाहै ॥ कषाय सुखास्वाद यादोनोंका कथनकरयानहीं ॥ तथापि लय कषाय यहदोनोंदोष तमोगुणकेकार्यतैंहोवैहैं ॥ यातैं तामसत्वधर्मकीसमानताकूंलैकैसोलयशब्द ताकषायकाभी उपलक्षकहै ॥ इसप्रकार विक्षेप सुखास्वाद यहदोनोंदोष रजोगुणकेकार्यहैं॥ यातैं राजसत्वधर्मकीसमानताकूंलैकै सोविक्षेपशब्द तासुखास्वादकाभी उपलक्षकहै ॥ इसीसुखास्वादकूं योगशास्त्रविषे रसास्वादभीकहेहैं ॥ और पूर्वजो तिनच्यारोदोषोंकूं पृथक्पृथक् कथनकरयाथा ॥ सोतिनलयादिकदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै पृथक्पृथक् प्रयत्नकेकरणेवासतै कथनकऱ्याथा ॥ इसप्रकार लय कषाय यादोनोंदोषोंतैंरहित तथाविक्षेप सुखास्वाद यादोनोंदोषोंतैं रहित जोचित्त अनिंगनहै ॥ ईहां इंगननाम चलनकाहै ॥ जैसे वायुविषेस्थितदीपक लयकी अभिमुखतारूपइंगनवालाहोवैहै तैसे लयकीअभिमुखतारूपजोइंगनहै ॥ तिसइंगनतैंरहितजोचित्तहै सोअनिंगन कह्याजावैहै ॥ अर्थात् वायुतैंरहितदेशविषेस्थितदीपककीन्यांईजोचित्त ताचलनरूपइंगनतैंरहितहै ॥ तथा जोचित्त अनाभासहै ॥ अर्थात् जोचित्त किसीभीविषयाकारकरिकै नहीं प्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार जिसकालविषे सोचित्त लय कषाय विक्षेप सुखास्वाद याच्यारोंदोषोंतैंरहितहोवैहै॥ तिसकालविषे सोचित्त तिससमब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥५॥इसीप्रकारकायोग साक्षात् श्रुतिनैंभी कथनकरयाहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदापंचावतिष्ठंते

ज्ञानानिमनसासह ॥ बुद्धिश्चनविचेष्टते तामाहुः परमांगतिम् ॥ तांयोगमितिमन्यंते स्थिरामिंद्रियधारणाम् ॥ अप्रमत्तस्तदाभवति योगोहिप्रभवाप्ययौइति) ॥ अर्थयह ॥ जिसकालविषे मनसहित पंचज्ञानइंद्रियनिरोधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा बुद्धिभी किसीचेष्टाकूंकरतीनहीं ॥ तिस स्थिरइंद्रियोंकीधारणाकूं योगशास्त्रवेत्तापुरुष परमगतिकहेहैं तथायोगकहेहैं ॥ तिसकालविषे विनाहींप्रयत्नतैं सोचित्त ब्रह्माकारताकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ इसीमूलभूतश्रुतिकूंअंगीकारकरिकै पतंजलिभगवान्नैं (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः) यहसूत्र कथनकऱ्याहै ॥ यातैं (ततस्ततोनियम्यैतदात्मन्येववशंनयेत्) यहजोवचन श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै सो श्रुतिसूत्रकेअनु सारहोणेतैंयथार्थहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार योगाभ्यासकेबलतैं तिसयोगीपुरुषकामन प्रत्यक्आत्माविषेहीं निरोधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैं तायोगी पुरुषकूं जोफल प्राप्तहोवैहै ॥ ताकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) प्रशांतमनसंह्येनंयोगिनंसुखमुत्तमम् ॥ उपैतिशांतरजसंब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥२७॥ प्रशांतमनसं । हि । एनं । योगिनं । सुखं । उत्तमं । उपैति । शांतरजसं । ब्रह्मभूतं । अकल्मषं ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन प्रशांतहैमनजिसका तथानिवृत्त हुआहैरजोगुणजिसका तथानिवृत्तहुआहैतमोगुणजिसका तथाब्रह्मरूप ऐसेईस योगीपुरुषकूं निरतिशय सुख प्राप्तहोवैहै॥२७॥(इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ प्रशांतहुआहैमनजिसका अर्थात् सर्ववृत्तियोंतैंरहिततताकरिकै निरुद्धहुआहै संस्कारमात्रअवशेष मनजिसका ताकानाम प्रशांतमनसहै ॥ इसीकूंहीं शास्त्रविषे निर्मनस्कभी कहेहैं ॥ अब तायोगीपुरुषकी निर्मनस्कताविषे हेतुगर्भितदोविशेषण कथनकरेहैं (शांतरजसम् अकल्मषमिति) शांतहुआहै क्या निवृत्त हुआहै विक्षेपकाहेतुरजोगुण जिसका ताकानाम शांतरजसहै ॥ अर्थात् जोयोगीपुरुष विक्षेपदोषतैंरहितहै ॥ तथा नहींविद्यमानहै कल्मष क्या लयकाहेतुतमो गुण जिसविषे ताकानाम अकल्मषहै ॥ अर्थात् जोयोगीपुरुष लयदोषतैंरहितहै ॥ ईहां (शांतरजसं) इसपदकूंहीं जो तमोगुणकाउपलक्षण अंगीकारकरिये ॥ तौ (अकल्मषम्) इसपदका यहअर्थकरणा ॥ संसारकाहेतुभूतजो धर्मअधर्मादिरूपकल्मषहै ताकल्मषतैंरहितजोयोगीपुरुषहै ताकानाम अकल्मषहै ॥ तथा जो योगीपुरुष ब्रह्मभूतहै ॥ अर्थात् यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै याप्रकारकेनिश्चयकरिकै तासमब्रह्मकूंप्राप्तहुआ जोजीवन्मुक्तपुरुषहै ॥ इसप्रकारकेयोगीपुरुषकूं निरति शयसुख प्राप्तहोवैहै ॥ तहां मन तथामनकीवृत्ति यादोनोंकेअभावहुएभी सुषुप्तिविषेस्वरूपसुखकाअनुभव प्रसिद्धहींहै ॥ ताप्रसिद्धिकेबोधनकरणेवासतै मूलश्लोक विषे हि यहशब्दकथनकऱ्याहै ॥ सोयहवार्ता (सुखमात्यंतिकंयत्तत्) इसश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अब तिसयोगीपुरुषके कथनकऱ्येहुएसुखकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) युंजन्नेवंसदात्मानंयोगीविगतकल्मषः ॥ सुखेनब्रह्मसंस्पर्शमत्यंतंसुखमश्नुते ॥२८॥ युंजन् । एवं । सदा । आत्मानं । योगी । विगतकल्मषः । सुखेन । ब्रह्मसंस्पर्शम् । अत्यंतं । सुखम् । अश्नुते॥२८॥(इतिपदच्छेदः)॥हेअर्जुन इसप्रकार सर्वदा आपणे मनकूं आत्माविषेसमाहितकरताहुआ धर्मअधर्मतैंरहित सोयोगीपुरुष अनायासतैं ब्रह्मस्वरूप अपरिच्छिन्न सुखकूंहीं अनुभव करैहै ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ (मनसैवेंद्रियग्रामंविनियम्यसमंततः) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वकथनकऱ्याजोक्रमहै ॥ तिसपूर्वउक्तक्रमकरिकै जोयोगीपुरुष आपणेमनकूं सर्वदा प्रत्यक्आत्माविषे समाहितकरताहुआ स्थितहै ॥ तथा जोयोगीपुरुषविगतकल्मषहै अर्थात् संसारकीप्राप्तिकरणेहारे जेधर्मअधर्मरूपकल्मषहैं तेकल्मष निवृत्तहोगयेहैंजिसके ॥ ऐसायोगीपुरुष ईश्वरकेप्रणिधानतैं सर्वअंतरायोंकीनिवृत्तिकरिकै अनायासतैंहीं सुखकूं अनुभवकरैहै ॥ अब जन्यसुखकीव्यावृत्तिकरणेवासतै तासुखकेदोविशेषण कथनकरैहैं (ब्रह्मसंस्पर्शम्अत्यंतमिति) विषयकेस्पर्शतैंरहित ब्रह्मका तादात्म्यरूपसंस्पर्शहै जिससुखविषे ताकानाम ब्रह्मसंस्पर्शहै ॥ अर्थात् जोसुख ब्रह्मरूपहींहै ॥ तथा जोसुख अत्यंतहै ॥ ईहां देशकालवस्तुपरिच्छेदकानाम अंतहै ॥ तापरिच्छेदरूपअंतकूं जोसुख अतिक्रमणकरिकैवर्त्तैहै तासुखकानाम अत्यंतहै॥इसीअपरिच्छिन्नब्रह्मरूपसुखकूं (योवैभूमातत्सुखं) यहश्रुति प्रतिपादनकरैहै॥ऐसेनिरतिशयब्रह्मानंदकूं सोयोगीपुरुष सर्वओरतैं निर्वृत्तिक चित्तकरिकै लयविक्षेपतैंविलक्षण अनुभव करैहै ॥ तहां विक्षेपकेविद्यमानहुए वृत्ति अवश्यहोवैहै और लयकेहुए मनका स्वरूपतैंहींअसत्त्वहोवैहै ॥ यातैंतासुखके अनुभवकूं लयविक्षेपतैंविलक्षणकह्याहै और सर्ववृत्तियोंतैंरहितसूक्ष्ममनकरिकै सुखकाअनुभव केवल असंप्रज्ञातसमाधिविषेहीं होवैहै ॥ अन्यत्रहोवैनहीं ॥ ॥ ईहां (सुखेन)याशब्दकरिकै प्रतिबंधकअंतरायोंकीनिवृत्तिकथनकरी ॥ तेअंतराय योगसूत्रोंविषे पतंजलिभगवान्नैं कथनकरैहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रांतिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानिचित्तविक्षेपास्तेंऽतरायाः) अर्थयह ॥ व्याधि १ स्त्यान २ संशय ३ प्रमाद ४ आलस्य ५ अविरति ६ भ्रांतिदर्शन ७ अलब्धभूमिकत्व ८ अनवस्थितत्व ९ यहनवप्रकारकेचित्तविक्षेप अंतरायकहेजावैहैं ॥ तहां जे चित्तकूं योगतैं विक्षिप्तकरैहैं अर्थात् तायोगतैंबहिर्मुखकरैहैं ते चित्तविक्षेप कहेजावैहैं ॥ तेहींचित्तविक्षेप योगकेविरोधीहोणेतैं अंतरायकहेजावैहैं ॥ तिनोंविषेभी संशय भ्रांतिदर्शन यहदोनोंतौं तावृत्तिनिरोधरूपयोगके साक्षात्हीं विरोधीहोवैहैं ॥ और व्याधिआदिकदूसरेनिमित्ततौं सर्वदा वृत्तिकेसहचरितहोणेतैं तावृत्तिकेहींविरोधी होवैहै॥ तहां वातपित्तादिकधातुवोंकीविषमताहैनिमित्तजिनोंविषे ऐसे जेज्वरादिकविकारहैं तिनोंकानाम व्याधिहै॥ १ ॥और अकर्मण्यताकानाम स्त्यानहै अर्थात्

योगशास्त्रवेत्तापुरुषनैं सिखाएहुएभीशिष्यविषे जोआसनादिककर्मोंकी अयोग्यताहै ताकानाम स्त्यानहै ॥ २ ॥ और यहयोग हमारेकूं सिद्धकरणेयोग्यहै अथवानहीं इसप्रकारभाव अभावरूपदोकोटियोंकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ताकानाम संशयहै ॥ यद्यपि ततअभाववालेविषे ततबुद्धिरूपताविपर्ययकीन्यांई संशय विषेभीहै ॥ यातैं सोसंशय विपर्ययकेअंतर्भूतहीं होइसकेहै ॥ तथापि संशयविषेतौं दोकोटीयोंकाभानहोवैहै ॥ और विपर्ययविषे एकहींकोटीकाभानहोवैहै ॥ इतनी अवांतरविशेषताकूंअंगीकारकरिकै ईहां संशयकूंविपर्ययतैंभिन्न कथनकऱ्याहैइति ॥ ३ ॥ और समाधिकेसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेकीसामर्थ्यताकेविद्यमानहुएभी जोतिन साधनोंकाअनुष्ठाननहींकरणाहै ताकानाम प्रमादहै ॥ अर्थात् दूसरेविषयोंविषेप्रवृत्तिपणेकरिकै जोयोगसाधनोंविषेउदासीनताहै ताकानाम प्रमादहै ॥ ४ ॥ और तिसउदासीनताकेनिवृत्तहुएभी कफादिकधातुवोंकीवृद्धिकरिकैअथवा तमोगुणकीवृद्धिकरिकै जोशरीरविषे तथाचित्तविषे गुरुत्वहै ताकानाम आलस्यहै ॥ सोआलस्य व्याधिरूपकरिकैअप्रसिद्धहुआभी योगविषे प्रवृत्तिका विरोधीहीं है ॥ ५ ॥ और किसीविषयविशेषविषे जोचित्तकी निरंतर अभिलाषाहै ताकानाम अविरतिहै ॥ ६ ॥ और योगके असाधनोंविषेभी जायोगसाधनत्वबुद्धिहै तथायोगकेसाधनोंविषेभीजायोगसाधनत्वबुद्धिहै ताकानाम भ्रांतिदर्शनहै ॥ ७ ॥ और समाधिकीजाएकाग्रताभूमिकाहै ॥ ताभूमिकाका जोअलाभहै ॥ अर्थात् क्षिप्त मूढ विक्षिप्तरूपताकीजाप्राप्तिहै ताकानाम अलब्धभूमिकत्वहै ॥ ८ ॥ औरतासमाधिकीभूमिकाके प्राप्तहुएभी आपणेप्रयत्नकीशिथिलताकरिकै जोचित्तकी तिसभूमिकाविषे नहींस्थितिहै ताकानाम अनवस्थितत्वहै ॥ ९ ॥ यहनवप्रकारके चित्तविक्षेप योगमल कहेजावैहैं तथा योगप्रतिपक्ष कहेजावैहैं तथायोगअंतराय कहेजावैहैं इति ॥ किंवा इसतैंअन्य दूसरेभीविघ्नरूप अंतराय पंतजलिभगवान्नें कथनकरेहैं ॥ तहां सूत्रं ॥ (दुःखदौर्मनस्यांगमेजयत्वश्वासप्रश्वासाविक्षेपसहभुवः ॥) अर्थयह ॥ दुःख १ दौर्मनस्य २ अंगमेजयत्व ३ श्वास ४ प्रश्वास ५ यहपंचअंतराय समाहितचित्तकूंहोवैंनहीं ॥ किंतु विक्षिप्तचित्तकूंहीं होवैहैं ॥ यातैं यहपांचो विक्षेपसहभुवःअंतराय कहेजावैहैं ॥ तहां चित्तका बाधनारूप जोराजसपरिणामहै ताकानाम दुःखहै ॥ सोदुःखआध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ज्वरादिकव्याधियोंकरिकैउत्पन्नभयाजोशारीर दुःखहै तथा कामक्रोधादिकआधियोंकरिकै उत्पन्नभयाजोमानसदुःखहै तेदोनोंप्रकारकेदुःख आध्यात्मिकदुःख कहेजावैहै ॥ और व्याघ्र सर्प चौर आदिकोंकरिकैजन्यजोदुःखहै सोदुःख आधिभौतिकदुःख कह्याजावैहै ॥ और ग्रहपीडादिकोंकरिकैजन्यजोदुःखहै सो आधिदैविकदुःख कह्याजावैहै ॥ सोयहत्रिविधदुःख द्वेषरूप विपर्ययकाहेतुहोणेतैं समाधिकाविरोधीहींहै ॥ १ ॥ औरइच्छाविघातादिक बलवान्दुःखकेअनुभवकरिकैजन्य जोचित्तका तामसपरिणाम विशेषहै ताकूं क्षोभकहेहैं तथास्तब्धीभावभीकहेहैंताकानाम दौर्मनस्यहै ॥ सोदौर्मनस्यकषायरूपहोणेतैं लयकीन्यांई समाधिकाविरोधीहींहै ॥ २ ॥ और हस्तपादादिकअंगोकाजोकंपनहै ॥ ताकूं अंगमेजयत्व

कहेहैं ॥ सोअंगमेजयत्व आसनकेस्थिरताकाविरोधीहोवैहै ॥ ३ ॥ और प्राणकरिकै बाह्यवायुकाजोअंतरप्रवेशहै ताकानाम श्वासहै ॥ सोश्वास समाधिकेअं गभूत रेचककाविरोधीहोवैहै ॥४॥ और प्राणकरिकै भीतरलेवायुका जोबाह्यनिकासणाहै ताकानाम प्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वास समाधिकेअंगभूतपूरकका विरोधीहोवैहै इति ॥ ५ ॥ यहपूर्वउक्तदोसूत्रोंकरिकै कथनकरेजेचतुर्दशअंतरायहैं तेविघ्नरूपअंतराय अभ्यासवैराग्यकरिकै निवृत्तहोवैहैं ॥ अथवाईश्वरप्रणिधानकरिकै निवृ त्तहोवैहैं ॥ तहां योगसूत्रोंविषे पतंजलिभगवान् (तीव्रसंवेगानामासन्नः) इससूत्रविषे तीव्रवैराग्यवान्पुरुषोंकूं अत्यंतसमीप असंप्रज्ञातसमाधिकालाभकथनक रिकै (ईश्वरप्रणिधानाद्वा) इससूत्रविषे पक्षांतरकूंकहिकै तिसप्रणिधेयईश्वरकेस्वरूपकूं (क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टःपुरुषविशेषईश्वरः । तत्रनिरतिशयंसर्व ज्ञबीजम् । सपूर्वेषामपिगुरुःकालेनानवच्छेदात्) इनतीनसूत्रोंतैंप्रतिपादनकरिकै ताईश्वरकेप्रणिधानकूं (तस्यवाचकः प्रणवः । तज्जपस्तदर्थभावनम्) यादों सूत्रोंकरिकै कथनकरताभयाहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपतंजलिभगवान् (ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च) यहसूत्र कथनकरताभयाहै ॥ अब ॥ (ईश्वरप्रणिधानाद्वा ॥ १ ॥ क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषईश्वरः ॥ २ ॥ तत्रनिरतिशयंसर्वज्ञबीजम् ॥ ३ ॥ सपूर्वेषामपिगु रुः कालेनानवच्छेदात् ॥ ४ ॥ तस्यवाचकः प्रणवः ॥ ५ ॥ तज्जपस्तदर्थभावनम् ॥ ६ ॥ ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च ॥ ७ ॥) ॥ इनसप्तसूत्रोंका यथाक्रमतैंअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ ईश्वरविषे जो कायिक वाचिक मानस यहतीनप्रकारकीभक्तिविशेषहै ताकानाम ईश्वरप्रणिधानहै ॥ तिसई श्वरप्रणिधानतैं इसयोगीपुरुषकूं अत्यंतसमीप असंप्रज्ञातसमाधिकालाभहोवैहै ॥ तहांसूत्रकेअंतविषेस्थितजो वा यहशब्दहै सोवाशब्द पूर्वउक्त तीव्रवैराग्यरूपउपाय केसाथि इसईश्वरप्रणिधानरूपउपायका विकल्पबोधनकरणेवासतैहैं ॥ अर्थात् जैसे तीव्रवैराग्यतैं तासमाधिकालाभहोवैहै ॥ तैसे ईश्वरप्रणिधानतैंभी तासमाधिका लाभहोवैहै ॥ जिसकारणतैं ताभक्तिकरिकैप्रसन्नहुआ ईश्वर यहइष्टवस्तु इसभक्तजनकूंप्राप्तहोवो याप्रकारकाअनुग्रह अवश्यकरिकैकरेहै इति ॥ १ ॥ अब जिसईश्वरकेप्रणिधानतैं अंतरायकीनिवृत्ति पूर्वक तासमाधिकालाभहोवैहै ॥ ताईश्वरकेस्वरूपकूं तीनसूत्रोंकरिकैवर्णनकरेहैं ॥ क्लेश कर्म विपाक आशय याच्या रोंकरिकै तीनकालविषे असंबद्ध जोपुरुषविशेषहै ताकानाम ईश्वरहै ॥ तहां अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापांचोंकानाम क्लेशहै इनक्लेशोंकास्वरूप पूर्वपंचमअध्यायविषेनिरूपणकरिआयेहैं ॥ और विहितप्रतिषिद्धक्रियातैंजन्य जोधर्मअधर्महै ताकानाम कर्महै ॥ और ताधर्मअधर्मकाजोफलहै ताकानाम विपा कहै ॥ और ताफलभोगकेअनुकूल जेसंस्कारहैं तिनोंकानाम आशयहै जैसे इसपुरुषकूं जबी पापकर्मकेवशतैं उष्ट्रकाजन्महोवैहै ॥ तबी वह कंटकभक्षणकरणे केसंस्कार उद्भवहोवैहैं ॥ इसप्रकार यहजीव जिसजिसजातिवालेशरीरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसतिसजातिवालेशरीरकेभोगोंविषे जो प्रवृत्त होवैहै सोपूर्वले संस्कारोंकेवश

तैंहींप्रवृत्तहोवैहै ॥ तिनसंस्कारोंकेउद्भवतैंविना तिसतिसशरीरकाजीवनहीं संभवैनहीं ॥ ऐसेचित्तविषेस्थितक्लेशादिकोंकरिकै यहसंसारीपुरुषहीं संबद्धहोवैहै ॥ तेक्लेशादिक तीनकालविषे जिसमैंहैनहीं ॥ ऐसापुरुषविशेष ईश्वरकह्याजावैहै ॥ ईहां सूत्रविषेस्थितजो विशेषयहशब्दहै ॥ सो तीनकालविषेअसंबंधरूपअर्थ कावाचकहै ॥ ऐसेविशेषपदकरिकै ताईश्वरविषैं मुक्तपुरुषोंतैंभीव्यावृत्तिकथनकरी ॥ तिनमुक्तपुरुषोंविषे यद्यपि तिसकालविषे सोक्लेशादिरूपबंधनहींहै ॥ तथापि तत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्वकालविषे सोबंध तिनमुक्त पुरुषोंविषेभी विद्यमानथा ॥ यातैं तीनकालविषे तिनक्लेशादिकोंकेसंबंधकाअभाव तिनमुक्तपुरुषोंविषे संभवतानहीं ॥ किंतु (यःसर्वज्ञःसर्ववित्) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकैप्रतिपादित जोसर्वज्ञईश्वरहै ताईश्वरविषेहीं सोसंभवैहै इति ॥ २ ॥ अब ताईश्वरकीसर्वज्ञताविषे अनुमानप्रमाणका कथनकरैहैं ॥ तहां अस्मदादिकजीवोंकाजो ज्ञानहै सोज्ञान सातिशयहोणेतैं निरतिशयज्ञानकरिकैव्याप्तहै ॥ जोजोपदार्थ सातिशयहोवैहै सोसोपदार्थ आपणेसमानजातीय निरतिशयपदार्थकरिकैव्याप्तहींहोवैहै जैसे घटकापरिमाण सातिशयहै यातैं परिमाणत्वरूपतैंआपणेसमानजातीय विभुपरिमाणकरिकैव्याप्तहै ॥ ऐसानिरतिशयज्ञान केवल ईश्वरविषेहींरहैहै ॥ अन्यकिसीविषेरहैनहीं ॥ और सोनिरतिशयज्ञानहीं सर्वज्ञताका ज्ञापकहोवैहै ॥ अर्थात् जहां निरतिशयज्ञानहोवैहै ॥ तहां सर्वज्ञताहींजानिजावैहैं ॥ यातैं निरातिशयज्ञानवालाहोणेतैं सोईश्वर सर्वज्ञहै इति ॥ ३ ॥ अब ताईश्वरविषेब्रह्मादिकदेवतावोंतैं विशेषता कथनकरैहैं सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नभयेयेब्रह्मादिकदेवताहैं तेसर्व कालपरिच्छेदवालेहैं ॥ ऐसेकालपरिच्छिन्नब्रह्मादिकोंकाभी सोईश्वर गुरुरूपहै काहेतैं सोईश्वर कालकरिकै अपरिच्छिन्नहै ॥ अर्थात् आदिअंततैंरहितहै ॥ तहां श्रुति ॥ (योब्रह्माणंविदधातिपूर्वंयोवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै ॥) अर्थयह ॥ जोईश्वरसृष्टिकेआदिकालविषे हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तथा जोईश्वर तिसब्रह्माकेताईं सर्ववेद देताभया इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंतैं तिसईश्वरविषे ब्रह्मादिकोंकागुरुपणा सिद्धहोवैहै इति ॥ ४ ॥ तहांपूर्वतीनसूत्रोंकरिकैकथनकऱ्याजोईश्वर ताईश्वरकेप्रणिधानकूं अब दोसूत्रोंकरिकै कथनकरैहैं ॥ तिन पूर्वउक्तईश्वरकावाचक ॐकाररूपप्रणवहैइति ॥ ५ ॥ तिसईश्वरकेवाचकप्रणवकाजो निरंतरजपहै तथाताप्रणवकेअर्थरूपईश्वरकाजोध्यानहै ताकानाम ईश्वरप्रणिधानहै इति ॥ ६ ॥ और तिसप्रणवकेजपरूप तथाताप्रणवकेअर्थकाध्यानरूप ईश्वरप्रणिधानतैं तिसयोगीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनआत्माका साक्षात्कारहोवैहै ॥ तथा पूर्व (व्याधिस्त्यान) इत्यादिकदोसूत्रोंकरिकैकथनकरचेहुए चतुर्दशविघ्नरूपअंतरायोंकाभी अभावहोवैहै इति ॥ ७ ॥ जैसे ताईश्वरप्रणिधानतैं तिनअंतरायोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे अभ्यासवैराग्यकरिकैभी तिनअंतरायोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहां अभ्यासवैराग्यकरिकै तिनअंतरायोंकीनिवृत्तिकरणेविषे ताअभ्यासकीदृढताकरणेवासतै पतंजलिभगवान्नैं यहदोसूत्र कथनकरैहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः ॥ १ ॥ मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां

सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणांभावनातश्चित्तप्रसादनम् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ पूर्वकथनकऱ्येहुए विघ्नरूपअंतरायोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोयोगी पुरुष किसी एकइष्टतत्त्वविषे चित्तका पुनःपुनःनिवेशरूप अभ्यासकूंकरै इति ॥ १ ॥ ईहां सुहृदताकानाम मैत्रीहै ॥ और कृपाकानाम करुणाहै ॥ और हर्षकानाम मुदिताहै ॥ और उदासीनताकानाम उपेक्षाहै ॥ और सुख दुःख पुण्य अपुण्य यह च्यारिशब्द यथाक्रमतैं सुखवालेका तथादुःखवालेका तथापुण्यवालेका तथाअपुण्यवालेका वाचकहैं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ सुखभोगकरिकैसंपन्नजेप्राणीहैं तिनसर्वप्राणियोंविषे इनहमारेमित्रोंकूं जोयहसुख प्राप्तभयाहै सोसर्वदाबनारहै याप्रकारकीमैत्रीकूं सोअधिकारीपुरुषकरै ॥ तिनसुखीपुरुषोंकूंदेखिकै यहसुख इनोंकूंक्यूंप्राप्तभयाहैं याप्रकारकीईर्षाकूं सो अधिकारीपुरुष करैनहीं ॥ और इसलोकाविषेजेदुःखीप्राणीहैं ॥ तिनदुःखीप्राणियोंविषे सोअधिकारीपुरुष किसीप्रकारकारकै इनोंकेदुःखकीनिवृत्तिहोवैतौंश्रेष्ठहै याप्रकारकी कृपाकूंहींकरै ॥ तिनदुःखीप्राणियोंविषे उपेक्षाबुद्धिकरैनहीं तथाईर्षाकूंभी करैनहीं ॥ और जेपुरुष पुण्यवान्हैं तिनपुण्यवानोंविषेतौं तिनोंकेपुण्यकीस्तुतिकथनपूर्वकहर्षकूंहींकरै ॥ तिनपुण्यवानोंविषे द्वेषकूंभी नहींकरै तथा उपेक्षाकूंभी नहींकरै ॥ और जेपापात्मादुष्टपुरुषहैं तिनोंविषेतौं उदासीनतारूपउपेक्षा कूंहींकरै ॥ तिनपापियोंविषे हर्षकूं तथा द्वेषकूंकरैनहीं ॥ इसप्रकार मैत्री करुणा मुदिताउपेक्षा याच्यारोंकेसेवनकरणेहारेपुरुषविषे एकशुक्लधर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसधर्मविशेषकेप्रभावतैं रागद्वेषादिकमलतैंरहितचित्त प्रसन्नहुआ एकाग्रताकेयोग्यहोवैहै इति ॥ २ ॥ ईहां मैत्रीआदिकच्यारिधर्म दूसरे दैवीसंपत्रूपधर्मों केभी उपलक्षणहैं ॥ तेदूसरेधर्म (अभयंसत्वसंशुद्धिः) इत्यादिकवचनकरिकै तथा (अमानित्वमदंभित्वम्) इत्यादिकवचनकरिकै श्रीभगवान् आपहीं आगेकथन करैंगा ॥ तेसर्वधर्म शुभवासनारूपहोणेतैं मलिनवासनाकेनिवर्त्तकहीं हैं ॥ यातैं सर्वपुरुषार्थकेप्रतिबंधकहोणेतैं परमशत्रुरूप जेरागद्वेषादिकहैं ॥ तेरागद्वेषादिक इसअधिकारीपुरुषनैंमहान्प्रयत्नकरिकैभी निवृत्तकरणे ॥ और पतंजलिभगवान्नैं योगशास्त्रविषे इसचित्तकेप्रसादनवासतै जैसे मैत्रीकरुणादिकउपाय कथनकरेहै ॥ तैसे प्राणायामादिक दूसरेउपायभी कथनकरेहैं ॥ सो ऐसा चित्तकाप्रसादन भगवत्केअनुग्रहकारकै जिसपुरुषकूं उत्पन्नभयाहै ॥ तिसी भगवत्अनुगृहीत पुरुषकेप्रतिहीं (सुखेन) यहवचन भगवान्नैंकथनकऱ्याहै ॥ ताभगवत्अनुग्रहणतैंविना इसमनकानिग्रह होइसकतानहीं इति ॥ २८ ॥ ❁ ॥ इसप्रकार निरोधसमाधिकरिकै त्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूप तथातत्पदकेलक्ष्यअर्थरूप शुद्धचेतनकेसाक्षात्कारहुएतैं अनंतर तालक्ष्यचेतनकेएकताकूंविषयकरणेहारी तथातत्त्वमसि इत्यादिकवेदांतवाक्यकरिकैजन्य निर्विकल्पकसाक्षात्काररूप अंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसवृत्तिकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्मविद्या इसनामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तिसतत्त्वसाक्षात्काररूपब्रह्मविद्यातैंसर्वअविद्याकी तथाताकेकार्यप्रपंचकी निवृत्तिकरिकै यह

अधिकारीपुरुष अपरिच्छिन्न ब्रह्मरूपसुखकूं अनुभवकरेहै ॥ इससर्वअर्थकूं अब तीन श्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् प्रतिपादनकरेहै तहां इसप्रथमश्लोककरिकै प्रथम त्वंपदकेलक्ष्यअर्थका निरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) सर्वभूतस्थमात्मानंसर्वभूतानिचात्मनि ॥ ईक्षतेयोगयुक्तात्मासर्वत्रसमदर्शनः ॥ २९ ॥ सर्वभूतस्थम् । आत्मानं । सर्वभूतानि । च । आत्मनि । ईक्षते । योगयुक्तात्मा । सर्वत्र । समदर्शनः ॥ २९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन योगयुक्तआत्मा सर्वप्रपंचाविषे समबुद्धिवालाहुआ सर्वभूतोंविषेस्थित आत्माकूं तथा आत्माविषे सर्वभूतोकूं देखेहै ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ स्थावरजंगमशरीररूप जितनैंकीभूतहैं तिनसर्वभूतोंविषे भोक्तारूपकरिकैस्थितहुआजो एकअद्वितीय विभु सच्चिदानंदरूप प्रत्यक्साक्षीआत्माहै ॥ तिसप्रत्यक्साक्षिआत्माकूं अनृतजडपरिच्छिन्नदुःखरूपसाक्ष्यपदार्थोंतैं पृथक्करिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ तथा तिसप्रत्यक्साक्षीआत्माविषे आध्यासिकसंबंधकरिकैस्थित जे मिथ्याभूत परिच्छिन्न जड दुःखरूप सर्वभूतहैं ॥ तिनसाक्ष्यरूपसर्वभूतोंकूं तिसप्रत्यक्साक्षीआत्माविषे कल्पितरूपकरिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ कौन पुरुष तिनोंकूं साक्षात्कारकरेहै ऐसीजिज्ञासाकेहुए कहेहैं (योगयुक्तात्मासर्वत्रसमदर्शनः इति) तहां वस्तुकेविचारकीपरमकुशलतारूपयोगकरिकै युक्तहुआहै क्याप्रसादकूंप्राप्तहुआहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम योगयुक्तात्माहै ॥ तथा तायोगजन्य ऋतंभरनामाप्रत्यक्षकरिकै एकहींकालविषे सर्व सूक्ष्म वस्तुवोंकूं तथाव्यवहितवस्तुवोंकूं ॥ तथाविप्रकृष्टवस्तुवोंकूं तुल्यहींदेखेहै ॥ इसप्रकारतैं सर्ववस्तुवोंविषे समानहैदर्शनजिसकूं ताकानाम समदर्शनहै ॥ ऐसासमदर्शनहुआ सोयोगयुक्तआत्मा प्रत्यक्आत्माकूं तथाताकेविषेकल्पित अनात्मप्रपंचकूं पूर्वउक्तरीतिसैं यथावत् जानेहै यहवार्त्तायुक्तहै इति ॥ अथवा इसश्लोकका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जोपुरुष योगयुक्तात्माहै ॥ तथा जोपुरुष सर्वत्रसमदर्शनहै ॥ सोपुरुषहीं इसप्रत्यक्साक्षीआत्माकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै योगीपुरुष तथासमदर्शीपुरुष दोनोंहीं आत्मसाक्षात्कारकेअधिकारी कथनकरे ॥ तात्पर्ययह जैसे चित्तकीवृत्तिकानिरोधरूपयोग साक्षी आत्माकेसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ तैसे जडप्रपंचकाविवेककरिकै सर्वत्रअनुस्यूतचैतन्यआत्माका ताजडप्रपंचतैंपृथक्करणारूपविचारभी तासाक्षीआत्माके साक्षात्कारकाहेतुहै ॥ ताआत्मासाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे केवल योगहीं अवश्यअपेक्षितनहींहै ॥ इसी अभिप्रायकूंलैकै श्रीवसिष्ठभगवाननैं रामचंद्रकेप्रतियहवचनकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (द्वौक्रमौचित्तनाशस्ययोगोज्ञानंचराघव ॥ योगोवृत्तिनिरोधोहिज्ञानंसम्यगवेक्षणम् ॥ १ ॥ असाध्यःकस्यचिद्योगः कस्यचित्तत्त्वनिश्चयः ॥ प्रकारौद्वौततोदेवोजगादपरमःशिवः ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ हेरामचंद्र साक्षीआत्माकाउपाधिभूतजोचित्तहै ताचित्तकूं तिससा

क्षिआत्मातैंपृथक्करिकै जोतिससाक्षिआत्माकादर्शनहै यहहीं तिसचित्तकानाशहै ॥ ऐसे चित्तनाशके दोउपायहैं एकतौं योगउपायहै ॥ दूसरा ज्ञान उपायहै ॥ तहां सर्व वृत्तियोंकानिरोधरूप जोअसंप्रज्ञातसमाधिहै ताकानाम योगहै ॥ ताअसंप्रज्ञातसमाधिकीप्राप्ति संप्रज्ञातसमाधितैंहोवैहै ॥ तहां संप्रज्ञातसमाधिविषेतौं एकआत्माकारवृत्तियोंकेप्रवाहयुक्त अंतःकरणसत्त्व साक्षिचैतन्यनैं अनुभवकरीताहै ॥ और असंप्रज्ञातसमाधिविषेतौं सर्ववृत्तियोंकेनिरो धयुक्त सोअंतःकरणसत्त्व उपशांतहोणेतैं तासाक्षीचैतन्यनैं अनुभवकरीतानहीं ॥ इतनीहीं तिनदोनोंसमाधियोंविषे विशेषताहै इति ॥ और साक्षीआत्माविषेक ल्पित यहसाक्ष्यप्रपंच मिथ्याहोणेतैं तीनकालविषेनहींहै एकसाक्षीआत्माहींहै परमार्थसत्यहै याप्रकारकेसम्यक्विचारकानाम ज्ञानहै ॥ १ ॥ तहां किसी अ धिकारीपुरुषकूंतौं सोयोग कठनपडैहै विचार सुगमपडैहै ॥ और किसीअधिकारीपुरुषकूंतौं सोयोग सुगमपडैहै विचार कठनपडैहै ॥ इसीकारणतैं परमात्मादे वशिव तिनदोप्रकारोंकूं कथनकरता भयाहै इति ॥ २ ॥ तहां इनदोनोंउपायोंविषे प्रथमयोगरूपउपायकूंतौं प्रपंचकूंपरमार्थसत्यमानणेहारे हैरण्यगर्भादिकपुरुष अंगी कारकरेहैं ॥ तिनोंकेमतविषे परमार्थसत्यचित्तकेअदर्शनकरिकै साक्षीआत्माकेदर्शनविषे चित्तनिरोधतैंअतिरिक्त दूसराकोईउपायहैनहीं ॥ किंतु केवल सो चित्तकानिरोधहीं तासाक्षीआत्माकेदर्शनका उपायहै इति ॥ और श्रीमत्शंकराचार्यकेमतकूंअनुसरणकरणेहारे जे प्रपंचकूंमिथ्यामानणेहारे औपनिषदपुरुषहैं ॥ तेऔपनिषदपुरुषतौं दूसरेविचाररूपउपायकूंहीं अंगीकारकरेहैं ॥ तिन औपनिषदपुरुषोंकूंतौं अधिष्ठानचेतनकेदृढसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर तिसअधिष्ठानविषेक ल्पितचित्तका तथादृश्यप्रपंचका अदर्शन अनायासतैंहीं संभवहोइसकेहै ॥ ताप्रपंचकेअदर्शनविषे तिनोंकूं योगकीअपेक्षारहैनहीं ॥ इसीकारणतैं श्रीमत्शंकरा चार्यनै किसीभीस्थलविषेब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं तायोगकीअपेक्षा प्रतिपादनकरीनहीं ॥ इसीकारणतैं तेऔपनिषद परमहंससंन्यासी ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै ब्रह्म वेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंके श्रवणमननरूपविचारविषेहीं प्रवृत्तहोवैहै ॥ योगविषे प्रवृत्तहोतेनहीं ॥ काहेतैं तिसयोगकरिकै जेचित्तकेकामक्रोधादि कदोष निवृत्तकऱ्येजावैहैं ॥ तेचित्तकेदोष जोकदाचित् तायोगतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै नहींनिवृत्तहोते ॥ तौं सोयोगहीं अवश्यअपेक्षितहोता ॥ परंतु तेचित्तकेदोषतौं विचारकरिकैभी निवृत्तहोइसकेहै ॥ यातैं तिनऔपनिषदपुरुषोंकूं ताब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै सोयोग अवश्यअपेक्षितनहींहै ॥ किंतु सो वेदांतवाक्योंकाविचारहीं अवश्यअपेक्षितहै ॥ इसीकारणतैं तैत्तिरीयउपनिषदविषे वरुणऋषि भृगुपुत्रकेप्रति वारंवार विचाररूपतपकाहीं विधानकरताभयाहै इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे शुद्धत्वंपदार्थका निरूपणकऱ्या अब इसश्लोकविषे शुद्धतत्पदार्थका निरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) योमांपश्यतिसर्वत्रसर्वंचमयिपश्यति ॥ तस्याहंनप्रणश्यामिसचमेनप्रणश्यति ॥ ३० ॥ यः। मां। पश्यति। सर्वत्र।

सर्वं । च । मयि पश्यति । तस्य । अहं । न । प्रणश्यामि । सः । च । मे । न । प्रणश्याति ॥ ३० ॥ (इतिपद०) हेअर्जुन जोयोगीपुरुष सर्वप्रपंचविषे मैंपरमेश्वरकूं देखेहै तथा तिससर्वप्रपंचकूं मैंपरमेश्वरविषे देखेहै तिसयोगीपुरुषकूं मैंपरमेश्वर नहीं परोक्षहोवोंहूं तथा सोयोगीपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभी नहीं परोक्षहोवैहै ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तत्त्वमसि इसवाक्यविषेस्थिततत्पदकाअर्थरूप जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ कैसाहूंसोमैं ॥ मायाउपाधिवालाहुआ सर्वप्रपंचकाकारणरूपहूं ॥ तथा वास्तवतैंसर्वउपाधियोंतैंरहितहूं ॥ तथा परमार्थसत्य आनंदघनहूं ॥ तथा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहोणेतैं अनंतरूपहूं ॥ तथा सर्वप्रपंचविषे सत्तास्फुरण रूपकरिकैअनुस्यूतहूं ॥ ऐसेपरमेश्वरकूं जोयोगीपुरुष सर्वप्रपंचविषे व्यापकदेखेहै ॥ अर्थात् योगजन्यप्रत्यक्षज्ञानकरिकै मैंपरमेश्वरकूं अपरोक्षकरेहै ॥ तथा जोयोगीपुरुष इससर्वप्रपंचकूं मैंपरमेश्वरविषेदेखेहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरविषे मायाकरिकैआरोपित जोयहसर्वप्रपंचहै तिसप्रपंचकूं मैंअधिष्ठानपरमेश्वरतैंपृथक् मिथ्यारूपकरिकैहींदेखेहै ॥ इसप्रकार मैंपरमेश्वरकेस्वरूपकूं तथाप्रपंचकेस्वरूपकूं यथार्थजानणेहारा जोयोगीपुरुषहै ॥ तिसयोगीपुरुषकूं मैंतत्पदार्थरूप परमेश्वर कदाचित्भी परोक्षहोतानहीं ॥ अर्थात् सोईश्वर हमारेतैंभिन्नहै याप्रकारतैं तायोगीपुरुषकेपरोक्षज्ञानकाविषय मैंपरमेश्वर होतानहीं ॥ किंतु तिसयोगी पुरुषके योगजन्यअपरोक्षज्ञानकाविषयहीं मैंपरमेश्वर होताहूं ॥ यद्यपि तत्पदार्थईश्वरविषे जोवाक्यजन्यअपरोक्षज्ञानकीविषयताहै सा त्वंपदार्थजीवकेसाथि अभेदरूपकरिकैहींहै ॥ केवल ईश्वरविषे वाक्यजन्य अपरोक्षज्ञानकीविषयता संभवतीनहीं ॥ तथापि योगजन्यअपरोक्षज्ञानकीविषयता केवलईश्वरविषेभी संभवहोइसकैहै ॥ इसप्रकार योगजन्यप्रत्यक्षज्ञानकरिकै मैंपरमेश्वरकूं अपरोक्षकरताहुआ सोयोगीपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभी परोक्षहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोविद्वान् पुरुष मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहींहै ॥ तथा अत्यंतप्रियहै ॥ यहसर्ववार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेभीस्पष्टहोवैगी ॥ और आपणाआत्माकिसीकूंभी परोक्षहोतानहीं किंतु सर्वकूंअपरोक्षहींहोवैहै ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष सर्वदा हमारेअपरोक्षज्ञानकाहींविषयहोवैहै ॥ यहसर्ववार्त्ता (येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम्) इसगीतावचनतैंहींसिद्धहै और यहवार्त्ता महाभारतविषे युधिष्ठिरकेप्रति भगवान्नैंभी कथनकरीहै (अविद्वांस्तुस्वात्मानमपिसंतंभगवंतंनपश्यति अतोभगवान्पश्यन्नपितंनपश्यति इति) ॥ अर्थयह ॥ हेयुधिष्ठिर आत्मज्ञानतैंरहितजोअविद्वान्पुरुषहै ॥ सोअविद्वान्पुरुषतौं ॥ आपणा आत्मारूपकरिकै विद्यमानहुएभीपरमेश्वरकूं देखतानहीं ॥ इसकारणतैं सोपरमेश्वरभी आपणेसर्वज्ञस्वभावतैं सर्वप्रपंचकूंदेखताहुआभी ताअविद्वान्पुरुषकूं देखतानहीं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सएनमविदितोनभुनक्ति) ॥ अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेव यद्यपि इसजीवकाआत्मारूप

हींहै ॥ तथापि अज्ञातहुआसोपरमात्मादेव इसजीवकूं जन्ममरणरूपसंसारतैंरक्षणकरतानहीं ॥ जैसे गृहविषेस्थितहुईभीनिधि अज्ञातहुई इसगृहीपुरुषकेदरिद्रताकूं निवृत्तकरिसकैनहीं इति ॥ और विद्वान्पुरुषतौ सर्वदा अत्यंतसमीप भगवान्केअनुग्रहका पात्रहै इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै शुद्धत्वं पदार्थका तथाशुद्धतत्पदार्थका निरूपणकऱ्या ॥ अब इसश्लोकविषे तिन शुद्धतत्त्वंपदार्थोंका अभेदरूप तत्त्वमसिवाक्यकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) सर्वभूतस्थितंयोमांभजत्येकत्वमास्थितः ॥ सर्वथावर्त्तमानोपिसयोगीमयिवर्त्तते ॥ ३१ ॥ सर्वभूतस्थितं । यः । मां । भजति । एकत्वम् । आस्थितः ॥ सर्वथा । वर्त्तमानः । अपि । सः । योगी । मयि । वर्त्तते ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) । हेअर्जुन जोयोगी पुरुष सर्व भूतोंविषेस्थित मैंतत्पदार्थकूं आपणेत्वंपदार्थकेसाथि अभेदकूं निश्चयकरताहूआ अपरोक्षकरे है सो योगीपुरुष जिसकिस प्रकारतैं व्यवहारकरताहूआ भी मैंपरमात्माविषेहींअभेदरूपकरिकै वर्त्तेहै ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वभूतोंविषेअधिष्ठानरूपकरिकैस्थित तथासर्वप्रपंचविषे सत्तास्फुरणरूपकरिकैअनुस्यूत जोसत्तामात्र तत्पदकालक्ष्यअर्थरूप मैंईश्वरहूं तिस मैंईश्वरका आपणेत्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूप प्रत्यक्साक्षीकेसाथि अभेदनिश्चयकरताहुआ ॥ अर्थात् जैसे घटरूपउपाधिकेपरित्यागकीयेहुए घटाकाश महाकाशरूप हींहै ॥ तैसे अविद्याअंतःकरणादिकउपाधियोंकापरित्यागकरिकै मैंपरमेश्वरका आपणेआत्माकेसाथि अभेदनिश्चयकरताहुआ ॥ जोअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकूं भजेहै ॥ अर्थात् अहंब्रह्मास्मि इसवेदांतवाक्यकरिकैजन्य साक्षात्कारकरिकै जोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं अपरोक्षकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष कार्यसहितअविद्याकी निवृत्तिकरिकै जीवन्मुक्तहुआ कृतकृत्यहींहोवैहै ॥ तिसजीवन्मुक्तपुरुषकूं बाधितानुवृत्तिकरिकै जितनैंकालपर्यंत शरीरादिकोंकादर्शन विद्यमानहै ॥ तितनैंकालप र्यंत विलक्षणप्रारब्धकर्मकीप्रबलतातैं सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष याज्ञवल्क्यादिकोंकीन्यांई सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै वर्त्तमानहुआ अथवा वसिष्ठजनकादिकोंकी न्यांई अग्निहोत्रादिकविहितकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै वर्त्तमानहुआ अथवा दत्तात्रेयादिकोंकीन्यांई प्रतिषिद्धकर्मोंकरिकै वर्त्तमानहुआ जिसकिसीरूपकरिकै व्यवहा रकूंकरताहुआ सोब्रह्म वेत्तायोगीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार जानताहुआ मैंपरमात्माविषेहीं अभेदरूपकरिकैवर्तेहै ॥ तिसमेरेपरमानंदस्वरूपतैं सोविद्वान्पुरुष कदाचि त्भी प्रच्युतहोवैनहीं अर्थात् तिसविद्वान्पुरुषकूं सर्वप्रकारतैंमोक्षकेप्रतिबंधककीशंकाहैनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यहनदेवाश्च नाभूत्याईशतआत्माह्येषांसभवति) ॥ अर्थयह ॥ महान्प्रभाववालेजेइंद्रादिकदेवताहैं तेइंद्रादिकदेवताभी तिसविद्वानपुरुषकेमोक्षविषे प्रतिबंधकरणेमैं समर्थनहींहै ॥ जिसकारणतैं सोविद्वान्पुरुष तिनदेवतावोंका आत्मारूपहींहै ॥ औरआपणेआत्माकी कोईभीहानि करतानहीं ॥ जवी इंद्रादिकदेवताभी प्रतिबंधकरणेकूंस

मर्थनहींभये ॥ तबी अन्यक्षुद्रजीव ताकाप्रतिबंधनहींकरेहैं याकेविषे क्याकहणाहैइति ॥ यद्यपि निषिद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तकरणेहारे जेरागद्वेषहैं तेरागद्वेष तिसब्रह्म वेत्तापुरुषविषेहैनहीं॥यातैं तिसविद्वान्पुरुषको निषिद्धकर्मोंविषे प्रवृत्तिसंभवतीनहीं ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तापुरुषकी निषिद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तिकूंअंगीकारकरिकै आत्मज्ञान कीस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (सर्वथावर्त्तमानोपि) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ जैसेपूर्व (हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते) यहवचन ज्ञानकीस्तुतिवास ते कथनकऱ्याथा ॥ तैसे (सर्वथावर्त्तमानोपि) यहवचनभी ज्ञानकीस्तुतिवासतैहींहै ॥ और दत्तात्रेयभगवान्कीजोनिषिद्धकर्मविषेप्रवृत्तिहुईहै ॥ सोकोई रागद्वेष तैंनहीं हुई ॥ किंतु बहिर्मुखलोकोंकेसहवासकीनिवृत्तिकरणेवासतै साप्रवृत्तिहुईहै ॥ यहसर्ववार्त्ता आत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे हम विस्तारतैंनि रूपणकरिआयेहैं इति ॥ ३१ ॥ ❀ इसप्रकारब्रह्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुएभी कोईकविद्वान्पुरुष मनोनाश वासनाक्षय यादोनोंकेअभावतैं जीवन्मुक्तिकेसुखकूं अनुभवकरतानहीं ॥ तथा चित्तकेविक्षेपकरिकै दृष्टदुःखकूंअनुभवकरेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष अपरमयोगी कह्याजावैहै ॥ जिसकार णतैं सोविद्वान्पुरुष इसदेहकेपाततैंअंनतरतौं विदेहकैवल्यकूं अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ और इसशरीरकेविद्यमानकालपर्यंततौं विक्षेपकरिकै दृष्टदुःख काअनुभवकरेहै ॥ तिसकारणतैं सोविद्वान् अपरमयोगी कह्याजावैहै ॥ और जोविद्वान्पुरुष तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका एककालविषेअभ्यासतैं दृष्टदुःखकीनिवृत्तिपूर्वक जीवन्मुक्तिकेसुखकूंअनुभवकरताहुआ प्रारब्धकर्मकेवशतैं समाधितैंव्युत्थानकालविषे सर्वप्राणियोंकूं आपणेआत्माकेतुल्यदेखेहै ॥ सोईहीं विद्वान्पुरुष परमयोगी कह्याजावैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०)आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोऽर्जुन ॥ सुखंवायदिवादुःखंसयोगीपरमोमतः ॥ ३२ ॥ आत्मौपम्येन । सर्वत्र । समं । पश्यति ।यः। अर्जुन । सुखं । वा । यदिवा। दुःखं। सः। योगी। परमः । मतः॥३२॥(इतिप०) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष सर्वप्राणियोंविषे आपणेआत्माकेदृष्टांतकरिकै सुखकूं अथवा दुःखकूं तुल्यहीं देखेहै सो ब्रह्मवेत्तायोगी श्रेष्ठ मान्याजावैहै ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोविद्वान्पुरुष सर्वप्राणीमात्रविषे सुखकूं अथवा दुःखकूं आपणेआत्माकेदृष्टांतकरिकै तुल्यहीं जानेहै ॥ अर्थात् जोविद्वान्पुरुष द्वेषतैं रहितहोणेतैं जैसे आपणेअनिष्टकूं नहींसंपादनकरेहै ॥ तैसे अन्यप्राणियोंकेभी अनिष्टकूंसंपादनकरतानहीं ॥ इसप्रकार जोविद्वान्पुरुष रागतैंरहितहोणेतैं जैसे आपणेइष्टकूंसंपादनकरेहै तैसे अन्यप्राणियोंकेभी इष्टकूंसंपादनकरेहै ॥ सो निर्वासनताकरिकै शांतमनवाला ब्रह्मवेत्तायोगीपुरुष पूर्वउक्त अपरम योगीतैं श्रेष्ठहै अर्थात् मनोनाशवासनाक्षयतैंरहित केवल तत्ववेत्तापुरुषतै सोमनोनाशवासनाक्षयसहित तत्त्ववेत्तापुरुष श्रेष्ठहै ॥ यातैं तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका

यथाक्रमतैंअभ्यासकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं महान्प्रयत्नकरणा इति ॥ अब तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ तहां यह सर्वद्वैतप्रपंच अद्वितियसच्चिदानंदरूप परमात्मादेवविषे मायाकरिकैकल्पितहोणेतैं मिथ्याभूतहींहै ॥ एकपरमात्मादेवहीं परमार्थसत्यरूपहै ॥ ऐसाअद्वितीयपरमात्मादेव मैंहूं याप्रकारकेज्ञानकूं तत्त्वज्ञानकहेहैं ॥ और प्रदीपकीज्वालावोंकेसंतानकीन्यांई वृत्तियोंकेसंतानरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तभयाजो अंतःकरणरूप द्रव्यहे ॥ सोअंतःकरण मननरूपताकरिकै मनकह्याजावैहै ॥ और तिसवृत्तिरूपपरिणामकापरित्यागकरिकै तिनसर्ववृत्तियोंकाविरोधी जो निरोधाकारकरिकै परिणामहे यहहीं तिसमनकानाशहै और पूर्वअपरकेविचारतैंविना शीघ्रहीं उत्पन्नहुई जेक्रोधादिकवृत्तिविशेषहैं ॥ तिनोंके हेतुभूत जे चित्तविषेस्थित संस्कारविशेषहैं तिनसंस्कारोंकानाम वासनाहे ॥ तहां विवेककरिकैजन्य जे चित्तकेप्रशमकीदृढवासनाहैं तिनोंकीप्रबलतातैं क्रोधादिकोंकीउत्पत्तिकरणेहारेबाह्यनिमित्तोंके विद्यमानहुएभी जोतिनक्रोधादिकोंकी नहींउत्पत्तिहै ताकानाम वासनाक्षयहे ॥ अब इनतीनोंका परस्पर कार्यकारणभाव दिखावेहैं ॥ तहां तत्त्वज्ञानकेउत्पन्न हुएतैं अनंतर मिथ्याभूतजगत्विषे नरविषाणादिकोंकीन्यांई बुद्धिकीवृत्ति उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और तिसकालविषे आत्माअपरोक्षहै यातैं आत्माविषेभी वृत्तिका कोई उपयोगनहींहै ॥ परिशेषतैं इंधनोंतैंरहितअग्निकीन्यांई सोमन नाशकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ इसरीतिसैं सोतत्त्वज्ञान मनोनाशकाकारणहै और तामनकेनाशहुएतैंअनंतर संस्कारोंकेउद्बोधकबाह्यनिमित्तोंकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ तिसतैं तेसंस्काररूपवासनाभी क्षयहोइजावैहैं ॥ इसरीतिसैं सोमनोनाश वासनाक्षयकाहेतुहै ॥ और तिनवासनावोंकेक्षयहुएतैअनंतर कारणकेअभावहोणेतैं तेक्रोधादिकवृत्तियां उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तिसतैं सोमनभी नाशहोइजावैहे ॥ इसरीतिसै सोवासनाक्षयमनोनाशविषेकारणहै ॥ और तामनकेनाशहुएतैंअनंतर शमदमादिकसाधनोंकीसंपत्तिकरिकै सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ इसरीतिसैं सोमनोनाश तत्त्वज्ञानका कारणहे ॥ और तत्त्वज्ञानकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर तेरागद्वेषादिरूपवासनाभी क्षयहोइजावैहैं ॥ यातैं सोतत्त्वज्ञान वासनाक्षयकाहेतुहै ॥ और तिनवासनावोंकेक्षयहुएतैंअनंतर प्रतिबंधककेअभावहुएतैं सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहे ॥ यातैं सोवासनाक्षय तत्त्वज्ञानकाहेतुहै ॥ इसरीतिसैं तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय कातीनोंकापरस्पर कार्यकारणभावहे ॥ यहवार्त्ता वासिष्ठग्रंथविषेवसिष्ठभगवान्नैंभी श्रीरामचंद्रकेप्रति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तत्त्वज्ञानंमनोनाशोवासनाक्षयएवच ॥ मिथःकारणतांगत्वादुःसाध्यानिस्थितानिहि ॥ १ ॥ तस्माद्राघवयत्नेनपौरुषेणविवेकिना ॥ भोगेच्छांदूरतस्त्यक्त्वात्रयमेतत्समाश्रयेत् ॥ २ ॥) अर्थ यह ॥ तत्त्वज्ञान मनोनाशवासनाक्षय यहतीनों परस्पर कार्यकारणभावकूंप्राप्तहोइकै ईहां दुःसाध्यहुए स्थितहैं ॥ १ ॥ तिसकारणतैं हेरामचंद्र विवेकयुक्त पौरुषयत्नकरिकै भोगकीइच्छाकूं दूरतैंपरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष इनतीनोंकूंआश्रयणकरै ॥ ईहां जिसीकिसीउपायकरिकै इनतीनोंकूं मैं अवश्यकरिकैसंपाद

नकरौंगा याप्रकारकाजो उत्साहविशेषहै ताकानाम पौरुषयत्नहै ॥ और तिनतीनोंकेपृथक्पृथक्करिकैसाधनोंकानिश्चयहै ताकानाम विवेकहै ॥ जैसे तत्त्वज्ञानके तौंश्रवणादिक साधनहैं ॥ और मनोनाशका योग साधनहै ॥ और वासनाक्षयका प्रतिकूलवासनावोंकीउत्पत्ति साधनहै ॥ ऐसेविवेकयुक्तपौरुषयत्नकरिकै भोगके इच्छाकूं दूरतैंपरित्यागकरिकै तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय इनतीनोंकूं आश्रयणकरै ॥ तहां जैसे घृतादिकहविष् अग्निकेवृद्धिकाहेतुहोवैहै ॥ तैंसे अत्यंतअल्प भी भोगोंकीइच्छा वासनाकेवृद्धिकाहींहेतुहोवैहै यातैं ताभोगकीइच्छाका दूरतैंहीं त्यागकथनकऱ्याहैइति ॥ २ ॥ ईहांयहअभिप्रायहै ॥ ब्रह्मविद्याकाअधिकारी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं कृतोपास्तिहोवैहै ॥ और दूसरा अकृतोपास्तिहोवैहै ॥ तहां जोपुरुष उपास्यदेवताकेसाक्षात्कारपर्यंत उपासनाकूंकरिकै पश्चात् तत्त्व ज्ञानवासतैं प्रवृत्तहुआहै सोपुरुष कृतोपास्ति कह्याजावैहै ॥ तिसकृतोपास्तिपुरुषकूं मनोनाश वासनाक्षय यहदोनों तत्त्वज्ञानतैंपूर्वहीं दृढहै ॥ यातैं तत्त्वज्ञानतैं उत्तर तिसकृतोपास्तिपुरुषकूं साजीवन्मुक्ति स्वतःहींसिद्धहोवैहै ॥ और जिसपुरुषनैं तत्त्वज्ञानतैंपूर्व साउपासनानहींकरीहै ॥ सोपुरुष अकृतोपास्ति कह्याजावैहै ॥ सोइदानींकालकेमुमुक्षुजन विशेषकरिकैतौं अकृतोपास्तिहींहोवैहैं ॥ सोअकृतोपास्तिमुमुक्षु औत्सुक्यमात्रतैं शीघ्रहीं विद्याविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ और असंप्रज्ञातसमा धिरूपयोगतैंविनाहीं चेतनजडवस्तुकेविवेकमात्रकरिकैहीं तात्कालिक मनोनाशवासनाक्षयकूंसंपादनकरिकै शमदमादिसंपत्तिकरिकै श्रवणमनननिदिध्यासनकूंसंपा दनकरैहै ॥ तिन दृढअभ्यासकरेहुए श्रवणादिकोंकरिकै सर्वबंधोंकानाशकरणेहारा तत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिसतत्त्वज्ञानतैं अविद्याग्रंथि अब्रह्मत्व हृदयग्रंथि संशय कर्म असर्वकामत्व मृत्यु जन्म असर्वत्व इत्यादिकसर्वबंध निवृत्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (एतद्योवेदनिहितंगुहायांसोऽविद्याग्रंथिंविकिरतीतिहेसोम्य ब्रह्मवेदब्रह्मै वभवति ॥ भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन्सोऽश्नुतेसर्वान्कामान्स ह ॥ तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति ॥ यस्तुविज्ञानवान्भवत्यमनस्कःसदाशुचिः ॥ सतुतत्पदमाप्नोतियस्माद्भूयोनजायते ॥ यएवंवेदाहंब्रह्मास्मीतिसइदंसर्वंभवति) अब यथाक्रमतैं इनसर्वश्रुतियोंकाअर्थ निरूपणकरैहै ॥ हेप्रियदर्शन जोपुरुष हृदयरूपगुहाविषेस्थित इसआत्मादेवकूं साक्षात्कारकरैहै सोपुरुष अविद्याग्रंथिकूं नाश करैहै इति ॥ और जोपुरुष ब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ सोपुरुष ब्रह्मरूपहोवैहै इति ॥ और परमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुए इसविद्वान्पुरुषकी हृदयग्रंथि भेदन कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथासर्वसंशयभी छेदनकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तथाप्रारब्धकर्मतैंअतिरिक्त सर्वकर्मभी नाशकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ और परमव्योमरूप हृदयगुहाविषेस्थित सत्यज्ञानअनंतब्रह्मकूं जोपुरुष साक्षात्कारकरैहै ॥ सोपुरुष सर्वकामोंकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ और तिसआत्माकूंसाक्षात्कारकरिकै यहविद्वान्पुरुष मृत्युतैंरहितहोवैहै इति ॥ और जोपुरुष विज्ञानवालाहै तथामनकेनिरोधवाला है तथासर्वदाशुचिहै ॥ सोपुरुष तिसपरमपदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसतैं पुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं

इति ॥ और जोपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारजानैहै ॥ सोपुरुष इससर्वजगत्‌काआत्माहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतियां तत्त्वज्ञानकरिकै सर्वबंधकीनिवृत्तिकूं प्रतिपादनकरेहैं ॥ इसप्रकारकेसर्वबंधोंकीनिवृत्तिरूप जाविदेहमुक्तिहै ॥ साविदेहमुक्ति इसदेहकेविद्यमानहुएभी तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तिकेसमानकालहीं जाननी ॥ काहेतैं ब्रह्मविषे अविद्याकरिकैआरोपित जोपूर्वउक्तबंधहै ॥ सोसर्वबंध तत्त्वज्ञानतैंपूर्वहीं रहेहै ॥ तत्त्वज्ञानकरिकै अविद्याकेनाशहुएतैंअनंतर सोबंधभी निवृत्त होइजावैहै ॥ और तत्त्वज्ञानकरिकै एकवार नाशकूंप्राप्तहुआ सोअविद्यासहितबंध पुनः उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तत्त्वज्ञानकीशिथिलताकरणेहारेकारणकेअभावतैं सोतत्त्वज्ञानतौं तिसविद्वान्‌पुरुषका तिसीप्रकारकाबन्यारहेहै और पूर्व तिसतत्त्वज्ञानकीप्रातिवासतै जो तात्कालिक मनोनाश वासनाक्षय संपादनकीयेथे ॥ सो मनोनाश तथावासनाक्षयतौं दृढअभ्यासकेअभावतैं तथाभोगकेदेणेहारेप्रारब्धकर्मकरिकैबाध्यमानहोणेतैं वायुवालेदेशविषेस्थित प्रदीपकीन्यांईशीघ्रहीं निवृत्तहोइ जावैहै इसीकारणतैं इदानींकालके अकृतोपास्ति तत्त्वज्ञानवालेपुरुषकूं सर्वसिद्धतत्त्वज्ञानविषेतौं किंचित्‌मात्रभी प्रयत्नकीअपेक्षानहींहै ॥ किंतु तिसविद्वान्‌पुरुषकूं मनोनाश वासनाक्षय यहदोनों प्रयत्नकरिकै साध्यहैं ॥ तहां मनकानाशतौं पूर्व असंप्रज्ञातसमाधिकेनिरूपणकरिकै कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं अब वासनाक्षयकानिरूपणकरेहैं तहां वासनाकेजानेतैंविना तावासनाक्षय कन्याजावैनहीं ॥ यातैं प्रथम वासनाकास्वरूप जान्याचाहिये ॥ तहां वासनाकास्वरूप वसिष्ठभगवान्‌नें यहकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (दृढभावनयात्यक्तपूर्वापरविचारणम् ॥ यदादानंपदार्थस्यवासनासाप्रकीर्तिता) ॥ अर्थयह ॥ दृढभावनाकरिकै पूर्वअपरके विचारतैंरहितहोइकै जोपदार्थकाग्रहणकरणाहै ताकानाम वासनाहै इति ॥ ईहां आपणेआपणेदेशकेआचारविषे तथाआपणेकुलकेधर्मविषे तथाआपणेआपणेस्वभावविषे तथाआपणेआपणेदेशादिकोंविषेस्थित जेअपशब्दहैं तथासाधुशब्दहैं तिनशब्दोंविषे जोप्राणियोंकाअभिनिवेशहै ताकानाम वासनाहै ॥ यहसामान्यतैं वासनाकास्वरूपकह्या ॥ अब विशेषतैं कहेहैं ॥ सावासना दोप्रकारकीहोवैहै एकतौं शुद्धवासनाहोवैहै ॥ और दूसरी मलिनवासनाहोवैहै ॥ तहां अमानित्व अदंभित्व इत्यादिक वक्ष्यमाणदैवीसंपत् शुद्धवासना कहीजावैहै ॥ साशुद्धवासना तत्त्वज्ञानकासाधनरूपहोणेतैं एकरूपहींहोवैहै और दूसरी मलिनवासना तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौंलोकवासनाहोवैहै ॥ दूसरी शास्त्रवासनाहोवैहै ॥ तीसरी देहवासनाहोवैहै ॥ तहां यहसर्वलोक जैसे हमारीनिंदा नहींकरै किंतु यहसर्वलोक हमारीस्तुतिहींकरैं तिसीप्रकारकेआचरणकूंमैंकरौं याप्रकारका जोअशक्यअर्थकाअभिनिवेशहै ताकूं लोकवासनाकहेहै ॥ सालोकवासना संपादनकरणेकूंअशक्यहै ॥ काहेतैं पूर्व जेरामकृष्णादिकअवतारहुएहैं ॥ तिनोंकीभीसर्वलोकोंनैं स्तुतिकरीनहीं ॥ किंतु केईदुष्टलोक तिनोंकीभीनिंदाकरतेरहेहैं ॥ जबी साक्षात् ईश्वरोंकीभी सर्वलोकोंनैं स्तुतिनहींकरी ॥ तबी इदानीं कालकेजीवोंकी सर्वलोक स्तुतिकैसेकरैंगे किंतु नहींकरैंगे ॥ यातैं सालोकवासना संपादनकरणेकूंअश

क्यहै ॥ तथा सालोकवासना पुरुषार्थका उपयोगीभीनहींहै ॥ याकारणतैं सालोकवासना मलिनहै इति ॥ और दूसरी शास्त्रवासना तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौं पाठकाव्यसनरूपहोवैहै ॥ और दूसरी बहुतशास्त्रकाव्यसनरूपहोवैहै ॥ और तीसरी शास्त्रअर्थकेअनुष्ठानका व्यसनरूपहोवैहै ॥ तहां पाठकाव्यसनरूपशास्त्रवासनातौं भारद्वाजकूं होतीभईहै ॥ और बहुतशास्त्रका व्यसनरूपशास्त्रवासनातौं दुर्वासाकूंहोतीभईहै ॥ और अनुष्ठानकाव्यसनरूपशास्त्रवासनातौंनिदाघकूं होतीभईहै ॥ सात्रिविधशास्त्रवासना बहुतक्लेशोंकरिकैव्याप्तहै तथापुरुषार्थकाभी अनुपयोगीहै तथाअभिमानकाहेतुहै तथाजन्मकाभीहेतुहै ॥ याकारणतैं साशास्त्रवासनाभी लोकवासनाकीन्यांई मलिनहींहै इति ॥ और तीसरी देहवासनाभी तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां एकतौं देहविषेआत्मत्वभ्रांतिरूप देहवासनाहोवैहै ॥ और दूसरी गुणाधानत्वभ्रांतिरूप देहवासनाहोवैहै ॥ और तीसरी दोषापनयनत्वभ्रांतिरूप देहवासनाहोवैहै ॥ तहां देहविषे आत्मत्वभ्रांतिरूपदेहवासना विरोचनादिकोंविषे तथातिनोंकेअनुयायी इदानींकालकेबहुतलोकोंविषे प्रसिद्धहींहै ॥ और दूसरा गुणाधान दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं लौकिक गुणाधानहोवैहै ॥ और दूसरा शास्त्रीयगुणाधानहोवैहै ॥ तहां समीचीनशब्दादिकविषयोंकासंपादनकरणा याकानाम लौकिकगुणाधानहै ॥ और गंगास्नान शालिग्रामतीर्थ आदिकोंकासंपादनकरणा याकानाम शास्त्रीयगुणाधानहै ॥ और तागुणाधानकीन्यांई तीसरा दोषापनयनभी दोप्रकारकाहोवैहै एकतौं लौकिक दोषापनयनहोवैहै ॥ और दूसरा शास्त्रीय दोषापनयनहोवैहै ॥ तहां चिकित्साकरणेहारेपुरुषउक्त औषधोंकरिकै ज्वरादिकव्याधियोंकीनिवृत्तिकरणी याकानाम लौकिकदोषापनयनहै ॥ और शास्त्रउक्त स्नानआचमनादिकोंकरिकै अशौचादिकोंकी निवृत्तिकरणी याकानाम शास्त्रीयदोषापनयनहै ॥ यहत्रिविधदेहवासना अप्रामाणिकहै तथाकरणेकूंभीअशक्यहै तथापुरुषार्थविषेभी अनुपयोगीहै तथापुनः जन्मकेप्राप्तिकाहेतुहै ॥ याकारणतैं इसदेहवासनाविषे मलिनपणा शास्त्रविषेप्रसिद्धहींहै ॥ इसप्रकार मलिनरूपकरिकैप्रसिद्ध जेलोकवासना तथाशास्त्रवासना तथादेहवासना यहतीनप्रकारकीवासनाहैं ॥ तेतीनोंवासना यद्यपि अविवेकीपुरुषोंकूं उपादेयरूपकरिकै प्रतीतहोवैहैं ॥ तथापि यहतीनोंवासना जिज्ञासुपुरुषकूंतौं ज्ञानकीउत्पत्तिविषे विरोधीहैं ॥ और विद्वान्पुरुषकूंतौं ज्ञाननिष्ठाकाविरोधीहैं ॥ यातैं जिज्ञासुपुरुषनैंतौं ज्ञानकीप्राप्तिवासतै यहतीनों वासना परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ और विद्वान्पुरुषनैंतौं ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतैं यहतीनोंवासना परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकैं बाह्यविषयवासना तीनप्रकारकी निरूपणकरी ॥ और अंतर मलिनवासनातौं कामक्रोध दंभ दर्प इत्यादिकआसुरसंपत्‌रूपहोवैहै ॥ साआसुरसंपत्‌रूपवासना सर्वअनर्थोंकामूलभूत मानसवासना कहींजावैहै॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥ लोकवासना शास्त्रवासना देहवासना यहतीनोबाह्यवासनातथाआसुरसंपत्‌रूप अंतरवासना याच्यारोंमलिनवासनावोंका इसअधिकारीपुरुषनैं शुभवासनाकरिकैनाशकरणा ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्‌नैंभी श्रीरामचंद्रकेप्रति कथनकरी

है ॥ तहांश्लोक ॥ (मानसीवासनाःपूर्वंत्यक्त्वाविषयवासनाः ॥ मैत्र्यादिवासनारामगृहाणामलवासनाः ॥) अर्थयह ॥ हेरामचंद्र लोकवासना शास्त्रवासना देहवासना यातीनोंवासनावोंकानाम विषयवासनाहै ॥ ऐसीमलिनविषयवासनावोंकापरित्यागकरिकै तथाकामक्रोधदंभदर्पादिकआसुरसंपत्‌रूप मलिन मानसवासनावोंकूंपरित्यागकरिकै मैत्री करुणा मुदिता इत्यादिकशुभवासनावोंकूं तूंग्रहणकर ॥ अथवा इसश्लोकविषेस्थित विषयवासनाः मानसीवासनाः यादोनोंपदोंका यहदूसराअर्थकरणा ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंकानाम विषयहै ॥ तिनशब्दादिकविषयोंकी दोदशाहोवैहैं ॥ एकतौ भुज्यमानत्वदशाहोवैहै ॥ दूसरी काम्यमानत्वदशाहोवैहै ॥ तहां भोगकीविषयताकानाम भुज्यमानत्वहै ॥ और कामनाकीविषयताकानाम काम्यमानत्वहै ॥ तहां तिनशब्दादिकविषयोंकेभुज्यमानत्वदशाजन्यसंस्कारोंकानाम विषयवासनाहै॥और काम्यमानत्वदशाजन्यसंस्कारोंकानाम मानसवासनाहै ॥ इसपक्षविषे पूर्वकथनकरीहुई च्यारि प्रकारकीवासनावोंका इनदोनोंवासनावोंविषेहीं अंतर्भावहै ॥ जिसकारणतैं बाह्य अभ्यंतर यादोनोंप्रकारकीवासनावोंतैं भिन्न दूसरीकोईवासनाहैनहीं ॥सर्ववासनावोंका इनदोवासनावोंविषेहीं अंतर्भावहै ॥ तहां तिनमलिनवासनावोंतैंविरुद्ध मैत्रीकरुणादिकशुभवासनावोंकाजोउत्पादनहै यहहीं तिनमलिनवासनावोंका परित्यागहै ॥ तेमैत्रीआदिकशुभवासना पतंजलिभगवान्‌ने योगसूत्रोंविषेकथनकरीहैं ॥ तेमैत्रीआदिक शुभवासना यद्यपि पूर्व संक्षेपतैंप्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ तथापि तिसपूर्वउक्तअर्थकी दृढताकरणेवासतै पुनः तिनमैत्रीआदिकोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहां इसपुरुषके चित्तकूं रागद्वेषपुण्य अपुण्य यहच्यारोंहीं मलिनकरेहैं ॥ तहां किसीसुखकेअनुभवहुएतैं अनंतर तिससुखकास्मरणकरिकै तिससुखकेसजातीयदूसरेसुखोंविषे तथातिनसुखोंकेसाधनोंविषे यहसाधनोंसहित सर्वविषयसुख हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारकी अंतःकरणकीराजसवृत्तिविशेषरूप जातृष्णाहै ताकानाम रागहै ॥ तहां तिनसर्वसुखोंकीप्राप्तिकरणेहारीजादृष्टअदृष्टरूपकारणसामग्रीहै ॥ तासामग्रीकेअभावहोणेतैं तिनसर्वसुखोंकासंपादनकरणा अत्यंतअशक्यहै ॥ यातैं विषयकीप्राप्तितैंरहितहुआ सोराग इसपुरुषकेचित्तकूं मलिनकरेहै ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी सर्वसुखी प्राणियोंविषे यहसर्वसुखीप्राणी हमारेहींहै याप्रकारकीमैत्रीसंपादनकरेहै ॥ तबी सोसर्वप्राणियोंकासुख आपणाहीं सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारकीभावनाकरणेहारेपुरुषका तिनसुखोंविषे सोराग निवृत्तहोईजावैहै ॥ जैसे किसीराजाकूं आपतौं राज्यतैंवैराग्यकीप्राप्तिहूएभी आपणेपुत्रादिकोंकेराज्यकूंहीं आपणाराज्यकरिकैमानैहै ॥ तैसे सोपुरुषभी आपणे सुखविषयकरागकेनिवृत्तहुएभी दूसरेप्राणियोंकेसुखकूंहीं आपणाकरिकैमानैहै ॥ इसप्रकार मैत्रीभावना करिकै जबी तारागकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी वर्षाकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर जैसे जलशुद्धहोवैहै तैसे सोचित्त शुद्धहोवैहै इति ॥ और किसीदुःखकेअनुभवहुएतैंअनंतर तादुःखकास्मरणकरिकै तिसदुःखकेसजातीयदूसरेदुःखोंविषे तथातिनदुःखोंकेसाधनोंविषे यहसाधनोंसहित सर्वदुःख

हमोरेकूं कदाचित्‌भी मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकीजा तमोगुणमिलितरजोगुणकापरिणामरूप अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ॥ तहां दुःखकेहेतुरूप शत्रुव्याघ्रादिकोंकेविद्यमानहुए सोदुःख निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ और तिनसर्वदुःखोंकेहेतुवोंकूं हननकरणेविषेभीकोईसमर्थनहींहै ॥ यातैं सोद्वेष इसपुरुषके चित्तकूं सर्वदा दाहकरेहै ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी सर्वदुःखी प्राणियोंविषे आपणेकीन्यांई इनसर्वप्राणीयोंकूं यहदुःख मतप्राप्तहोवै याप्रकारकीकरुणाकरेहै ॥ तबी इसपुरुषका वैरीआदिकोंविषे सोद्वेष निवृत्तहोइजावैहै ॥ ताद्वेषकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषकाचित्त निर्मलहोवैहै ॥ यहवार्त्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (प्राणायथात्मनोभीष्टाभूतानामपितेतथा ॥ आत्मौपम्येनभूतेषुदयांकुर्वंतिसाधवः ॥) अर्थयह ॥ जैसे इसपुरुषकूं आपणेप्राण अत्यंत प्रियहोवैहै ॥ तैसे सर्वभूतोंकूं तेआपणेआपणेप्राण अत्यंतप्रियहोवैहैं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै श्रेष्ठमहात्मापुरुष आपणेआत्माकीन्यांई सर्वभूतप्राणियोंविषे दयाकूंहींकरेहैं इति ॥ इसीअर्थकूं श्रीभगवान् ईहां (आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोर्जुन) इसश्लोकविषे कथनकरताभयाहै इति ॥ और यहप्राणी स्वभाव तैंहीं पुण्यकर्मोंकूं अनुष्ठानकरतेनहीं ॥ तथा पापकर्मोंकूंअनुष्ठानकरेहैं ॥ यहवार्त्ताभी शास्त्रविषेकथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (पुण्यस्यफलमिच्छंतिपुण्यंने च्छंतिमानवाः ॥ नपापफलमिच्छंतिपापंकुर्वंतियत्नतः ॥) अर्थयह ॥ यहमनुष्य पुण्यकर्मकेसुखरूपफलकीतौं इच्छाकरेहैं ॥ परंतु तापुण्यकर्मकीइच्छाकरते नहीं ॥ और यहमनुष्यपापकेदुःखरूपफलकीतौं इच्छाकरतेनहीं ॥ और तिसपापकर्मकूंतौं प्रयत्नतैंकरेहैं इति ॥ तहां तेपुण्यकर्मतौं नहींकन्येहुए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरेहैं ॥ और पापकर्मतौं कन्येहुए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरेहैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (किमहंसाधु नाकरवंकि महंपापमकरवम् ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष पुण्यकर्मोंकूंनहींकरेहै ॥ सोपुरुष दूसरेपुण्यवान्‌पुरुषोंकूं सुखीहुआदेखिकै ऐसेसुखकीप्राप्तिकरणेहारेपुण्यकर्मोंकूं मैं किसवासतै नहींकरताभया याप्रकारकेपश्चात्तापकूंकरेहै ॥ यातैं पुण्यकर्मतौं नहींकन्येहुए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरेहैं ॥ और जोपुरुष पापकर्मकूं करेहै ॥ सोपुरुष जबी तिसपापकर्मदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष ऐसेदुःखकीप्राप्तिकरणेहारेपापकर्मोंकूं मैं किसवासतैकरताभया याप्रकारकेपश्चा त्तापकूंकरेहै ॥ यातैं तेपापकर्म कन्येहुए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरेहैं इति ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी पुण्यवान्‌पुरुषोंविषे मुदिताकरेहै ॥ तबी ताशुभवासनावालाहुआ सोपुरुष आपभी साधनहुआ अशुक्लकृष्णनामा पुण्यविशेषविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ यह वार्त्ता योगसूत्रोंविषे पतंजलिभगवा नूनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (कर्माशुक्लकृष्णं योगिनस्त्रिविधमितरेषाम् ॥) अर्थयह ॥ योगीपुरुषोंकाकर्मतौं अशुक्लकृष्णहोवैहै ॥ और अयोगीपुरुषों काकर्मतौं शुक्ल कृष्ण शुक्लकृष्ण यहतीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां जोकर्म केवल मनवाणीकरिकैहीं साध्यहोवैहै तथाएक सुखरूपफलकीहीं प्राप्तिकरेहैं सोकर्म

शुक्लकर्म कह्याजावैहै ॥ ऐसाशुक्लकर्म वेदाध्ययनपरायणब्रह्मचारीपुरुषोंका तथातपस्वीपुरुषोंका होवैहै ॥ औरजोकर्मकेवल दुःखकीहींप्राप्तिकरेहै सोकर्म कृष्णकर्म कह्याजावैहै ॥ ऐसाकृष्णकर्मतौंदुरात्मापुरुषोंकाहोवैहै ॥ और जो कर्म सुखदुःखमिश्रितफलकीप्राप्तिकरेहै तथाव्रीहियवादिकवाह्यसाधनोंकरिकैसाध्यहोवैहै सोकर्म शुक्लकृष्ण कह्या जावैहै ॥ सोशुक्लकृष्णकर्मतौ सोमयागादिकोंविषेप्रीतिमानपुरुषोंकाहोवैहै ॥ काहेतैं तिन सोमयागादिकोंविषे व्रीहिआदिकोंकेकूटणेकरिकै पिपीलिकादिकजंतुवोंकूं पीडाकीप्राप्तिहोवैहै॥और दक्षिणादिकोंकेदेणेकेरिकै ब्राह्मणादिकोंकीप्रसन्नताभीहोवैहै ॥ यातैं तिनयागिकपुरुषोंका सोकर्म शुक्लकृष्णहोवैहै यहतीनप्रकारकाकर्म अयोगीपुरुषोंकाहीं होवैहै ॥ और संन्यासीयोगीपुरुषनैंतौं व्रीहियवादिकबाह्यसाधनोंकरिकैसिद्धहोणेहारे यागादिककर्मोंका परित्यागकर्‍याहै यातैं तिनयोगीपुरुषोंका सोशुक्लकृष्णकर्महोवैनहीं॥और तेयोगीपुरुष अविद्यादिकसर्वक्लेशोंतैं रहितहैं॥यातैं तिनयोगीपुरुषोंका सोकृष्णकर्मभीहोवैनहीं ॥ और तेयोगीपुरुष योगजन्यधर्मके फलकीइच्छाकूंनकरिकैताधर्मकाईश्वरविषे अर्पणकरेहैं ॥ यातैं तिनयोगीपुरुषोंका सोशुक्लकर्मभीहोवैनहीं ॥ किंतु चित्तकीशुद्धिद्वारा तथा विवेकख्यातिद्वारा एकमोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारा अशुक्लकृष्णनामा पुण्यकर्म तिनयोगीपुरुषोंकाहोवैहै इति ॥ और जोअधिकारीपुरुष पापात्मापुरुषोंविषे उपेक्षाकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष तिसवासनावालाहुआ आपभी तिनपापकर्मोंतैंनिवृत्तहोवैहै ॥यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पुण्यवान्पुरुषोंविषेमुदिताकरणेहारेपुरुषकूं तथा पापीपुरुषोंविषे उपेक्षाकरणेहारेपुरुषकूं पुण्यकर्मोंके नकरणनिमित्तिक पश्चात्ताप तथापापकर्मोंकेकरणनिमित्तिक पश्चात्ताप प्राप्तहोवैनहीं ॥ तापश्चात्तापकेअभावहुए तिसपुरुषकाचित्त निर्मलताकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ किंवा ॥ इसप्रकार सुखीप्राणीयोंविषे मैत्रीभावनाकरणेहारेपुरुषका केवल एकरागहीं निवृत्तनहींहोवैहै ॥ किंतु तामैत्रीभावनाकरिकै असूया ईर्ष्या आदिकभी निवृत्तहोवैहैं ॥ तहां अन्यपुरुषोंकेगुणोंविषे जोदोषोंकाप्रगटकरणाहै ताकानाम असूयाहै ॥ और परके गुणोंका जोनहींसहनकरणाहै ताकानाम ईर्ष्याहै ॥ जवी मैत्रीभावनाकेवशतैं यहअधिकारीपुरुष सर्वप्राणीयोंकेसुखकूं आपणाहींकरिकैमानेहै ॥ तवी तापुरुषकी परगुणोंविषे असूया तथाईर्ष्या कदाचित्भी होवैनहीं ॥ इसप्रकार दुःखीप्राणीयोंविषे करुणाभावनाकरणेहारेपुरुषका शत्रुआदिकोंकेवधकरणेहाराद्वेष जवी निवृत्तहोइजावैहै ॥ तवी दूसरेकूंदुःखीदेखिकै तथाआपणेकूंसुखीदेखिकै जोदर्प उत्पन्नहोवैहै सोदर्पभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ इसप्रकारतैं दूसरेदोषोंकीनिवृत्तिभी जानिलेणी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसअधिकारीपुरुषनैं जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका अभ्यासकरणा ॥ तहां जिसीकिसीप्रकारतैं पुनःपुनः जोतत्त्वकास्मरणहै ताकूं तत्त्वज्ञानाभ्यास कहेहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तच्चिंतनंतत्कथनमन्योन्यंतत्प्रबोधनं ॥ एतदेकपरत्वंचब्रह्माभ्यासंविदुर्बुधाः ॥ १ ॥ सर्गादावेवनोत्पन्नंदृश्यंनास्त्येवतत्सदा ॥ इदंजगदहंचेतिबोधाभ्यासंविदुःपरम् ॥ २ ॥)अर्थयह ॥

तिसीअद्वितीयब्रह्मका जोवारंवार चिंतनहै॥ तथा तिसीब्रह्मका जोवारंवार कथनहै ॥ तथा तिसीब्रह्मका जोपरस्पर बोधनहै॥ तथा निरंतर तिसीएकब्रह्मपरताजोहै ॥ ताकूं विद्वान्पुरुष ब्रह्माभ्यासकहेहैं इति ॥ १ ॥ और यहदृश्यप्रपंच सृष्टिकेआदिकालविषेहीं उत्पन्नहुआनहीं ॥ यातैं यहदृश्यप्रपंच तीनकालविषेहैनहीं ॥ और मैंस्वयंज्योतिअधिष्ठानआत्मा सर्वदा विद्यमानहूं याप्रकारका जोनिरंतरविचारहै ताकूं बोधाभ्यास कहेहैं इति ॥ २ ॥ और दृश्यप्रपंचकेअवभासकाविरोधी जो योगाभ्यासहै ताकूं मनोनिरोधाभ्यासकहेहैं ॥ यहवार्त्ताभी शास्त्रविषेकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अत्यंताभावसंपत्तौज्ञातुर्ज्ञेयस्यवस्तुनः ॥ युक्त्याशास्त्रैर्यतंतेयेते प्यत्राभ्यासिनःस्थिताः) अर्थयह ॥ ज्ञाता ज्ञेयवस्तु यादोनोंविषे जोमिथ्यात्वबुद्धिहै ताकानाम अभावसंपत्तिहै ॥ और तिनदोनोंकीजास्वरूपतैंहीं अप्रतीतिहै ताकानाम अत्यंताभावसंपत्तिहै ॥ ताअत्यंताभावसंपत्तिकेवासतै जेपुरुष योगकरिकै तथाशास्त्रोंकरिकै प्रयत्नकरेहैं ॥ तेपुरुष मनोनिरोधकेअभ्यासवालेकहेजावैहैं इति ॥ और दृश्यप्रपंचकेअसंभवबोधकरिकै जोरागद्वेषादिकोंकी क्षीणताकरणीहै ताकूं वासनाक्षयकाअभ्यास कहेहैं ॥ यहवार्त्ताभी अन्यशास्त्रविषेकथन करीहै ॥ तहांश्लोक (दृश्यासंभवबोधेनरागद्वेषादितानवे ॥ रतिर्घनोदितायासौब्रह्माभ्यासः सउच्यते ॥) अर्थयह ॥ इसदृश्यप्रपंचकेअसंभवबोधकरिकै इनरागद्वेषादिकोंकीक्षिणताकरणेविषे जादृढराति उत्पन्नहोवैहै सोब्रह्माभ्यासकहाजावैहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष तत्त्वज्ञानकेअभ्यासकरिकै तथामनोनाशकेअभ्यासकरिकै तथावासनाक्षयकेअभ्यासकरिकै रागद्वेषादिकविकारोंतैंरहितहुआ आपणेपराये सुखदुःखादिकोंविषे समदृष्टिहै ॥ सोपुरुषतौं परमयोगीहै और जोपुरुष विषमदृष्टिवालाहै ॥ सोपुरुषतौं तत्त्वज्ञानवालाहुआभी अपरमयोगीहींहैइति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्नैं पूर्व विस्तारतैंकथनकरयाजो मनकानिरोधरूपयोगहै ताका निषेधकरताहुआ अर्जुनप्रश्न करेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ योयंयोगस्त्वयाप्रोक्तःसाम्येनमधुसूदन ॥ एतस्याहंनपश्यामिचंचलत्वात्स्थितिंस्थिराम् ॥ ३३ ॥

यः । अयं । योगः । त्वया । प्रोक्तः । साम्येन । मधुसूदन । एतस्य । अहम् । न । पश्यामि । चंचलत्वात् । स्थितिं । स्थिराम् ॥ ॥ ३३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमधुसूदन तुमनैं जो यह योग समत्वकरिकै कथनँकरयाहै सोइसयोगके स्थिर स्थितिकूं मैंअर्जुन नहीं देखताहूं मनकूं अतिचंचलहोणेतैं ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेमधुसूदन अर्थात् हेसर्ववैदिकसंप्रदायकाप्रवर्त्तक तैंसर्वज्ञईश्वरनैं जोयह सर्वत्रसमदृष्टिरूप परमयोगपूर्व समभावकरिकै कथनकर्याहै अर्थात् चित्तविषेस्थित विषमदृष्टिकेहेतुभूत जेरागद्वेषादिकहैं तिनरागद्वेषादिकोंका निराकरणकरिकै जो यहयोग कथनकरयाहै ॥ इस सर्वमनोवृत्तिनिरोधरूपयोगकी

दीर्घकालपर्यंतरहणेहारी विद्यमानतारूपस्थितिकूं मैं अर्जुन देखतानहीं ॥ अर्थात् ऐसेसर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकी दीर्घकालपर्यंतस्थितिहोतीहै याप्रकारकी संभावना हमारेकूं होतीनहीं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन ऐसीसंभावना तुमारेकूं किसवासतैनहींहोती ॥ ऐसीभगवान्‌कीशंकाकेहुए अर्जुन ताकेविषेहेतुकहेहै (चंचलत्वात् इति) हेभगवन् यहमन अत्यंतचंचलहै ॥ एकक्षणमात्रभी स्थिरहोतानहीं ॥ याकारणतैं तिसअर्थकीसंभावना हमारेकूंहोतीनहीं इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन तिसमनकेचंचलस्वभावकूं सर्वलोकशास्त्रकीप्रसिद्धताकरिकै उपपादनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) चंचलंहिमनःकृष्णप्रमाथिबलवद्दृढम् ॥ तस्याहंनिग्रहंमन्येवायोरिवसुदुष्करम् ॥ ३४ ॥ चंचलं । हि । मनः । कृष्ण । प्रमाथि । बलवत् । दृढम् । तस्य । अहं । निग्रहम् । मन्ये । वायोः । इव । सुदुष्करम् ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेकृष्ण यहमन प्रसिद्ध चंचलहै तथाप्रमाथिहै तथाबलवान्‌है तथादृढहै तिसमनके निग्रहकूं मैंअर्जुन वायुकेनिग्रहकी न्यांई अत्यंतकठन मांनताहुं ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकृष्णभगवन् यहमन चंचलहै ॥ अर्थात् अत्यंत चलनस्वभाववालाहै ॥ कदाचित्‌भी स्थिरहोतानहीं ॥ ऐसामनकाचंचलस्वभाव सर्वलोकोंकूं अनुभव सिद्धहै १ हेभगवन् यहमन केवल चंचलहीं नहींहै ॥ किंतु प्रमाथिभीहैं ॥ तहां शरीरकूं तथाइंद्रियोंकूं क्षोभकीप्राप्तिकरणेका जिसकास्वभावहोवैहै ताकानाम प्रमाथिहै॥ अर्थात् यहमन तिनशरीरइंद्रियोंकाक्षोभकहोणेतैं तिनशरीरइंद्रियोंके विवशताकाहेतुहै यातैं प्रमाथिहै॥ हेभगवन् यहमन केवल चंचल तथाप्रमाथि नहीं॥ किंतु यहमन बलवान्‌भीहै॥ अर्थात् यहमन अभिप्रेतविषयतै किसीभीउपायकरिकै निवृत्तकरणेकूं अशक्यहैं॥ इसलोकविषेभी किसीकार्यविषेप्रवृत्तहुए जिसपुरुषकूं कोईभी निवृत्तकरणेमैंसमर्थनहींहोवैहै तिसपुरुषकूं बलवान्‌कहेहै॥ तैसे किसीविषयविषेप्रवृत्तहुआयहमन तिसविषयतै निवृत्तकरयाजातानहीं॥ यातैं यहमन अत्यंत बलवान्‌है ॥ तथा यहमन दृढहै ॥ अर्थात् अनेकजन्मोंकी अनेकसहस्र सहस्रविषयवासनावोंकरिकै युक्तहोणेतैं भेदनकरणेकूंअशक्यहै ॥ अथवा तंतुनागकीन्यांई अच्छेद्यहोणेतैं यहमन दृढहै ॥ ईहां नागपाशकानाम तंतुनागहै अथवा जलकेमहान्हदविषेरहणेहारे किसीजंतुविशेषकानाम तंतुनागहै ॥ जिसजंतुविशेषकूं गुर्जरादिकदेशोंविषे तांतनी यानामकरिकै कथनकारिकै कथनकरेहै ॥ ईहां अर्जुननैं (चंचलं प्रमाथि बलवत् दृढं) यहच्यारिविशेषणमनकेकथनकरचे ॥ तिनच्यारोंविशेषणोंविषे पूर्वपूर्वविशेषणकीसिद्धिविषे उत्तरउत्तरविशेषण हेतुरूपहै ॥ जैसे यहमन अत्यंतदृढहोणेतैं बलवान्‌है ॥ तथा बलवान्‌होणेतैं यहमन प्रमाथिहै ॥ तथा प्रमाथिहोणेतैं यहमन अत्यंत चंचलहै ॥ हेभगवन् जैसे महामत्त वनहस्तिका निग्रहकरणा अत्यंतकठनहोवैहै ॥ तैंसे इसमनकेनिग्रहकूं अर्थात् सर्व

वृत्तियोंतैंरहितकरिकै स्थितकरणेकूं मैंअर्जुन दुष्करमानताहूं ॥ अर्थात् सर्वप्रकारतैरोकणेकूं अशक्य मानताहूं ॥ तामनकेनिग्रहकी अशक्यताविषे अर्जुन दृष्टांतकूंकहेहै (वायोरिवइति) हेभगवन् जैसे आकाशविषेचलायमानहोइरह्याजोवायुहै तावायुकी निश्चलताकूंसंपादनकरिकै तावायुकानिरोधकरणा अत्यंतअशक्यहै ॥ तैसे सर्वथा चंचलमनकीनिश्चलताकूं संपादनकरिकै तामनकानिरोधकरणा अत्यंतअशक्यहै यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरिहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अप्यब्धिपानान्महतःसुमेरून्मूलनादपि ॥ अपिवह्न्यशनात्साधोविषमश्चित्तनिग्रहः ॥) अर्थयह ॥ हेसाधो महान्समुद्रके पानकरणेतैंभी तथासुमेरुपर्वतकेमूलतैं उखाडनेतैंभी तथाअग्निकेभक्षणकरणेतैंभी यहचित्तकानिग्रहकरणा अत्यंतकठनहै इति ॥ ईहां (हेकृष्ण यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ दोषान्कृषतिनिवारयतीतिकृष्णः ॥ अथवा पुरुषार्थानाकर्षतिप्रापयतीतिकृष्णः ॥ अर्थयह ॥ भक्तजनोंके जेपापादिकदोष निवृत्तकरणेकूंअशक्यहैं तिनपापादिकदोषोंकूंभी जोनिवृत्तकरेहै ताकानाम कृष्णहै अथवा तिनभक्तजनोंकूं सर्वप्रकारतैं प्राप्तहोणेकूंअशक्य जेपुरुषार्थहै ॥ तिनपुरुषर्थोंकूंभी जोप्राप्तकरेहै ताकानाम कृष्णहै ॥ ऐसेकृष्णनामवाले आपहो ॥ यातैं आपणेनामकूं सार्थककरणेवासतै दुर्निवारभीहमारेचित्तकीचंचलताकूं आप अवश्यकरिकै निवृत्तकरौंगे ॥ तथा दुःप्रापभीसमाधिसुखकूं आप अवश्यकरिकैप्राप्तकरौंगे इति ॥ ईहां अर्जुनका यह अभिप्रायहै ॥ तत्त्वज्ञानके उत्पन्नहुएभी प्रारब्धकर्मकेभोगवासतै जीवतेहुएविद्वान्पुरुषके कर्तृत्व भोक्तृत्व सुख दुःख राग द्वेष इत्यादिकचित्तकेधर्म बाधितानुवृत्तिकरिकैविद्यमानहुएभी क्लेशकेहेतु होणेतैं बंधरूपहींहोवैहै ॥ और सर्वचित्तवृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकरिकै जोतिसबंधकीनिवृत्तिहै ताकानाम जीवन्मुक्तिहै ॥ जिस जीवन्मुक्तिकेसंपादन करणेकरिकै सोविद्वान्पुरुष परमयोगी कह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता आपनैं पूर्व कथनकरीहै ॥ याअर्थविषे हमारा यहकहणाहै ॥ सोबंध साक्षीचेतनतैं निवृत्तकरतेहो॥अथवा चित्ततैं सोबंध निवृत्तकरतेहो ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरौ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं पूर्वउत्पन्नहुए तत्त्वज्ञाननैंहीं तासाक्षीकेबंधकीनिवृत्तिकरीहै ॥ तिसबंधकीनिवृत्तिविषे तायोगका किंचित्मात्रभीउपयोगनहींहै ॥ और सो बंधचित्ततैं निवृत्तकरीताहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरौ सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं सोबंध साक्षीचेतनविषे जैसे आरोपितहै तैसे जोचित्तविषे आरोपितहोता तौं सोबंध चित्ततैं निवृत्तकऱ्याजाता ॥ परंतु सोबंध ताचित्तविषे आरोपितनहींहै ॥ किंतु सोबंध चित्तका स्वभावहींहै ॥ और जोजिसकास्वभावहोवैहै ॥ तिसस्वभावकी सहस्रउपायोंकरिकैभी निवृत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे जलकास्वभावजोआर्द्रपणाहै तथाअग्निका स्वभावजो उष्णपणाहै सोस्वभाव ताजलतैं तथा अग्नितैं अनेकउपायोंकरिकैभी निवृत्तकरयाजावैनहीं ॥ तैसे सोचित्तकास्वभावभी निवृत्तकरयाजावैनहीं ॥ और शास्त्रविषे ताचित्तकूं क्षणक्षणविषे परिणामस्वभाववाला कथनकऱ्याहै ॥ तहां शास्त्रवचनं ॥ (प्रतिक्षणपरिणामिनोहिभावाऋतेचितिशक्तेः ॥) अर्थयह ॥

चैतन्यआत्मातैंभिन्न जितनैंकीअनात्मपदार्थहै ॥ ते सर्वअनात्मपदार्थ क्षणक्षणविषेपरिणामकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ किंवा प्रारब्धकर्मरूप प्रतिबंधकेविद्यमानहुए ताबंधकी निवृत्ति संभवैनहीं ॥ काहेतैं अविद्याके तथाताअविद्याकेकार्यके नाशकरणेविषेप्रवृत्तभयाजोतत्त्वज्ञानहै ॥ तातत्त्वज्ञानकाभीप्रतिबंधकरिकें सोप्रारब्ध कर्म आपणेफलदेणेवासतै इसदेहइंद्रियादिकसंघातकूं स्थितकरेहै ॥ अर्थात् तासंघातकूं निवृत्तहोणेदेवैनहीं और चित्तकीवृत्तियोंतैंविना सोप्रारब्धकर्म आपणे सुखदुःखकेभोगरूपफलकूं संपादनकरिसकैनहीं ॥ काहेतैं सुखाकार तथादुःखाकार जाचित्तकीवृत्तिहै ताहींकूं शास्त्रविषेभोगकहेहैं ॥ ताचित्तकीवृत्तितैंविना सुखदुःखकाभोग संभवैनहीं ॥ यातैं यद्यपि स्वाभाविकभी चित्तकेपरिणामोंका योगकरिकै यथाकथंचित् अभिभव होइसकेहै ॥ तथापि जैसे तत्त्वज्ञानतैं सोप्रारब्धकर्म प्रबलहैं ॥ तैसे सोप्रारब्धकर्म योगतैंभी प्रबलहै ॥ ऐसे प्रारब्धकर्मकेविद्यमानहुए साचित्तकीचंचलताभी अवश्यकरिकैरहैंगी ॥ यातैं योगकरिकै ताचित्तकीचंचलताकेंनिवृत्तकरणेकूं मैंअर्जुन आपणेज्ञानतैं अशक्यमानताहूं ॥ यातैं आपणेआत्माकीन्यांई सर्वत्रसमदर्शीपुरुष परमयोगीहै यहआपकावचन अनुपपन्नहै ॥ यहअर्जुनकाआक्षेप दोश्लोकोंकरिकै सिद्धभया इति ॥ ३४ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् तिसअर्जुनकेआक्षेपकूं निवृत्तकरताहुआ कहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ असंशयंमहाबाहोमनोदुर्निग्रहंचलम् ॥ अभ्यासेनतुकौंतेयवैराग्येणचगृत्यते ॥ ३५ ॥ असंशयं । महाबाहो । मनः । दुर्निग्रहं । चलं । अभ्यासेन तु । कौंतेय । वैराग्येण । च । गृह्यते ॥ ३६ ॥ (इतिपदछेदः) हेमहाबाहो यहमन दुर्निग्रहहै तथाचंचलहै यहवार्त्ता संशयतैंरहितहै तौभी हेकौंतेय सोमन अभ्यासकरिकै तथा वैराग्यकरिकै निग्रहकन्याजावैहै॥३६॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तुमारेवचनतैं तुमारेचित्तकावृत्तांत हमनैं सम्यक्जान्याहै ॥ परंतु तूंअर्जुन इसमनकेनिग्रहकरणेविषे समर्थहैं इसप्रकार ताअर्जुनका संतोष करणेवासतै श्रीभगवान् ताअर्जुनका संबोधनकहेहै (हेमहाबाहोइति) साक्षात्महादेवसैंभी युद्धकरणेतैं महान्हैंदोनोंबाहुजिसकी ताकानाम महाबाहुहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै भगवान्नैं अर्जुनविषे निरतिशयउत्कृष्टता सूचनकरी ॥ अर्थात् ऐसीनिरतिशयउत्कृष्टतावाला तूंअर्जुन इसमनकेनिग्रहकरणेविषे अवश्य करिकै समर्थहोवैंगा इति ॥ हेअर्जुन पूर्वजो तुमनैं यहवचनकह्याथा ॥ जोयहमन दुर्निग्रहहै ॥ अर्थात् प्रारब्धकर्मकीप्रबलतातैं असंयतात्मापुरुषकूं सोमन दुःखकरिकैभी निग्रहकरणेकूंअशक्यहै ॥ तथा यहमन स्वभावतैंहीं चंचलहै ॥ ईहां (दुर्निग्रहं) यहजोमनकाविशेषण कथनकन्याहै ॥ सो पूर्वउक्त (प्रमाथि बलवत् दृढं) यातीनविशेषणोंकूं एकठाकरिकैकथनकन्याहै ॥ सोइसतुमारेकहणेविषे किंचित्मात्रभी संशयहैनहीं ॥ अर्थात् सोतुमाराकहणा सत्यहै ॥

तथापि संयतात्मापुरुषनैंतौं समाधिमात्ररूपउपायकरिकै तथायोगीपुरुषनैं अभ्यासवैराग्यरूपउपायकरिकै सोमन निग्रहकरीताहै अर्थात् सोमन सर्ववृत्तियोंतैं शून्य करीताहै ॥ ईहां मनकेनहींनिग्रहकरणेहारे असंयतात्मापुरुषतैं मनकेनिग्रहकरणहारे संयतात्मापुरुषविषे विशेषताकेबोधनकरणेवासतै श्लोकविषे तु यह शब्द कथनकऱ्याहै ॥ और तामनकेनिग्रहंविषे अभ्यास वैराग्य यादोनोंकेसमुच्चयबोधनकरणेवासतै च यहशब्द कथनकरयाहै ॥ और (हेकौंतेय) यासंबोधन करिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकरया ॥ हमारेपिताकीभगिनीका तूं पुत्रहैं ॥ यातैं मैं भगवान् तुमारेकूं अवश्यकरिकैसुखकीप्राप्तिकरौंगा ॥ ईहां इसश्लोककेपूर्वार्द्धकरिकैं श्रीभगवान्नैं चित्तका हठनिग्रह नहींसंभवैहै यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ और श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै ताचित्तकाक्रमनिग्रहसंभवैहै यहअर्थ कथनकरया ॥ ईहांभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ तामनकानिग्रह दोप्रकारतैंहोवैहै ॥ एकतौं हठकरिकैमनकानिग्रहहोवैहै ॥ और दूसरा क्रमकरिकै मनकानि ग्रहहोवैहै ॥ तहां चक्षुश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाक्पाणिआदिकपंचकर्मइंद्रिय यहदशइंद्रिय जैसे गोलकमात्रकेनिरोधकरिकै हठतैं निग्रहकरयेजावैंहैं ॥ तैसे इसमनकूंभी मैं हठकरिकैनिग्रहकरौंगा ॥ इसप्रकारकीभ्रांति मूढपुरुषोंकूं होवैहै ॥ परंतु तिनइंद्रियोंकीन्यांई मनका हठमात्रतैंनिग्रहहोइसकैनहीं ॥ काहेतैं तामन केरहणेका गोलक जोहृदयकमलहै सोहृदयकमल निरोधकरणेकूंअशक्यहै ॥ यातैं तिसमनकाक्रमकरिकैनिग्रहकरणाहीं युक्तहै ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उपविश्योपविश्यैव चित्तज्ञेनमुहुर्मुहुः ॥ नशक्यतेमनोजेतुंविनायुक्तिमनिंदिताम् ॥ १ ॥ अंकुशेनविनामत्तोयथादुष्टमतंगजः ॥ अध्यात्मविद्याधिगमःसाधुसंगमएवच ॥ २ ॥ वासनासंपरित्यागःप्राणस्पंदनिरोधनम् ॥ एतास्तायुक्तयःपुष्टाःसंतिचित्तजयेकिल ॥ ३ ॥ सतीषुयुक्तिष्वेतासुहठान्नि यमयंतिये ॥ चेतस्तेदीपमुत्सृज्यविनिघ्नंतितमोंजनैः ॥ ४ ॥) ॥ अर्थयह ॥ चित्तकेस्वभावकूंजानणेहारेपुरुषनैं उत्तमयुक्तितैंविना केवल वारंवार आसन ऊपरिस्थितहोइकै यहमन जयकरिसकीतानहीं ॥ १ ॥ जैसे महामत्तदुष्टहस्ती अंकुशतैंविना वशहोइसकैनहीं ॥ तैसेयहमनभी उत्तमयुक्तियोंतैंविना वशहोइ सकैनहीं ॥ तेयुक्तियांयहहैं ॥ एकतौं अध्यात्मविद्याकीप्राप्ति दूसरा महात्माजनोंकासमागम ॥ २ ॥ तीसरा वासनावोंकापरित्याग चौथा प्राणोंकेस्पंदका निरोध यहच्यारियुक्तियांहीं तिसचित्तकेजयका उपायरूपहैं ॥ ३ ॥ इनच्यारोंयुक्तियोंकेविद्यमानहूएभी जेपुरुष चित्तका हठतैंनिग्रहकरेहैं ॥ तेपुरुष दीपककापरित्यागकरिकै तमकूं अंजनोंकरिकैनिवृत्त करेहैं ॥ ४ ॥ अब याहीं अर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ तहां क्रमकरिकैमनकेनिग्रहविषे एकतौं अध्यात्मविद्याकीप्राप्ति उपायहै ॥ काहेतैं साअध्यात्मविद्या दृश्यप्रपंचविषेतौं मिथ्यात्वकूंबोधनकरेहैं ॥ और द्रष्टासाक्षीआत्माविषेतौं परमार्थसत्य रूपताकूं तथापरमानंदस्वप्रकाशताकूं बोधनकरेहै ॥ ऐसेबोधहुएतैंअनंतर यहमन आपणेविषयभूतदृश्यपदार्थोंविषे मिथ्यात्वहेतुतैं प्रयोजनकेअभावकूंनिश्चयकर

ताहुआ यथाप्रयोजनवाले परमार्थसत्यपरमानंदस्वरूपद्रष्टाविषे स्वप्रकाशतारूपहेतुतैं आपणेअविषयताकूंनिश्चयकरताहुआ इंधनोंतैंरहितअग्निकीन्यांई सोमनआपे हीं शांतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं साअध्यात्मविद्याकीप्राप्ति मनकेनिग्रहका उपायरूपहै ॥ और जोपुरुष बोधनकऱ्येहुएतत्त्वकूंभी सम्यक् जानिसकतानहीं ॥ अथवाजोपुरुष बोधनकऱ्येहुएतत्त्वकूं विस्मरणकरिदेवैहै ॥ तिनदोनोंप्रकारकेपुरुषोंकूंतामनकेनिग्रहविषे साधुसमागमहीं उपायरूपहै ॥ काहेतैं तेमहात्माजन इसअधिकारीपुरुषकूं पुनःपुनःतत्त्वकाबोधनकरेहैं ॥ तथा पुनः पुनः तिसतत्वकास्मरणकरावेहैं ॥ और जोपुरुष विद्यामदादिकदुर्वासनाकरिकैपीडितहुआ तिससाधुसमागमकूंकरतानहीं ॥ तिसपुरुषकूंतौं पूर्वउक्तविवेककरिकै तावासनाकापरित्यागहीं मनकेंनिग्रहविषेउपायहै ॥ और तिनवासवोंकूभीअतिप्रबलहोणेतैं जोपुरुष तिन वासनावोंकेत्यागकरणेकूंभी समर्थनहींहै ॥ तिसपुरुषकूतौं प्राणोंकेस्पंदनकानिरोधहीं तामनकेनिग्रहका उपायहै ॥ काहेतैं प्राणोंकास्पंदतथावासना यहदोनोंहींचित्तकेप्रेरकहैं ॥ तिनदोनोंकेनिरोधहुएचित्तकीशांति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यहवार्ता वसिष्ठभगवान्नैंभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (द्वेबीजेचित्तवृक्षस्यप्राणस्पंदनवासने ॥ एकस्मिंश्चतयोःक्षीणेक्षिप्रंद्वेपिविनश्यतः ॥ १ ॥ प्राणायामदृढाभ्यासैर्युक्त्याचगुरुदत्तया ॥ आसनाशनयोगेनप्राणस्पंदोनिरुध्यते ॥ २ ॥ असंगव्यवहारित्वाद्भवभावनवर्जनात् ॥ शरीरनाशदर्शित्वाद्वासनानप्रवर्तते॥ ३ ॥ वासनासंपरित्यागाच्चित्तंगच्छत्यचित्तताम् ॥ प्राणस्पंदनिरोधाच्चयथेच्छसितथाकुरु ॥ ४ ॥ एतावन्मात्रकंमन्येरूपंचित्तस्यराघव ॥ यद्भावनंवस्तुनोंतर्वस्तुत्वेनरसेनच ॥ ५ ॥ यदानभाव्यतेकिंचिद्धेयोपादेयरूपियत् ॥ स्थीयतेसकलंत्यक्त्वातदाचित्तंनजायते ॥ ६ ॥ अवासनत्वात्सततंयदानमनुतेमनः ॥ अमनस्तातदोदेतिपरमात्मपदप्रदा ॥ ७ ॥) अर्थयह ॥ हेरामचंद्र इसचित्तरूपवृक्षके दोबीजहैं ॥ एकतौं प्राणोंकास्पंद दूसरा वासना ॥ तिनदोनोंबीजोंविषे एककेनाशहूए दोनों नाशहोइजावैहैं ॥ १ ॥ तहांप्राणायामकेदृढअभ्यासकरिकै तथागुरुनैंबताईयुक्तिकरिकैतथा आसनभोजनादिकोंकेनियमकरिकै सोप्राणोंकास्पंद निरोधकऱ्याजावैहै ॥ २ ॥ और असंगव्यवहारकेराखणेतैं तथाप्रपंचकेचिंतनकेपरित्यागतैं तथाशरीरकूंनाशवान्देखणेतैं इसअधिकारीपुरुषकी वासना प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ ३ ॥ और वासनाकेपरित्यागतैं तथाप्रस्पंदकेनिरोधतैं सोचित्त अचित्तभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ आगे जोतुमारीइच्छाहोवैसोकर ॥ ४ ॥ हेराघव बाह्यअनात्मपदार्थोंका जोवस्तुत्वरूपकरिकै तथारागकरिकै अंतरचिंतनहै इतनामात्रहींमैं चित्तकास्वरूपमानताहूं॥ ५॥ और जिसकालविषे यहपुरुष परित्यागकरणेयोग्य तथाग्रहणकरणेयोग्य किंचित्मात्रवस्तुकाभी चिंतनकरतानहीं ॥ किंतु सर्वकापरित्यागकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोचित्त उत्पन्नहोवैनहीं ॥ ६ ॥ और जिसकालविषे यहमनसर्ववासनावोंतैंरहितहोणेतैं किंचित्मात्रभीवस्तुका मननकरतानहीं ॥ तिसकालविषे अमनस्ता उत्पन्नहोवैहै ॥ जाअमनस्ता परमात्मपदकेदेणेहारीहै इति ॥ ७ ॥ इतनैंकहणेकरिकै यहदोउपाय सिद्धभये ॥ एकतौं प्राणस्पंदकेनिरोधवासतै अभ्यास

रूपउपाय दूसरा वासनाकेपरित्यागवासतै वैराग्यरूपउपाय ॥ और साधुसमागम तथाअध्यात्मविद्याकीप्राप्ति यहदोनोंउपायतौं अभ्यास वैराग्य यादोनोंकेउपपाद
कहोणेतैं अन्यथासिद्धहैं ॥ यातैं यहदोनोंउपाय अभ्यासवैराग्यदोनोंविषेहीं अंतर्भूतहैं ॥ इस कारणतैंहीं श्रीभगवानूनैं अभ्यास वैराग्य यहदोउपायहीं कथन
करेहै ॥ इसीअर्थकूं भगवानूपतंजलिभी योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (अभ्यासवैराग्याभ्यांतन्निरोधः ॥) अर्थयह ॥ पूर्वकथनकरीजे
प्रमाण विपर्ययविकल्प निद्रा स्मृति यहपांचप्रकारकीवृत्तियांहै ॥ तेपांचवृत्तियां असुरत्वरूपकरिकै क्लिष्टकहीजावैहैं और देवत्वरूपकरिकै अक्लिष्टकहीजावैहैं ॥
ऐसीसिर्ववृत्तियोंकाजोनिरोधहै ॥ अर्थात् इंधनतैंरहितअग्निकीन्यांई जोउपशमरूप परिणामविशेषहै ॥ सोनिरोध अभ्यासवैराग्य यादोनोंउपायोंकरिकैहोवैहै
इति ॥ यहवार्त्ता योगभाष्यविषे श्रीव्यासभगवानूनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांभाष्यवचनं ॥ (चित्तनदीनामोभयतोवाहिनीवहतिकल्याणायवहतिपापायच) ॥
अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकप्रसिद्धनदीयां निम्नभूमिविषेचलिके समुद्रविषेजाइकै परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जाचित्तरूपनदी विवेकरूपनिम्नभूमिविषे
चलिकै कैवल्यरूपफलविषे परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ साचित्तरूपनदी कल्याणवहा कहीजावेहै ॥ और जाचित्तरूपनदी अविवेकरूपनिम्नभूमिविषेचलिकै संसार
विषेपरिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ साचित्तरूपनदी पापवहा कहीजावैहै ॥ इसप्रकारतैं साचित्तरूपनदी दोनोंतरफचलैहै ॥ तहां विषयोंविषे वारंवार दोषदृष्टिकरिकै
उत्पन्नभयाजोवैराग्यहै ॥ तावैराग्यनैंतौं तिसचित्तरूपनदीका विषयोंकीतरफकाप्रवाह रोकीताहै ॥ और विवेकदर्शनरूपअभ्यासनैंतौं ताचित्तरूपनदीका प्रत्यक्‌आ
त्माविषे प्रवाहकरीताहै ॥ इसप्रकारतैं वैराग्य अभ्यास दोनोंकेअधीनहीं चित्तवृत्तियोंकानिरोधहै ॥ केवलवैराग्यतैं अथवा केवलअभ्यासतैं सोनिरोधहोवै
नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे तीव्रवेगकरिकैयुक्तजोनदीकाप्रवाहहै ॥ ताप्रवाहकूं काष्ठमृत्तिकादिकोंकासेतुबांधिकै निवृत्तकरिकै तहांसैंकुल्याखोदकै क्षेत्रकेसन्मुख
दूसराएकवक्रप्रवाह उत्पन्नकऱ्याजावैहै ॥ तैसे वैराग्यकरिकै चित्तरूपनदीकेविषयाभिमुखप्रवाहकूं निवृत्तकरिकै समाधिकेअभ्यासकरिकै प्रत्यक्‌प्रवाह उत्पन्न
कऱ्याजावैहै ॥ इसप्रकार वैराग्य अभ्यास दोनोंका चित्तकेनिरोधविषे भिन्नभिन्नद्वारहोणेतैं तिनदोनोंका समुच्चयहींसंभवैहै ॥ जोकदाचित् तिनदोनोंका एकहींद्वारहोवै ॥
तौं जैसे एकहींहोमविषे व्रीही यव दोनोंका एकहींद्वारहोणेतैं विकल्पहै ॥ तैसे वैराग्य अभ्यास यादोनोंकाभी विकल्पहींहोवैगा इति ॥ शंका ॥ मंत्र तप देव
ताध्यान आदिक क्रियारूपहैं ॥ यातैंतिनमंत्रादिकोंकातौं पुनःपुनःआवृत्तिरूपअभ्यास संभवैहै ॥ परंतु सर्वव्यापारोंकाउपरमरूपजोसमाधिहै ताकाकोईअभ्यास संभ
वतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्त करणेवासतै सोपतंजलिभगवान् इसप्रकारका अभ्यासकास्वरूप कहताभयाहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (तत्रस्थितौयत्नोऽभ्यासः) अर्थयह ॥
स्वस्वरूपविषेस्थित जोद्रष्टाशुद्धचिदात्माहै ताशुद्धचिदात्माविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहितचित्तकी जा प्रशांतवाहितारूप निश्चलस्थितिहै ॥ तास्थितिकेवासतै जोमानसउत्साह

रूपयत्नहै ॥ अर्थात् आपणेचंचलस्वभावतैं बाह्यप्रवाहवालेइसचित्तकूं मैं सर्वप्रकारतैंनिरोधकरौंगा याप्रकारकाजो मनविषेउत्साहविशेषहै ॥ सोउत्साहरूपयत्न वारंवार आवृत्तिकऱ्याहुआ अभ्यास कह्याजावैहै इति ॥ अन्यसूत्रं ॥ (सतुदीर्घकालनैरंतर्यसत्कारसेवितोदृढभूमिः ॥ अर्थयह ॥ सोपूर्वउक्तअभ्यास उद्वेगतैं रहितहोइकै दीर्घकालपर्यंत सेवनकऱ्याहुआ तथाव्यवधानकेअभावकरिकैं निरंतरसेवनकऱ्याहुआ तथाश्रद्धाअतिशयरूपसत्कारकरिकै सेवनकऱ्याहुआ दृढभूमिहोवैहै ॥ अर्थात् सोअभ्यास विषयसुखकीवासनावोंकरिकै चलायमानहोइसकैंनहीं ॥ तहां तिसअभ्यासका अदीर्घकालपर्यंत सेवनकीयेहुए ॥ तथा दीर्घकालपर्यंतसेवनकीयेहुएभी बीचमैंव्यवधानराखिकैसेवनकीयेहुए॥ तथा दीर्घकालनिरंतरसेवनकीयेहुएभी श्रद्धाअतिशयकेअभावहुए लय विक्षेपकषाय सुखास्वाद याच्या रोंकेनही निवृत्तहुए व्युत्थानसंस्कारोंकीप्रबलतातैं अदृढभूमिहुआ सोअभ्यास फलकीप्राप्तिवासतैं होवैगानहीं ॥ इसीकारणतैं पतंजलिभगवान्नैं दीर्घकाल नैरंतर्य सत्कार यहतीनोंकथनकरेहैं इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै अभ्यासकास्वरूप कथनकऱ्या ॥ अब वैराग्यकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहां वैराग्य दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं अपरवैराग्यहोवैहै ॥ और दूसरा परवैराग्यहोवैहै ॥ तहां यतमान व्यतिरेक एकेंद्रिय वशीकार याभेदकरिकै सोअपरवैराग्य च्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां पूर्वभूमिकाकेजयकरिकै उत्तरभूमिकाकेसंपादनकीविवक्षाकरिकै सोपतंजलिभगवान् चौथावशीकारनामावैराग्यही कथनकरताभयाहै॥ तहांसूत्रं (दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्यवशीकारसंज्ञावैराग्यम्) ॥ अर्थयह ॥ स्त्रीअन्न पान मैथुन ऐश्वर्य इत्यादिकविषय सर्वलोकोंकूंप्रत्यक्षहोणेतैं दृष्टविषय कहेजावैहैं ॥ और स्वर्ग विदेहता प्रकृतिलय इत्यादिकविषय केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैगम्यहोणेतैं आनुश्रविकविषय कहेजावैहै ॥ तिनदोनोप्रकारकेविषयोंकीतृष्णाकेहुएभी विवेकीन्यून अधिकताकरिकै यतमानादिकतीव्रवैराग्य सिद्धहोवैहै ॥ तहां इसजगत्‌विषे कौंनवस्तु सारहै तथाकौंनवस्तु असारहै इसवार्त्ताकूं मैंगुरुशास्त्रतैं निश्चयकरौं याप्रकारकाजोउद्योगहै ताकूं यतमाननामावैराग्य कहेहै ॥ और आपणेचित्तविषे पूर्वविद्यमानजेदोषहैं ॥ तिनदोषोंकेमध्यविषे अभ्यस्यमानविवेककरिकै इतनैंदोष पक्कहुए इतनेदोष बाकीरहतेहैं इसप्रकारतैं चिकित्साकीन्यांई जोविवेचनहै ताकूं व्यतिरेकनामावैराग्य कहेहैं ॥ और दृष्टआनुश्रविकविषयोंकीप्रवृत्तिकूं दुःखरूपजानिकै बाह्यइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकूंनहींउत्पन्नकरतीहुईभी तृष्णाका जोऔत्सुक्यमात्रकरिकै मनविषेअवस्थानहै ताकानाम एकेंद्रियनामावैराग्यहै ॥ और तिसमनविषेभी तृष्णाकेअभावकरिकै जोसर्वप्रकारतैं वैतृष्ण्यहै अर्थात् तृष्णाकीविरोधी ज्ञानप्रसादरूप जाचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम वशीकारनामावैराग्यहै ॥ सोवशीकारनामावैराग्य संप्रज्ञातसमाधिकातौं अंतरंगसाधनहोवैहै ॥ और असंप्रज्ञातसमाधिका बहिरंगसाधनहोवैहै ॥ ताअसंप्रज्ञातसमाधिकातौं परवैराग्यहीं अंतरंग साधनहोवैहै ॥ सोपरवैराग्यकास्वरूप पतंजलिभगवान्नैं योगसूत्रोंविषे यहकह्याहै॥ तहांसूत्रं॥ (तत्परंपुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यम्)॥ अर्थयह॥ संप्रज्ञातसमाधिकीदृढता

करिकै त्रिगुणात्मकप्रधानतैं पृथक्कऱ्येहुएपुरुषका साक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसतैं अनंतर संपूर्णतीनगुणोंकेव्यवहारोंविषे जोवैतृष्ण्यहोवैहै ॥ सोपरवैराग्य कह्याजावैहै ॥ अर्थात् सर्वतैंश्रेष्ठ फलभूतवैराग्य कह्याजावैहै तिसपरवैराग्यकी परिपाकतातैं चित्तकेउपशमकीपरिपाकताहोइकै शीघ्रहीं कैवल्यकी प्राप्तिहोवैहै इसी सर्वअभिप्रायकूंलेकै श्रीभगवान्नैं (अभ्यासेनतुकौंतेयवैराग्येणचगृह्यते) यहवचन कथनकरयाहै ॥ इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन पूर्वतुमनैं जोयहक ह्याथा तत्त्वज्ञानतैंभी प्रबलजोप्रारब्धकर्महै ॥ सोप्रारब्धकर्म आपणेफलकेदेणेवासतै मनकेवृत्तियोंकूं अवश्यकरिकैउत्पन्नकरैंगा वृत्तियोंतैंविना सोफलकाभोग बनतानहीं ॥ ऐसीमनकीवृत्तियोंकेउत्पन्नहुए तिनवृत्तियोंकानिरोध कऱ्याजावैनहीं इति ॥ सोइसकाउत्तर अब तूंश्रवणकर ॥

(मू० श्लो०) असंयतात्मनायोगोदुष्प्रापइतिमेमतिः ॥ वश्यात्मनातुयततताशक्योवाप्तुमुपायतः ॥ ३६ ॥ असंयतात्मना । योगः । दुष्प्रापः । इति । मे । मतिः । वश्यात्मना । तु । यतता । शक्यः । अवाप्तुम् । उपायतः ॥ ३६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन असंय तात्मा पुरुषनैं सोयोग दुःखकरिकैभीनहींपाइसकीताहै यहवार्त्ता हमारेकूंभी संमतहै तौभी यतमान वश्यात्मापुरुषनैं उपायतैं प्राप्तहोणेकूं शक्यहै ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तत्वसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुएभी वेदांतशास्त्रकेव्याख्यानादिकोंविषे चित्तकीसंलग्नतातैं अथवा आलस्यादिकदोषतैं अभ्यासवैराग्यकरिकै नहींनिरु द्धकऱ्याहैअंतःकरणजिसनैं ताकानाम असंयतात्माहै ॥ ऐसाअसंयतात्मापुरुष यद्यपि तत्त्वसाक्षात्कारवालाभीहै ॥ तथापि सोअसंयतात्मापुरुष प्रारब्धकर्म कृतचित्तकीचंचलतातैं मनकीसर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकूं दुःखकरिकैभी प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ इसप्रकारकावचन जोतुमनैं कह्याहै ॥ सोतुमाराकहणा हमारे कूंभी संमतहै ॥ अर्थात् सोतुमाराकहणा यथार्थहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् असंयतात्मापुरुष जबी तिसयोगकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ तबी दूसराकौंनपुरुष तिसयोग कूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैंहै (वश्यात्मनातुइति) वैराग्यकेपरिपाककरिकै वासनाकेक्षयहुए वश्यहुआहै क्या स्वाधीनहुआहै अर्थात् विषयोंकीपरतंत्रतातैंशून्यहुआहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम वश्यात्माहै ॥ ईहां (वश्यात्मनातु) यावचनकेअंतविषे स्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्त असंयतात्मापुरुषतैं इसवश्यात्मापुरुषविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैहै ॥ अथवा निश्चयार्थकहै ॥ तथा जोपुरुष वैरा ग्यकरिकै चित्तरूपनदीकेविषयाभिमुखप्रवाहकूंरोकिकै प्रत्यक्आत्माकेअभिमुखताकाप्रवाहकरणेवासतै पूर्वउक्तअभ्यासकूंकरैहै ताकानाम यततहै ॥ ऐसाव श्यात्मायतमानपुरुषहीं चित्तकीचंचलताकरणेहारेप्रारब्धकर्मोंकाभी अभिभवकरिकै तासर्वचित्तवृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकूं प्राप्तहोणेवासते समर्थहोवैहै ॥ शंका ॥

अत्यंतबलवान् जेप्रारब्धकर्महैं ॥ तिनप्रारब्धकर्मोंकाअभिभव किसप्रकारतैंहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (उपायतःइति) हेअर्जुन पुरुष प्रयत्नरूपजोउपायहै ॥ तिसउपायतैंहीं तिसप्रारब्धकर्मकाअभिभवहोवैहै ॥ काहेतैं सोलौकिकपुरुषप्रयत्न तथावैदिकपुरुषप्रयत्न ताप्रारब्धकर्मकीअपेक्षाक रिकै प्रबलहै ॥ जोकदाचित् तापुरुषप्रयत्नकूं प्रारब्धकर्मतैंप्रबल नहींअंगीकारकरीये ॥ तौं लौकिकपुरुषोंकें कृषिआदिक प्रयत्नकूं तथावैदिकपु रुषोंकेंज्योतिष्टोमादिकप्रयत्नकूं व्यर्थताप्राप्तहोवैंगी ॥ और सर्वकार्यविषे प्रारब्धकर्मके सत्त्वकातथाअसत्त्वका विकल्पहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ ताकरिकै किसी भीकार्यविषेप्रवृत्तिनहींहोवैंगी ॥ काहेतैं प्रारब्धकर्मकेसत्त्वहुए तिसतैंहींफलकीप्राप्तिहोइजावैंगी ताफलकीप्राप्तिविषेपुरुषप्रयत्नका कछुप्रयोजननहींहै।।और प्रारब्धकर्मके असत्त्वहुएतैं सर्वप्रकारतैं फलकीप्राप्तिहोणीअसंभवहै यातैंभी पुरुषप्रयत्नका कछुप्रयोजन नहींहै ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै कोईभीपुरुष किसीभीलौकिक वैदिककार्यविषेप्रवृत्तहोवैंगानहीं ॥ शंका ॥ सोप्रारब्धकर्म आप अदृष्टरूपहै ॥ जोअदृष्टकारणहोवैहै सो दृष्टकारणतैंविना कार्यका जनकहोवैनहीं ॥ किंतु दृष्टका रणकीसहायताकरिकैहीं सोअदृष्टकारण कार्यकाजनकहोवैहै ॥ यातैं अदृष्टकारणरूप सोप्रारब्धकर्मभी दृष्टसाधनसंपत्तितैंविना फलकीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहो वैनहीं ॥ यातैं कृषिआदिकलौकिककार्योंविषे तथाज्योतिष्टोमादिकवैदिककार्योंविषे ताप्रारब्धकर्मकूं सोपुरुषप्रयत्न अवश्यअपेक्षितहै ॥ समाधान ॥ यहवार्त्ता तौं योगाभ्यासविषेभी समानहींहै ॥ काहेतैं तायोगाभ्यासकरिकैसाध्यजाजीवन्मुक्तिहै ॥ ताजीवन्मुक्तिकूंभी सुखातिशयरूपताहोणेतैं प्रारब्धकर्मकेफलविषेहीं अंतर्भावहै ॥ याकारणतैंहीं अध्यात्मशास्त्रोंविषे ताजीवन्मुक्तिकूं अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकाफलरूप कथनकर्‍याहै ॥ यातैं ताजीवन्मुक्तिरूपफलकीप्राप्तिवासतै दृष्टकारणरूप योगाभ्यासकासंपादनकरणा संभवैहै ॥ अथवा तत्त्ववेत्तापुरुषके देहइंद्रियादिकसंघातकीस्थितिकूंदेखिकै जैसे प्रारब्धकर्मकूं तत्त्वज्ञानतैंप्रबलता कल्पनाकरीजावैहै ॥ तैसे तिसप्रारब्धकर्मतैंभी सोयोगाभ्यास प्रबलहोवौ ॥ काहेतैं शास्त्रप्रतिपादितयत्नकूं सर्वतैंप्रबलताहींदेखणेविषेआवैहै ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठ भगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सर्वमेवेहहिसदासंसारेरघुनंदन ॥ सम्यक्प्रयुक्तात्सर्वेणपौरुषात्समवाप्यते ॥ १ ॥ उच्छास्त्रंशास्त्रितंचेतिपौरुषंद्विविधं स्मृतम् ॥ तत्रोच्छास्त्रमनर्थायपरमार्थायशास्त्रितम् ॥ २ ॥ शुभाशुभाभ्यांमार्गाभ्यांवहंतीवासनासरित् ॥ पौरुषेणप्रयत्नेनयोजनीयाशुभेपथि ॥ ३ ॥ अशुभेषुसमा विष्टंशुभेष्वेवावतारय ॥ स्वमनःपुरुषार्थेनबलेनबलिनांवर ॥ ४ ॥ प्रागभ्यासवशाद्यातियदातेवासनोदयम् ॥ तदाभ्यासस्यसाफल्यंविद्धित्वमरिमर्दन ॥ ५ ॥ संदि ग्धायामपिभृशंशुभामेवसमाहर ॥ शुभायांवासनावृद्धौ तातदोषोनकश्चन ॥ ६ ॥ अव्युत्पन्नमनायावद्भवानज्ञाततत्पदः ॥ गुरुशास्त्रप्रमाणैस्त्वंनिर्णीतंतावदाचर॥७॥ ततःपक्वकषायेणनूनंविज्ञातवस्तुना ॥ शुभोप्यसौत्वयात्याज्योवासनौघोनिरोधिना ॥ ८ ॥) ॥ अर्थयह ॥ हेरघुनंदन इसलोकविषे सर्वपुरुष सम्यक्करेहुएपुरुष

प्रयत्नतैं सर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसाकोईपदार्थहैनहीं जोपुरुषप्रयत्नकरिकैनहींप्राप्तहोवै ॥ १ ॥ हेरामचंद्र सोपुरुषप्रयत्नरूपपौरुष दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं उत्शास्त्रहोवैहै दूसराशास्त्रितहोवैहै ॥ तहां शास्त्रकरिकैप्रतिषिद्धपौरुषकूं उत्शास्त्रकहेहैं ॥ और शास्त्रकरिकैविहितपौरुषकूं शास्त्रितकहेहैं ॥ तहां उत् शास्त्रपौरुषतौं नरककीप्राप्तिवासतैहींहोवैहै ॥ और शास्त्रितपौरुषतौं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा मोक्षकीप्राप्तिवासतैहींहोवैहै ॥ २ ॥ हेरामचंद्र यहवासनारूपनदी शुभ अशुभ यादोनोंमार्गोतैंवहनकरेहै ॥ तहां इसअधिकारीपुरुषनैं पुरुषप्रयत्नकरिकै यहवासनारूपनदी अशुभमार्गतैंरोकिकै शुभमार्गविषेप्रवृत्तकरणी ॥ ३ ॥ हेसर्वबलवान्पुरुषोंविषेश्रेष्ठरामचंद्र अशुभकर्मोंविषेप्रवृत्तहुएआपणेमनकूं तूं पुरुषप्रयत्नकरिकै तिनअशुभकर्मोतैंनिवृत्तकरिकै शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तकर ॥ ४ ॥ हेशत्रुवोंकूंनष्टकरणेहारारामचंद्र पूर्वलेअभ्यासकेवशतैं जबी तुमारीशुभवासना उत्पन्नहोवै ॥ तबीहीं तुमनैं आपणे अभ्यासकीसफलताजानणी ॥ ५ ॥ तावासनाके अनिर्णयहुएभी तूं निरंतर शुभवासनाकूंहीं संपादनकर ॥ हेपुत्र ताशुभवासनाकीवृद्धिहुए किंचित्मात्रभी दोषहोवैनहीं ॥ अशुभवासनाकीवृद्धितैंहीं दोषकीप्राप्ति होवैहै ॥ ६ ॥ हेरामचंद्र जबपर्यंत तूं अव्युत्पन्नमनवालाहै ॥ तथा परमपदकेज्ञानतैंरहितहै ॥ तबपर्यंत गुरुशास्त्रप्रमाणकरिकैंनिर्णीतअर्थकूंहीं तूं श्रद्धाभक्ति पूर्वक अनुकरणकर ॥ ७ ॥ हेरामचंद्र इसप्रकारकेउपायतैं जबी तुमारेपापरूपकषाय निवृत्तहोवैं ॥ तथा आत्मवस्तुकानिश्चयहोवै ॥ तथा मनकानिरोध होवै ॥ तबी तुमनैं ताशुभवासनाकाभी परित्यागहींकरणा इति ॥ ८ ॥ इत्यादिकअनेकवचनोंकरिकै वसिष्ठभगवान्नैं पुरुषप्रयत्नकीप्रबलताकथनकरीहै ॥ यातैं सोशास्त्रीयपुरुषप्रयत्न सर्वतैंप्रबलहै ॥ तापुरुषप्रयत्नकरिकै तिसप्रारब्धकर्मकाअभिभव संभवैहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्वउक्त अर्जुनकेप्रश्नका यहउत्तर सिद्धभया ॥ साक्षीआत्माविषेस्थित जोअविवेकसिद्धसंसारबंधहै तासंसारबंधकी विवेकसाक्षात्कारतैं निवृत्तिहुएभी प्रारब्धकर्मनैं स्थितकरयेहुएचित्तकी स्वाभाविकभीवृत्तियोंकूं जोपुरुष योगाभ्यासकेप्रयत्नकरिकै निवृत्तकरेहै ॥ सोजीवन्मुक्तपुरुष परमयोगी कह्याजावैहै ॥ और तिनचित्तवृत्तियोंकेनहींनिरोधकीयेहुए यहपुरुष तत्त्वज्ञानवालाहुआभी परमयोगी कह्याजावैनहीं ॥ किंतु अपरमयोगी कह्याजावैहै इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वग्रंथकरिकै यहवार्त्ता कथनकरी ॥ जिसपुरुषकूंतत्त्वज्ञानकीतौंप्राप्तिहुईहै ॥ परंतु जीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहुईनहीं ॥ सोपुरुष अपरमयोगी कह्याजावैहै ॥ और जिसपुरुषकूं तत्त्वज्ञान कीभी प्राप्तिहुईहै तथाजीवन्मुक्तिकीभी प्राप्तिहुईहै ॥ सोपुरुष परमयोगी कह्याजावैहै इति ॥ तहां अपरमयोगी तथापरमयोगी दोनोंका तत्त्वज्ञानकरिकै अज्ञानकेनाशहुएभी जबपर्यंत प्रारब्धकर्म विद्यमानहै तबपर्यंत देहइंद्रियसंघात बन्यारहेहै ॥ और ताप्रारब्धकर्मका जबी भोगतैंनाशहोवैहै तबी तिनदोनोंका देहइंद्रियसंघातभी नाशहोइजावैहै ॥ और एकवार नाशकूंप्राप्तहुआ सोसंघातपुनःकदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं तासंघातकेउत्पादक अविद्याका

कर्म तिनतत्त्ववेत्तापुरुषोंके नाशहोइगयेहैं ॥ यातैं तिनदोनोंप्रकारकेविद्वान्पुरुषोंकूं विदेहकैवल्यकीप्राप्तिविषे किंचित्मात्रभी शंकानहींहै ॥ परंतु जोपुरुष पूर्वकरचे हुएनिष्कामकर्मोंकरिकै विविदिषापर्यंत चित्तशुद्धिकूंप्राप्तहुआहै ॥ तिसतैंअनंतर शास्त्रविधिपूर्वक तिनसर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै विविदिषारूप परमहंससंन्यासकूं प्राप्तहुआहै ॥ तिसतैंअनंतर श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठजीवन्मुक्तसंन्यासीगुरुकेसमीपजाइकै तिसब्रह्मवेत्तागुरुतैं वेदांतमहावाक्यकेउपदेशकूंप्राप्तहोइकै ताउपदेशविषे असंभावनाविपरीतभावनारूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिवासतै (अथातोब्रह्मजिज्ञासा) इससूत्रतैंआदिलैके (अनावृत्तिःशब्दात्) इससूत्रपर्यंत समग्र च्यारिअध्यायरूप उत्तर मीमांसाशास्त्रकारिकै श्रवण मनन निदिध्यासन यातीनोंकूं गुरुकेप्रसादतैं करणेकाआरंभकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष श्रद्धावान्हुआभी आयुष्कीअल्पताकरिकै अल्पप्रयत्नवालाहोणेतैं इसजन्मविषे आत्मज्ञानकूंप्राप्तहुआनहीं ॥ किंतु ताश्रवणमनननिदिध्यासनकेकरतेहुएहीं मध्यविषे मरणकूंप्राप्तहोइगया ॥ सोपुरुष आत्मज्ञानतैंरहितहोणेतैं अज्ञानकेनाशतैंरहितहै ॥ यातैं सोपुरुष मोक्षकूंतौं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और तिसपुरुषनैं कर्मोंका तथाउपासनाका पूर्व परित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं सोपुरुष अर्चिरादिमार्गकारिकै उपासनासहितकर्मके देवलोकरूपफलकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथासोपुरुष धूमादिकमार्गकरिकै केवलकर्मोंके पितृलोकरूपफलकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोयोगभ्रष्टपुरुष कीटपतंगादिकभावकीप्राप्तिकरिकै कष्टगतिकूंहीं प्राप्तहोवैगा ॥ आत्मज्ञानतैंरहितहुआ देवयानपितृयाणमार्गके असंबंधवालाहोणेतैं ॥ वर्णआश्रमकेआचारतैंभ्रष्टहुएपुरुषकीन्यांई ॥ अथवा सोपुरुष ताकष्टगतिकूंनहींप्राप्तहोवैगा ॥ शास्त्रनिषिद्धकर्मोंकेअभाववालाहोणेतैं ॥ वामदेवकीन्यांई ॥ इसप्रकारकेसंशयकरिकै व्याकुलहुआहैमनजिसका ऐसाजोअर्जुनहै ॥ सोअर्जुनतासंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ अयतिःश्रद्धयोपेतोयोगाच्चलितमानसः ॥ अप्राप्ययोगसंसिद्धिंकांगतिंकृष्णगच्छति ॥ ३७ ॥

अयतिः । श्रद्धया । उपेतः । योगात् । चलितमानसः । अप्राप्य । योगसंसिद्धिं । कां । गतिम् । कृष्ण । गच्छति ॥ ३७ ॥

(इतिपद०) हेकृष्ण जोपुरुष अल्पप्रयत्नवालाहै तथाश्रद्धाकरिकै युक्तहै तथातत्त्वसाक्षात्कारतैं चलायमानहुआहै मनजिसका सोपुरुष तत्त्वज्ञानकेफलकूं नप्राप्तहोइकै मरणकूंप्राप्तहुआ किसं गतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ३७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकृष्णभगवन् आयुष्कीअल्पताकारिकै जोपुरुष अल्पप्रयत्नवालाहै ॥ तथागुरुवेदांतवाक्योंविषे विश्वासबुद्धिरूपजाश्रद्धाहैताश्रद्धाकरिकैयुक्तहै ॥ ईहां श्रद्धा आपणेसहवर्तिशमदमादिकोंकाभी उपलक्षणहै ॥ तेश्रद्धासहितशमदमादिक (शांतोदांतउपरतस्तितिक्षुःश्रद्धावित्तोभूत्वात्मन्येवात्मानंपश्यति) इसश्रुतिविषे कथनकरेहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक ॥ तथाइसलोकपरलोककेफलभोगोंविषेवैराग्य ॥ तथा शम दम उपरति तितिक्षा

श्रद्धा समाधान यहषट्संपत्ति ॥ तथामोक्षकीइच्छारूप मुमुक्षुता ॥ इनच्यारिसाधनोंकरिकै संपन्नहुआ जोपुरुष श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवा क्योंके श्रवणमननादिकोंकूंकरताभीहै ॥ परंतु आयुष्कीअल्पताकरिकै तथामरणकालविषेइंद्रियोंकीव्याकुलताकरिकै तिनश्रवणादिकसाधनोंके दृढअनुष्ठानकेअसं भवतैं जोपुरुष योगतैं चलितमनवालाहुआहै ॥ ईहां श्रवणमननादिकोंकेपरिपाककरिकै उत्पन्नभयाजोतत्त्वसाक्षात्कारहै ताकानाम योगहै ॥ तायोगतैं चलितहु आहै क्या तिसयोगकेफलकूंनहींप्राप्तहुआहै मनजिसका ऐसाजोपुरुषहै ॥ सोपुरुषतायोगसंसिद्धिकूं नप्राप्तहोइकै अर्थात् तत्त्वसाक्षात्काररूपयोगकरिकैप्राप्तहोणे हारी जाअपुनरावृत्तिसहित कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिहै ताकानाम योगसंसिद्धिहै ताकूं नप्राप्तहोइकै अतत्त्वज्ञहुआहीं मध्यविषेमृत्युकूंप्राप्तहुआ किसगतिकूंप्राप्त हुआ किसगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष सुगतिकूंप्राप्तहोवैहै अथवा दुर्गतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसपुरुषनैं नित्यनैमित्तिककर्मोंकातौं परि त्यागकऱ्याहै ॥ तथाज्ञानकीउत्पत्तिहुईनहीं ॥ यातैं तिसपुरुषकूं दुर्गतिकेप्राप्तिकीभीसंभावनाहोवैहै ॥ और तिसपुरुषनैं शास्त्रउक्तमोक्षसाधनोंकाअनुष्ठानक ऱ्याहै तथाशास्त्रप्रतिषिद्धकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं तिसपुरुषकूं सुगतिकेप्राप्तिकीभीसंभावनाहोवैहै इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ अब इसीपूर्वउक्तसंशयकेबीज कूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिवनश्यति ॥ अप्रतिष्ठोमहाबाहोविमूढोब्रह्मणःपथि ॥ ३८ ॥ कच्चित् । न । उभय विभ्रष्टः । छिन्नाभ्रम् । इव । नश्यति । अप्रतिष्ठः । महाबाहो । विमूढः । ब्रह्मणः । पथि ॥ ३८ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेमहान्बाहुवाले कृष्ण ब्रह्मप्राप्तिके ज्ञानरूपमार्गविषे विमूढ तथाकर्मउपासनातैंरहित ऐसाउभयभ्रष्टपुरुष विच्छिन्नहुएअभ्रकी न्यांई क्युं नहीं नाशकूंप्राप्तहोवैगा ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहाबाहो अर्थात् सर्वभक्तजनोंके सर्वउपद्रवोंके निवृत्तकरणेविषे समर्थहैंच्यारोंभुजाजिसकी अथवा सर्वभक्तजनोंकेप्रति धर्म अर्थ काम मोक्ष याच्यारिप्रकारकेपुरुषार्थदेणेविषे समर्थहैंच्यारिभुजाजिसकी ताकानाम महाबाहुहै ॥ ईहां (हेमहाबाहो) यासंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे स्वप्र श्ननिमित्तकक्रोधकाअभाव सूचनकऱ्या ॥ तथा तिसप्रश्नकेउत्तरदेणेकासामर्थ्य सूचनकऱ्या ॥ और (कच्चित्) यहपद अभिलाषासहितप्रश्नकावाचकहै ॥ सोदि खावैहैं ॥ हेभगवन् जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिके आत्मज्ञानरूपमार्गविषे विमूढहै ॥ अर्थात् ताब्रह्मआत्माकेऐक्यसाक्षात्कारकीउत्पत्तितैंरहितहै ॥ तथा जोपु रुष अप्रतिष्ठ है अर्थात् पितृयाणमार्गविषे गमनकासाधनरूपजोकर्महै तथादेवयानमार्गविषे गमनकासाधनरूपजाउपासनाहै ता कर्म उपासना दोनोंतैंरहितहै ॥ जिसका

रणतैं उपासनासहितसर्वकर्मोंका तिसपुरुषनैं पूर्वहीं परित्यागकऱ्याहै ॥ ऐसाजोउभयभ्रष्टपुरुषहै ॥ अर्थात् कर्ममार्गतैं तथाज्ञानमार्गतैं दोनोंतैं भ्रष्टहै ॥ ऐसापुरुष छिन्नअभ्रकीन्यांई क्युं नाशकूंनहींप्राप्तहोइकै अर्थात् जैसे वायुनै पूर्वमेघतैंपृथक्कऱ्याजोअभ्रहैं सोअभ्र जैसे पूर्वमेघतैंभ्रष्टहोइकै तथाउत्तरमेघकूंनप्राप्तहोइकै वृष्टि केअयोग्यहुआ मध्यविषेहीं नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोयोगभ्रष्टपुरुषभी पूर्वकर्ममार्गतैंविच्छिन्नहुआ तथाउत्तरज्ञानमार्गकूंनहींप्राप्तहुआ मध्यविषेहीं नाशकूंप्राप्त होवैंगा ॥ ऐसायोगभ्रष्टपुरुष कर्मकेफलकूं तथाज्ञानके फलकूं प्राप्तहोणेवासतै अयोग्यनहींहैक्याइति ॥ इतनैंकेंहणेकारकैं ज्ञान कर्म दोनोका समुच्चयभी निराकरण कऱ्या ॥ काहेतैं इससमुच्चयपक्षविषे ज्ञानकेफलकेअलाभहुएभी कर्मकेफलकालाभ संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तासमुच्चयकूंकरणेहारेपुरुषविषे उभयभ्रष्टपणा संभवता नहीं ॥ ईहांजोकोईयहशंकाकरै ॥ तिसपुरुषकूं कर्मोंकेसंभवहुएभी तिसपुरुषनैं कर्मोंकेफलकीकामनाका परित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं कर्मकरतेहुएभी तिसपुरुषविषे उभयभ्रष्टपणा संभवहोइसकेहै ॥ सोयहशंकाभीसंभवैनही ॥ काहेतैं जैसे सकामकर्मोंकाफल होवैहै ॥ तैसे निष्कामकर्मोंकाभी फलहोवैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्व आप स्तंवऋषिकावचनप्रमाणदेकै कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ज्ञान कर्म दोनोंकेसमुच्चयकूंअनुष्ठानकरणेहारेपुरुषऊपरि यहप्रश्ननहींहै ॥ किंतु सर्वकर्मोंकेत्यागीसंन्यासी ऊपरिहीं यहप्रश्नहै ॥ जिसकारणतैं अनर्थकेप्राप्तिकीशंका तिससर्वकर्मोंकेत्यागीसंन्यासीविषेहीं संभवहोइसकेहै इति ॥ ३८ ॥ अब इसपूर्वउक्तसंशयकेनिवृत्तक रणेवासतै सोअर्जुन अंतर्यामीकृष्णभगवान्केप्रति प्रार्थनाकरैहै ॥

(मू० श्लो०) एतन्मेसंशयंकृष्णछेत्तुमर्हस्यशेषतः ॥ त्वदन्यःसंशयस्यास्यच्छेत्तानह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥ एतत्[३] । मे[२] । संशयं[१] । कृष्ण छेत्तुम् । अर्हसि । अशेषतः । त्वदन्यः । संशयस्य[११] । अस्य[१०] । छेत्ता[१२] । न[१३] । हि । उपपद्यते ॥ ३९ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेकृष्ण हेमारे इस संशयकूं अशेषतैं निवृत्तकरणेकूं आपहीं योग्यहो जिसकारणतैं तुमारेतै अन्यकोईभी इस संशयके छेदनकरणेहारा नहीं[१३] संभवैहै ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकृष्णभगवन् पूर्वदोश्लोकोंकरिकै हमनैं दिखायाजोआपणासंशयहै ॥ तिसहमारे संशयकूं अशेषतैंनिवृत्तकरणेकूं अर्थात् तासंशयकेमूलभूत जेअधर्मादिकहैं तिनअधर्मादिकोंकेउच्छेदनपूर्वक तासंशयकेनिवृत्तकरणेकूं एकआपही योग्यहो॥ शंका ॥ हेअर्जुन मेरेतैंअन्य कोईऋषि अथवा कोईदेवता तुमारे इससंशयकूंनिवृत्तकरैंगा ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुनकहेहै (त्वदन्यःइति) हेभगवन् सर्वज्ञ तथासर्वशास्त्रोंकाकर्त्ता तथापरमगुरुरूपतथापरमकृपालु ऐसेजोआप परमेश्वरहो ॥ तिसआपतैंभिन्न जितनैंकीऋषिहैं तथाजितनैंकीदेवताहैं तेसर्व अनीश्वरहोणेतैं असर्वज्ञही है यातैं कोईऋषि तथा कोई देवता

इसयोगभ्रष्टपुरुषकेपरलोकगतिविषयक हमारेसंशयके सम्यक्उत्तरदेकरिकै नाशकरणेहारा संभवतानहीं ॥ यातैं सर्वकापरमगुरु तथासर्वअर्थकूंप्रत्यक्षदेखणेहारा आप ईश्वरहीं इसहमारेसंशयके निवृत्तकरणेकूंयोग्यहो इति ॥ ३९ ॥ ❋ ॥ इसप्रकार अर्जुनकी योगीपुरुषकेनाशकीशंकाकूं निवृत्तकरणेवासते श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ पार्थनैवेहनामुत्रविनाशस्तस्यविद्यते ॥ नहिकल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिंतातगच्छति ॥ ४० ॥ पार्थ । न । एव । इह । न । अमुत्र । विनाशः । तस्य । विद्यते । न । हि । कल्याणकृत् । कश्चित् । दुर्गतिं । तात । गच्छति ॥ ४० ॥ (इति पदच्छेदः) हेपार्थ तिसयोगभ्रष्टपुरुषका इसलोकविषे कदाचित्भी विनाश नहीं होवैहै तथा परलोकविषेभी विनाश नहीं होवैहै जिसंकारणतैं हेतात शास्त्रविहितकारी कोईभीपुरुष दुर्गतिकूं नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन उभयभ्रष्टहूआ सोयोगीपुरुष नाशकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहजोवचन पूर्वतुमनैं कथनकऱ्याथा ॥ तिसवचनकाक्याअर्थहै ॥ क्यासोपुरुष वेदविहितकर्मोंकेपरित्यागकरणेतैं इसलोकविषे किसीप्रमादीपुरुषकीन्यांई श्रेष्ठपुरुषोंकरिकै निंदाकरणेयोग्यहोवैहै ॥ अथवा सोपुरुष परलोकविषे निकृष्टगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जापरलोकविषेनिकृष्टगति श्रुतिनैं कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अथैतयोःपथोर्नकतरेणचनतेकीटाःपतंगायदिदंदशूकम्) ॥ अर्थयह ॥ देवलोककेप्राप्तिकाजो देवयानमार्गहै ॥ तथापितृलोकके प्राप्तिकाजोपितृयाणमार्गहै ॥ तिनदोनोंमार्गोविषे एकमार्गविषेभी जेपुरुष प्रवृत्तनहींहोवैहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष कीटपतंगमशकादि कक्षुद्रशरीरोंकूं वारंवार प्राप्तहोवैहैं इति ॥ सोयहदोनोंप्रकारकानाश तिसयोगभ्रष्टपुरुषका होवैनहीं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान्कहेहै ॥ हेपार्थ जिसपुरुषनैं शास्त्र उक्तविधिपूर्वकसर्वकर्मोंकापरित्यागरूपसंन्यासकऱ्याहै ॥ तथा जोपुरुष सर्वतैंविरक्तहुआहै ॥ तथा जोजोपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूं करैहै ॥ तथा जोपुरुष तिनश्रवणमननादिकोंकेकरतेहुएहीं मध्यविषे मरणकूंप्राप्तहुआहै ॥ ऐसाजोयोगभ्रष्टपुरुषहै ॥ तिसयोगभ्रष्टपुरुषका इसलोकविषे तथापरलोकविषे विनाशहोवैनहीं ॥ इसीअर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहै (नहिकल्याणकृत्इति) हेतात जोकोईपुरुष किंचित्मात्रभी शास्त्रविहितअर्थका अनुष्ठानकरैहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषेतौं अपकीर्तिरूपदुर्गतिकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ और परलोकविषे कीटपतंगादिकशरीरोंकीप्राप्तिरूपदुर्गतिकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ जबी सामान्यतैं शास्त्रविहितअर्थकेअनुष्ठानकरणेहारापुरुषभीतादुर्गतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तबीसर्वतैंउत्कृष्ट सोयोगभ्रष्ट तादुर्गतिकूंनहींप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्या कहणाहै ॥ ईहां श्रीभगवान्नैं अर्जुनकूं हेतात यासंबोधनकरिकैजोकथनकऱ्याहै ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ तनोत्यात्मानंपुत्ररूपेणेतितातः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेआत्माकूंहीं पुत्ररूपकरिकैविस्तारकरै ताकूं तातकहेहैं ॥ इसरीतिसैं तातशब्द पिताकावाचकहै ॥ सोपिताहीं पुत्ररूपहोवैहै ॥ यातैं

तापुत्रकूंभी तातकहेहैं ॥ और शिष्यभी पुत्रकेसमानहींहोवैहै ॥ यातैं तिसपुत्रकेस्थानविषे शिष्यका जोतातयहसंबोधनहै ॥ सोतिसशिष्यऊपरि कृपाकीअतिशयताके सूचनवासतेहैं इति ॥ तहां पूर्वप्रश्नविषेजोयहवचनकह्याथा ॥ सोयोगभ्रष्टपुरुष कष्टगतिकूंप्राप्तहोवैहै अज्ञानीहुआ देवयानपितृयाणमार्गकेअसंबंधवालाहोणेतैं स्वधर्मतैंभ्रष्टपुरुषकीन्यांई ॥ सोयहकहणाभीअयुक्तहै ॥ काहेतैं सोयोगभ्रष्टपुरुष तादेवयानमार्गकेअसंबंधवालानहींहै ॥ किंतु तादेवयानमार्गकेसंबंधवालाहींहै ॥ यातैं ताअनुमानविषे सोहेतुहीं असिद्धहै अर्थात् तायोगभ्रष्टपुरुषविषे सोहेतुरहैनहीं ॥ काहेतैं पंचाग्निविद्याविषे यह वचन कह्याहै ॥ (यइत्थंविदुर्येचामीअरण्येश्रद्धांसत्यमुपासतेतेऽर्चिरभिसंभवंतीति ॥) इसश्रुतिविषे पंचाग्निकेजानणेहारेपुरुषोंकीन्यांई श्रद्धावाले तथासत्यवाले मुमुक्षुजनोंकूंभी देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ और श्रवणमननादिकोंकूंकरणेहारा जोयोगभ्रष्टहै तिसयोगभ्रष्टपुरुषकूं (श्रद्धावित्तोभूत्वा) इसपूर्वउक्तश्रुतिकरिकै साश्रद्धाभी प्राप्तहींहै ॥ तथा (शांतोदांतः) इसश्रुतिवचनकरिकै मिथ्याभाषणरूपजोवाक्इंद्रियकाव्यापारहै ताकानिरोधरूपसत्यभी तायोगभ्रष्टकूंप्राप्तहींहै ॥ काहेतैं श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियेंकेव्यापारका जोनिरोधहै ताहींकूं दमकहेहैं ॥ तादमकेप्राप्तहुए ॥ सोसत्यभीप्राप्तहींहैं ॥ अथवा योगशास्त्रविषे योगके अंगरूपकरिकै कथनकरेजे अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रहयहपंचयमहैं ॥ ताकेप्राप्तहुए सोसत्यभी प्राप्तहींहै ॥ और पूर्वउक्तस्थितिविषे स्थित सत्य शब्दकरिकै जोब्रह्मकाहींग्रहणकरीये ॥ तौंभीकोईहानिनहींहै ॥ काहेतैं वेदांतशास्त्रकेजेश्रवणादिकहैं तेश्रवणादिकभी तासत्यब्रह्मकाचिंतनरूपहींहैं ॥ यद्यपि जिस पुरुषकी जिसवस्तुविषे बुद्धिकीस्थितिहोवैहै सोपुरुष मरणतैंअनंतर तिसीहींवस्तुकूंप्राप्तहोवैहै यहनियम शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं सत्यब्रह्मकेचिंतन करणेहारेपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिकहणीसंभवैनहीं ॥ तथापि यहनियम सर्वत्रनहींसंभवैहै ॥ जिसकारणतैं पंचाग्निविद्याविषेहीं तानियमकाव्यभिचारहै ॥ यातैं जैसे पंचाग्निविद्यावालेपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे तिन सत्यब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेपुरुषोंकूंभी ब्रह्मलोककीप्राप्तिसंभवैहै ॥ और (संन्यासाद्ब्रह्मणःस्थानम्) इसस्मृतिनै संन्यासतैंभी ब्रह्मलोककीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और दिनदिनविषे भक्तिश्रद्धापूर्वक जोवेदांतशास्त्रकाविचारहै ॥ ताविचारकूं अतिकृच्छ्रकेफल कीतुल्यता स्मृतिविषेकथनकरीहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ श्रद्धा सत्य ब्रह्मविचार संन्यास याच्यारोंविषे एकएककूंभी ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीसाधनरूपता है ॥ जबी एकएककूंभी ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकीसाधनरूपताहै ॥ तबी तायोगभ्रष्टपुरुषविषेस्थित तिनच्यारोंकूं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीसाधनरूपताहै याकेविषेक्या कहणाहै ॥ इसीकारणतैं तैत्तिरीयशाखावालेब्राह्मण (तस्यहवाएवंविदुषोयज्ञस्य) इत्यादिकवचनोंकरिकै तायोगीपुरुषकेचरितकूं सर्वसुकृतरूप कथनकरतेभये हैं ॥ तथा स्मृतिविषेभी यहवार्त्ता कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (स्नातंतेनसमस्ततीर्थसलिलेसर्वापिदत्तावनिर्यज्ञानांचकृतंसहस्रमखिलादेवाश्चसंपूजिताः ॥ संसा

राचसमुद्धृताःस्वपितरस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौयस्यब्रह्मविचारणेक्षणमपिस्थैर्यंमनःप्राप्नुयात् ॥) अर्थयह ॥ जिसपुरुषकामन एकक्षणमात्रभी ब्रह्मविचारविषेस्थिरताकूं प्राप्तहुआहै ॥ तिसपुरुषनैं संपूर्णतीर्थोंकेजलविषेभी स्नानकरयाहै ॥ तथा तिसपुरुषनैं सर्वपृथ्वीभी दानकरीहै ॥ तथा तिसपुरुषनैं सहस्रयज्ञभीकरेहैं ॥ तथा तिसपुरुषनैं ब्रह्मादिकसर्वदेवताभी पूजनकरेहैं ॥ तथा तिसपुरुषनैं आपणेपितरभी संसारसमुद्रतैं उद्धारकरेहैं ॥ तथा सोपुरुष तीनलोकोंकरिकैभीपूज्यहै इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारतैं तायोगभ्रष्टपुरुषकूं शुभकारिताकरिकै दोनोंलोकविषे नाशकेअभावहुएभी दूसरा कौनफलप्राप्तहोवै है ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुएश्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू०श्लो०) प्राप्यपुण्यकृताँल्लोकानुषित्वाशाश्वतीःसमाः ॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेयोगभ्रष्टोभिजायते ॥ ४१ ॥ प्राप्य । पुण्यकृतान् । लोकान् । उषित्वा । शाश्वतीः । समाः । शुचीनां । श्रीमतां । गेहे । योगभ्रष्टः । अभिजायते ॥४१ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन सोयोगभ्रष्टपुरुष पुण्यात्मापुरुषोंकूंप्राप्तहोणेहारे लोकोंकूं प्राप्तहोइकै तहां बहुत संवत्सरपर्यंत निवासकरिकै तिसतैंअनंतर पवित्र श्रीमान्पुरुषोंके गृहविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ४१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष योगमार्गविषे प्रवृत्तहूआहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासकरयाहै ॥ तथा जोपुरुष निरंतर वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूंकरैहै ॥ इसप्रकारतैं श्रवणमननादिकोंकूंकरताहूआ जोपुरुष मध्यविषेहीं मरणकूंप्राप्तहूआहै ॥ ताकेविषेभी कोईकयोगभ्रष्टपुरुषतौं पूर्वअनुभवकरचेहूएभोगोंकीवासनाकेप्रादुर्भावतैंविषयोंकीइच्छाकरेहै ॥ और कोईकयोगभ्रष्टपुरुषतौं वैराग्यभावनाकीदृढतातैं तिनविषयोंकीइच्छाकरतानहीं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेयोगभ्रष्टोंविषे प्रथमयोगभ्रष्टकावृत्तांत इसश्लोकविषेकथनकरेहैं ॥ तहां उपासनासहित अश्वमेधादिकयज्ञोंकूंकरणेहारेपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्य जोब्रह्मलोकहै ॥ ताब्रह्मलोककूं सोयोगभ्रष्टपुरुष अर्चिरादिमार्गद्वारा प्राप्तहोइकै ताब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेआयुषपरिमाणसंवत्सरपर्यंत निवासकरिकै तिसतैंअनंतर पवित्र तथाविभूतिवाले महाराजचक्रवर्तिपुरुषोंकेकुलविषे भोगवासनाशेषकेसद्भावतैं अजातशत्रुजनकादिकोंकीन्यांई जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् भोगवासनाकीप्रबलतातैं सोयोगभ्रष्टपुरुष ब्रह्मलोककेअंतविषे सर्वकर्मोंके संन्यासकरणेकूंअयोग्य महाराजाहोवैहै इति ॥ ईहांएकहींब्रह्मलोकविषे (लोकान्) यहजोबहुवचन कथन कऱ्याहै ॥ सो ताब्रह्मलोकविषेस्थितभोगस्थानोंकेभेदकूंलैके कथनकऱ्याहै ॥ और श्रीमान्पुरुष धनकरिकैअनेकपापकर्मोंकूंकरतेहुए अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सोयोगभ्रष्टपुरुषभीश्रीमान्पुरुषोंकेगृहविषे जन्मकूंलैके अधोगतिकूंहीं प्राप्तहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं तिनश्रीमान्पुरुषोंका शुचि यहविशेषण कथनक

न्या है ॥ अर्थात् जेपवित्रश्रीमान्होवेहैं ते पापकर्मोंविषे धनादिकोंकूंखरचकरतेनहीं ॥ किंतुशुभकार्योंविषे धनादिकोंकूंखरचकरतेहुए पूर्वस्थानकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतमहान्स्थानकूंसंपादनकरेहैं इति ॥ ४१ ॥ ❁ ॥ ॥ अब विषयोंकीइच्छातैंरहितदूसरेयोगभ्रष्टकी मरणतैं अनंतरगतिकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अथवायोगिनामेवकुलेभवतिधीमताम् ॥ एतद्धिदुर्लभतरंलोकेजन्मयदीदृशम् ॥ ४२ ॥ अथवा । योगिनाम् । एव । कुले । भवति । धीमताम् । एतत् । हि । दुर्लभतरं । लोके । जन्म । यत् । ईदृशम् ॥ ४२ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन अथवा सोयो गभ्रष्टपुरुष ब्रह्मविद्यावाले दरिद्रीब्राह्मणोंके कुलविषे हीं जन्मलेवेहै जिसकारणतैं इसलोकविषे इसप्रकारका जोयह जन्महै सोयहजन्म अत्यंतदुर्लभहै ॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावैराग्यादिकशुभगुणोंकीअधिकताकरिकै विषयभोगवासनातैंरहितहै ॥ सोयोगभ्रष्टपुरुष मरणतैंअनंतर तिनपुण्यकारीपुरुषोंके लोकोंकूंनहींप्राप्तहोइकैहीं ब्रह्मविद्यावाले तथायोगाभ्यासवाले दरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ श्रीमान्राजाओंकेकुलविषे सोयोगभ्रष्टपुरुष जन्मकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेअर्जुन ऐसेब्रह्मवेत्तादरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषे जोतिसयोगभ्रष्टपुरुषकाजन्महै ॥ सोजन्म सर्वप्रमादकेकारणोंतैंरहितहोणेतैं दुर्लभतरहै ॥ तात्पर्य यह ॥ इसलोकविषे पवित्रश्रीमान्राजावोंकेगृहविषे जोयोगभ्रष्टपुरुषकाजन्महै ॥ सोजन्मभी अनेकसुकृतोंकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथामोक्षविषेपरिअवसानवालाहै ॥ यातैं सोजन्मभी दुर्लभहै ॥ और पवित्र तथाब्रह्मविद्यावाले ऐसेदरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषेजोजन्महै ॥ सोजन्म प्रमादकेहेतुभूत धनादिकपदार्थोंतैंरहितहोणेतैंता दुर्लभजन्मतैंभी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं यहजन्मदुर्लभतरहै ॥ इसरीतिसैं यहदूसरायोगभ्रष्ट स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रीमान्पुरुषोंकेगृहविषेजन्मकूं प्राप्तभयाजो प्रथमयोगभ्रष्टपुरुषहै ॥ तिसकूंचित्तकेविक्षेपकरणेहारे अनेकप्रकारकेनिमित्तप्राप्तहैं ॥ तेसर्वनिमित्त इसदूसरेयोगभ्रष्टकूं स्वभावतैंहीं अप्राप्तहैं ॥ तेचित्त केविक्षेपकरणेहारेनिमित्त शास्त्रविषे यहकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (मनोहराणांभोज्यानांयुवतीनांचवाससाम् ॥ वित्तस्यापिचसान्निध्याच्चलेच्चित्तंसतामपि ॥ तत्सान्निध्यंततस्त्यक्त्वामुमुक्षुर्दूरतोवसेत्) ॥ अर्थयह ॥ मनोहर भोजनकरणेयोग्यपदार्थोंकीसमीपतातैं तथामनोहरस्त्रीयोंकीसमीपतातैं तथामनोहर वस्त्रोंकीसमीपतातैं तथाधनकीसमीपतातैं श्रेष्ठपुरुषोंकाचित्तभी चलायमानहोइजावैहै ॥ तिसकारणतैं मुमुक्षुजन तिनसर्वपदार्थोंकीसमीपताकापरित्यागकरिकै दूरनिवासकरैइति ॥ यातैं सर्वभोगवासनावोंतैंरहितहोणेतैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरणेकूंयोग्य सोद्वितीययोगभ्रष्टपुरुष प्रथमयोगभ्रष्टतैंश्रेष्ठहै इति ॥ ४२ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेभगवन्

तायोगभ्रष्टपुरुषका शुचिश्रीमान्राजावोंकेगृहविषेजोजन्महै तथाब्रह्मविद्यावालेदरिद्रीब्राह्मणोंकेगृहविषेजोजन्महै तिनदोनोंजन्मोंकूं दुर्लभता किसहेतुतैं है ॥ ऐसी अर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्ताजन्मकीदुर्लभताविषे हेतुकहेहै ॥

(मू० श्लो०) तत्रतंबुद्धिसंयोगंलभतेपौर्वदेहिकम् ॥ यततेचततोभूयःसंसिद्धौकुरुनंदन ॥ ४३ ॥ तत्र । तं । बुद्धिसंयोगं । लभते । पौर्वदेहिकं । यतते । च । ततः । भूयः । संसिद्धौ । कुरुनंदन ॥ ४३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोयोगभ्रष्टपुरुष तिनदोनोंप्रकारकेजन्मोंविषे पूर्वदेहविषेप्रारंभकर्‍येहुए तिस ज्ञानकेश्रवणादिकसाधनकूं प्राप्तहोवैहै तिसतैंअनंतर मोक्षकेनिमित्त पुनः अधिक प्रयत्नकूंकरैहै ॥ ४३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मआत्माकेऐक्यसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै तिसयोगभ्रष्टपुरुषनैं पूर्वदेहविषेप्रारंभकर्‍येजे विवेकादिकसाधनचतुष्टय तथासर्वकर्मोंकासंन्यास तथाब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपगमन तथातागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणतथामनन तथानिदिध्यासन इत्यादिकसाधनथे ॥ तिनसाधनोंकेमध्यविषे जिसजिससाधनकूं जितनैंपर्यंत अनुष्ठानकरिकै सोयोगभ्रष्टपुरुष मरणकूंप्राप्तहुआथा तिसतिससाधनकूं तितनैंपर्यंतहीं सोयोगभ्रष्टपुरुष तिनदोनोंप्रकारके जन्मोंविषेप्राप्तहोवैहै ॥ कोई तिसजन्मविषे सोयोगभ्रष्टपुरुष पुनःआदिसैलेकेतिनसाधनोंकाप्रारंभकरैनहीं ॥ जैसे तीर्थकरणेकाउद्देशकरिकै आपणेग्रामसैंनिकस्याहुआपुरुष मार्गविषे किसी स्थानविषे रात्रिकूंशयनकरिकै प्रातःकालमैं तिसीस्थानतैं आगेचलैहै ॥ कोईपुनःआपणेग्रामतैंचलैनहीं ॥ हेअर्जुन सोयोगभ्रष्टपुरुष ताजन्मकूंपाइकै केवल तिनपूर्वलेसाधनमात्रकूंहीं प्राप्तनहींहोवैहै ॥ किंतु तिनपूर्वलेसाधनोंकीप्राप्तितैं अनंतर मोक्षकीप्राप्तिनिमित्त तिनपूर्वलेसाधनोंतैंभी पुनःअधिकसाधनोंकेसंपादन करणेकूं प्रयत्नकरैहै ॥ अर्थात् इसयोगभ्रष्टपुरुषनैं पूर्वजन्मविषे जाभूमिका संपादनकरीहै ॥ उत्तरजन्मविषे मोक्षकीप्राप्तिपर्यंत तिसतैंअगलीभूमिकावोंकूंहींसंपादनकरैहै ॥ ईहां (हेकुरुनंदन) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकर्‍या ॥ लोकविषे महान्प्रभाववाला तथाअत्यंतशुद्ध तथाअत्यंतश्रीमान् ऐसाजोकुरुराजाहै ताकुरुराजाकेकुलविषे तुमाराजन्महुआहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तूंअर्जुनभी कोईयोगभ्रष्टहींहै ॥ यातैं पूर्वजन्मोंकेसंस्कारोंकेवशतैं इसजन्मविषे तुमारेकूं थोडेहींप्रयत्नतैं आत्मज्ञानकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैगी इति॥ यहसर्ववार्ता वसिष्ठभगवान्नैंभी श्रीरामचंद्रकेप्रति कथनकरीहै ॥ तहां श्रीरामचंद्रनैं यहप्रश्नकर्‍याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (एकामथद्वितीयांवातृतीयांभूमिकामुत ॥ आरूढस्यमृतस्याथकीदृशीभगवन्मतिः ॥) अर्थयह ॥ हेभगवन् एकभूमिकाकूं अथवा द्वितीयभूमिकाकूं अथवा तृतीयभूमिकाकूं प्राप्तहोइकै मरणकूंप्राप्तभया

जोपुरुषहै तिसपुरुषकी तामरणतैंअनंतर किसप्रकारकीगति होवैहै इति ॥ तेसप्तभूमिका इसगीताकेतृतीयअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ इसरामचं द्रकेप्रश्नका यहअभिप्रायहै ॥ नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकपूर्वक तथाइसलोकपरलोककेविषयभोगोंतैंवैराग्यपूर्वक तथाशमदमादिषट्संपत्तिपूर्वक तथासर्वकर्मोंकेसं न्यासपूर्वक जाउत्कटमोक्षकीइच्छारूप मुमुक्षुताहै ताकानाम शुभइच्छाहै ॥ साशुभइच्छा प्रथमभूमिकाहै ॥ यहशुभइच्छा विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपहै ॥ तिसतैंअनंतर ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकाविचारकरणा ॥ यहविचारणानामा दूसरीभूमिकाहै यहदूसरीभूमिका श्रवणमननरूपहै ॥ तिसतैंअनं तर श्रवणमननतैंसिद्धभयाजोतत्त्वज्ञानहै तातत्त्वज्ञानविषे संशयतैंरहितहोणा ॥ यह तनुमानसानामा तीसरीभूमिकाहै ॥ यहतीसरीभूमिका निदिध्यासनरूपहै ॥ यहतीनोंभूमिका तत्त्वसाक्षात्कारका साधनरूपहैं ॥ और सत्त्वापत्तिनामा चतुर्थीभूमिकातौं तत्त्वसाक्षात्काररूपहींहै और असंसक्तिनामा पंचमीभूमिका तथापदा र्थाभावनीनामा षष्ठीभूमिका तथातुरीयानामा सप्तमीभूमिका यहतीनभूमिकातौं जीवन्मुक्तिकेहींअवांतरभेदहैं ॥ तहां चतुर्थीभूमिकाकूंप्राप्तहोइकै मरणकूंप्राप्तभया जोपुरुषहै ॥ तिसपुरुषकूं जीवन्मुक्तिकेअभावहुएभी विदेहमुक्तिकीप्राप्तिविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै॥ और पंचमी षष्ठी सप्तमी यातीनभूमिकावोंकूं प्राप्तभयाजो पुरुषहै॥ सोपुरुषतौं जीवताहुआभी मुक्तहींहै जबी सोपुरुष जीवताहुआभी मुक्तहींहै तबी तापुरुषके विदेहमोक्षविषेक्याकहणाहै॥यातैं चतुर्थी पंचमी षष्ठी सप्तमी याच्यारिभूमिकावोंविषेतौंकिंचित्मात्रभी शंकानहींहैं ॥ परंतु प्रथमा द्वितीया तृतीया यहजोतीनसाधनभूमिकाहैं ॥ तिनतीनभूमिकावोंविषेतौं इसपुरुषनैं सर्वकर्मोंकापरित्यागकर्‍याहै तथा आत्मज्ञानकीप्राप्तिभईनहीं यातै शंकासंभवैहै॥इसीकारणतैं श्रीरामचंद्रनैं तिनसाधनरूप तीनभूमिकावोंविषेहीं प्रश्नकर्‍याहै इति॥ इसप्रश्नकावसिष्ठभगवान्‌नैं यहउत्तरकह्याहै॥ तहांश्लोक॥ (योगभूमिकयोत्क्रांतजीवितस्यशरीरिणः ॥ भूमिकांशानुसारेणक्षीयतेसर्वदुष्कृतम् ॥ १ ॥ ततःसुरविमानेषु लोकपालपुरेषुच ॥ मेरुपर्वतकुंजेषुरमतेरमणीसखः ॥ २ ॥ ततःसुकृतसंभारेदुष्कृतेचपुराकृते ॥ भोगक्षयात्परिक्षीणेजायंतेयोगिनोभुवि ॥ ३ ॥ शुचीनांश्रीमतां गेहेगुप्तेगुणवतांसताम् ॥ जनित्वायोगमेवैतेसेवंतेयोगवासिताः ॥ ४ ॥ तत्रप्राग्भावनाभ्यस्तंयोगभूमिक्रमंबुधाः ॥ दृष्ट्वापरिपतंत्युच्चैरुत्तरंभूमिकाक्रमम् ॥ ५ ॥)अर्थयह ॥ जोपुरुष ज्ञानयोगकीभूमिकाकूंसंपादनकरिकै मरणकूंप्राप्तभयाहै॥तिसपुरुषके पूर्वलेपापकर्म तायोगभूमिकाकेअनुसार नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ १ ॥ तिसमरणतैंअनंतर सोपुरुषमेरु पर्वतकीकुंजोंविषे तथाइंद्रादिकलोकपालोंकीपुरियोंविषे देवतावोंके विमानोंविषेआरूढहोइकै अपसरावोंकेसाथिरमणकरेहै ॥ २ ॥ तिसतैंअनंतर पूर्वसंपादनकर्‍येहुए सुकृतोंकेसमूहका तथादुष्कृतोंका भोगकरिकैक्षयहुए तेयोगभ्रष्टपुरुष पुनःभूमिलोकविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ३ ॥ तहां इसभूमिलोकविषे जेपुरुष पवित्रहैं तथाश्रीमान्‌हैं तथाविद्यादिकश्रेष्ठगुणोंकरिकैसंपन्नहैं ऐसेश्रेष्ठपुरुषोंकेगृहविषे तेयोगभ्रष्टपुरुष जन्मकूंप्राप्तहोइकै पूर्वले योगभूमिकावोंकेसंस्कारोंकेवशतैं पुनः तिनयोगभूमिकावों

कूंहीं संपादनकरेहैं ॥ ४ ॥ तहांपूर्वजन्मविषे अभ्यासकन्याहुआ जोभूमिकाक्रमहै ॥ ताक्रमकूं विचारकरिकै तेबुद्धिमान्पुरुष तिसतैंउत्तरभूमिकावोंकेक्रमकूं प्रयत्नतैंसंपादनकरेहैं इति ॥ ५ ॥ इहां पूर्ववृद्धिकूंप्राप्तहुई भोगवासनाओंकीप्रबलतातैं अल्पकालविषेअभ्यासकरीहुई वैराग्यवासनावोंकीदुर्बलताकरिकै प्राणोंके उत्क्रमणकालविषे प्रादुर्भावकूंप्राप्तहुईहै भोगोंकिस्पृहाजिसकूं ऐसाजोसर्वकर्मोंकासंन्यासीहै सोईहीं वसिष्ठभगवान्नैं कथनकरयाहै ॥ और जोपुरुष वैराग्यवासनावोंकीप्रबलतातैं प्रकृष्टपुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तपरमेश्वरकेप्रसादकरिकै प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषे भोगोंकी स्पृहातैंरहितहै ॥ सोसंन्यासीतौ विषयभोगोंकेव्यवधानतैं विनाहीं ब्रह्मवियावाले दरिद्रीब्राह्मणोंके सर्वप्रमादकेकारणोंतैंरहितकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेयोगभ्रष्टपुरुषकूं पूर्वसंस्कारोंकीअभिव्यक्ति विनाहींप्रयत्नतैं होवैहै ॥ यातैं पूर्वयोगभ्रष्टपुरुषकीन्यांई इसद्वितियियोगभ्रष्टपुरुषकूं मोक्षविषे किंचित्मात्रभी शंकानहींहै ॥ सोयह द्वितीययोगभ्रष्टपुरुष वसिष्ठभगवान्नैं कथनकरयानहीं ॥ किंतु परमकृपालुश्रीकृष्णभगवान्नैंहीं (अथवायोगिनामेव) इसपक्षांतरकूं अंगीकारकरिकै कथनकन्याहै इति ॥ ४३ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष ब्रह्मवेत्तादरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं मध्यविषे विषयभोगोंकाव्यवधानहै ॥ यातैं व्यवधानतैंरहित पूर्वलेसंस्कारोंकेउद्बोधतैं तिसपुरुषकूं पुनःभी सर्वकर्मोकेसंन्यासपूर्वक ज्ञानकेश्रवणादिकसाधनोंकालाभहोवौ ॥ परंतु जोपुरुष श्रीमान्महाराजेचक्रवर्तियोंकेकुलविषे बहुतप्रकारकेविषयभोगोंकेव्यवधान करिकै उत्पन्नहुआहै ॥ तिसपुरुषकूं विषयभोगोंकेवासनावोंकी प्रबलतातैं तथाधनादिकप्रमादकेकारणोंकासंभवहोणेतैं व्यवधानतैंरहित पूर्वलेज्ञानसंस्कारोंकाउद्बोध कैसेहोवैगा ॥ तथा क्षत्रियराजाहोणेतैं सर्वकर्मोकेसंन्यासकरणेविषेअयोग्य तिसपुरुषकूं ज्ञानकेसाधनोंकालाभ कैसेहोवैगा किंतु नहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

(मू० श्लो०) पूर्वाभ्यासेनतेनैवह्रियतेह्यवशोपिसः ॥ जिज्ञासुरपियोगस्यशब्दब्रह्मातिवर्त्तते ॥ ४४ ॥ पूर्वाभ्यासेन । तेन । एव । ह्रियते । हि । अवशः । अपि । सः । जिज्ञासुः । अपि । योगस्य । शब्दब्रह्म । अतिवर्त्तते ॥ ४४ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन सोयोगभ्रष्टपुरुष नैहीप्रयत्नकरताहुआ भी तिस पूर्वअभ्यासनैं हीं प्रवृत्तकरीताहै जिसकारणतैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मका जिज्ञासुहूआ भी कर्मकांडरूप वेदकुं अतिक्रमणकरिकैस्थितहोवैहै ॥ ४५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन उत्तमलोकोंविषे भोगोंकूंभोगिकै श्रीमान्राजावोंकेगृहविषे जन्मकूंप्राप्तभयाजोयोगभ्रष्टपुरुषहै तिसयोगभ्रष्टपुरुषका अत्यंतव्यवधानयुक्तजो पूर्वलाजन्महै ॥ तिसपूर्वलेजन्मविषे संपादनकरयेजेज्ञानकेसंस्कारहैं ताकानाम पूर्वअभ्यासहै ॥ तिसपूर्वलेअभ्यासनै इसजन्मविषे मोक्षकेसाधनोंवासतैं नहींप्रयत्न

करताहुआभी सोयोगभ्रष्टपुरुष आपणेवशकरीताहै अर्थात् तिनपूर्वलेज्ञानसंस्कारोंनैं अकस्माततैंहीं भोगवासनातैंनिवृत्तकरिकै सोयोगभ्रष्टपुरुष मोक्षकेसाधनोंविषेप्रवृत्तकरीताहे ॥ हेअर्जुन यद्यपि तेज्ञानवासना अल्पकालकीअभ्यासकरीहैं और तेभोगवासना बहुतकालकीअभ्यासकरिहैं ॥ तथापि तेज्ञानवासनातौं वस्तुविषयकहे और तेभोगवासना अवस्तुविषयकहैं॥यातैं तेअल्पकालकीअभ्यासकरीहुईभीज्ञानवासना तिनबहुतकालकीअभ्यासकरीहुईभोगवासनावोंतैं अत्यंतप्रबलहैं॥तिन प्रबल ज्ञानवासनावोंकरिकै अप्रबलभोगवासनावोंकाअभिभवसंभवैहे ॥ आकाशविषेनीलताज्ञानजन्यवासना यद्यपि बहुतकालकीअभ्यासकरीहैं ॥ तथापि आकाशरूपरहितहैं इत्यादिकशास्त्रजन्य अल्पकालकीअभ्यासकरीहुईवासनावोनैं तिनवासनावोकाअभिभवकरीताहै ॥ यातैं वासनावोंकीप्रबलताविषेबहुत कालकेअभ्यासकीविषयता प्रयोजकनहींहैं ॥ तथावासनावोंकीदुर्बलताविषे अल्पकालकेअभ्यासकीविषयताप्रयोजकनहींहे ॥ किंतुवस्तुविषयत्व तिनवासनावोंकीप्रबलताविषे प्रयोजकहे ॥ और अवस्तुविषयत्वतिनवासनावोंकीदुर्बलताविषे प्रयोजकहे ॥ सोवस्तुविषयत्व ज्ञानवासनावोंविषेहींहे ॥ भोगवासनावोंविषेहैनहीं ॥ यातैं तेज्ञानवासनाहीं भोगवासनातैंप्रबलहैं ॥ हेअर्जुन यहवार्त्ता तूं अन्यत्र मतदेख ॥ किंतु आपणेविषेहींदेख ॥ जोतूंपूर्व केवल युद्धकरणेविषेहींप्रवृत्तहुआथा ॥ कोईज्ञानकेवासतै प्रवृत्तहूआनहींथा परंतुपूर्वली ज्ञानवासनावोंकीप्रबलतातैं अकस्माततैंहीं तूं इसरणभूमिविषे युद्धतैंउपरामहोइकै ज्ञानविषेहीं प्रवृत्तहोताभयाहैं ॥ इसीकारणतैंहीं पूर्वहमनैं (नेहाभिक्रमनाशोस्ति) यहवचन तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ तात्पर्ययह ॥ अनेकसहस्रजन्मोंकेव्यवधानवालाहुआभी सोज्ञानसंस्कार सर्वविरोधियोंकानाशकरिकै आपणेकार्यकूंअवश्यकरिकैं सिद्धकरैहैं इति ॥यद्यपि ताक्षत्रियराजाकूं सर्वकर्मोकेसंन्यासकरणेकाअभावहे ॥ तथापि ताक्षत्रियराजाकूं ज्ञानकाअधिकारतौं प्राप्तहींहै ॥ ईहां (ह्रियते) याशब्दकरिकैं श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या॥जैसेबहुतरक्षकपुरुषोंकेमध्यविषेविद्यमान जो गौ अश्वादिकद्रव्यहे ॥ सोद्रव्य आप जाणेकीइच्छानहींकरताहूआभी किसी चौरपुरुषनें तिनसर्वरक्षकपुरुषोंकाअभिभव करिकेआपणेसामर्थ्यविशेषतैंहीं हरणकरीताहैं ॥ तैसे बहुत ज्ञानकेप्रतिबंधकोंविषे विद्यमानजोयोगभ्रष्टपुरुषहैं ।। सोयोगभ्रष्टपुरुष आप ज्ञानकीइच्छानहींकरताहुआभी पूर्वजन्मकेबलवान्ज्ञानसंस्कारोंनैं आपणेसामर्थ्यविशेषतैं सर्वप्रतिबंधकोंकाअभिभवकरिकै आपणेवशकरीताहे ॥ अर्थात् पुनः ज्ञानविषेप्रवृत्तकरीताहैइति ॥ इसकारणतैंहीं संस्कारोंकीप्रबलतातैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकेजानणेकीइच्छाकरताहूआभी अर्थात् शुभइच्छारूपप्रथमभूमिकाविषेस्थितहुआभीजोसंन्यासीहै ॥ सोप्रथमभूमिकावालासंन्यासीभी तिसप्रथमभूमिकाविषेहीं मरणकूंप्राप्तहोइकै मध्यविषे बहुतप्रकारकेविषयोंकूंभोगकरिकै महाराजाचक्रवर्त्तियोंकेकुलविषे उत्पन्नहूआभी सोयोगभ्रष्टपुरुष पूर्वसंपादनकऱ्येहुएज्ञानसंस्कारोंकीप्रबलतातैं तिसीहींजन्मविषे कर्मकेप्रतिपादकवेदभागकूं अतिक्रमणकरिकै स्थितहोवैहे ॥ अर्थात् कर्मकेअधिकारकापरित्यागकरिकै ज्ञानकाअधिकारीहोवैहे ॥ इसकहणे

करिकैभी ज्ञानकर्मदोनोंकासमुच्चय खंडनहुआजानणा काहेतैं ज्ञानकर्मकेसमुच्चयपक्षविषे ज्ञानवान्पुरुषकूंभी कर्मकापरित्याग संभवतानहीं इति ॥ ४४ ॥ ❀ ॥
जबीइसप्रकारतैं प्रथमभूमिकाविषेमरणकूंप्राप्तहुआभी तथाअनेकभोगवासनावोंकरिकैव्यवहितहुआभी तथानानाप्रकारकेप्रमादकेकरणोंवाले महाराजाकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहोइकैभी सोयोगभ्रष्टपुरुष पूर्वसंपादनकऱ्येहुए ज्ञानसंस्कारोंकीप्रबलताकरिकै कर्मकेअधिकारकूंपरित्यागकरिकै ज्ञानकाहींअधिकारीहोवैहै ॥ तबी द्वितीयभूमिकाविषे अथवा तृतीयभूमिकाविषे मरणकूंप्राप्तहोइकै उत्तमलोकोंविषे नानाप्रकारकेभोगोंकूंभोगिकै पश्चात् महाराजाकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै॥ सोयोगभ्रष्टपुरुष ताकर्मकेअधिकारकूंपरित्यागकरिकै ज्ञानकाहीं अधिकारीहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ अथवा जोपुरुष तिनभूमिकावोंविषे मरणकूंप्राप्तहोइकै तिनउत्तमलोकोंविषेभोगोंकूंनहींभोगिकैहीं ब्रह्मविद्यावालेब्राह्मणोंकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोनिःस्पृहयोगभ्रष्टपुरुष कर्मकेअधिकारकूंपरित्यागकरिकै केवल ज्ञानकाहीं अधिकारीहोइकै तिसज्ञानके श्रवणादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिकै तिनसाधनोंकेज्ञानस्वरूपफलकरिकै संसारबंधनतैंमुक्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इसप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकैसिद्धअर्थकूं अब श्रीभगवान्कहेहै ॥

(मू० श्लो०) प्रयत्नाद्यतमानस्तुयोगीसंशुद्धकिल्बिषः ॥ अनेकजन्मसंसिद्धस्ततोयातिपरांगतिम् ॥ ४५ ॥ प्रयत्नात् । यतमानः । तु । योगी । संशुद्धकिल्बिषः । अनेकजन्मसंसिद्धः । ततः । याति । परां । गतिम् ॥४५॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोयोगीपुरुष पूर्वप्रयत्नतैं भी अधिकप्रयत्नकरेहै तथाधोयेगयेहैंपापरूपकिल्बिषजिसके तथा अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तभयाहै अंत्यका जन्माजिसकूं सोयोगीपुरुष तिनसाधनोंकेपरिपाकतैं परम मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ४५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वजन्मविषेकऱ्याजोप्रयत्नहै तिसप्रयत्नतैंभी अधिकअधिकप्रयत्नकूंकरताहुआ जोयोगीपुरुषहै ॥ अर्थात् पूर्वजन्मविषेसंपादनकऱ्येहुए ज्ञान संस्काररूपयोगकरिकैयुक्तजोपुरुषहै ॥ तथा तिसीयोगकेप्रयत्नरूपपुण्यकरिकै जोपुरुष संशुद्धकिल्बिषहै ॥ अर्थात् तिसपुण्यरूपजलकरिकै धोयेगएहैंज्ञानकेप्रति बंधकपापरूपमलजिसके ॥ इसीकारणतैंहीं ज्ञानसंस्कारोंकीवृद्धितैं तथापुण्यकीवृद्धितैं जोपुरुष अनेकजन्मोंकरिकैसंसिद्धहुआहै ॥ अर्थात् तिनपूर्वलेअनेक जन्मोंके ज्ञानसंस्कारोंकेप्रभावतैं तथातिनपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं प्राप्तभयाहै अंत्यजन्माजिसकूं ॥ ऐसा सोयोगभ्रष्टपुरुष तिनश्रवणादिकसाधनोंकेपरिपाकतैं ब्रह्मात्म ऐक्यसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै पुनरावृत्तितैंरहित परममुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै इति ॥ ४५ ॥ अब अर्जुनकेप्रति श्रद्धा अतिशयकेउत्पादनपूर्वक तिसपूर्वउक्तयोगकेविधानकरणेवास्ते श्रीभगवान् तापूर्वउक्तयोगकीस्तुतिकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तपस्विभ्योधिकोयोगीज्ञानिभ्योपिमतोधिकः ॥ कर्मिभ्यश्चाधिकोयोगीतस्माद्योगीभवार्जुन ॥ ४६ ॥ तपस्विभ्यः । अधिकः । योगी । ज्ञानिभ्यः । अपि । मतः । अधिकः । कर्मिभ्यः । च । अधिकः । योगी । तस्मात् । योगी । भव । अर्जुन ॥ ४६ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन सोतत्ववेत्तायोगी तपस्वीयोंतैंभी हमारेकूं अधिक संमतहै तथापरोक्षज्ञानीयोंतैं भी अधिक संमतहै तथा सोयोगी कर्मीपुरुषोंतैंभी अधिक संमतहै तिसकारणतै तूंअर्जुन ऐसायोगी होउ ॥ ४६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतर जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै मनोनाशवासनाक्षयकूंकरणेहाराजोयोगीपुरुषहै ॥ सोयोगीपुरुषकृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकूंकरणेहारेतपस्वीपुरुषोंतैंभी हमारेकूं अधिकसंमतहै ॥ अर्थात् तिसयोगीपुरुषकूं मैं तिनतपस्वीयोंतैंभी उत्कृष्टमानताहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (विद्ययातदारोहंतियत्रकामाः परागता नतत्रदक्षिणायंति नाविद्वांसस्तपस्विनः) ॥ अर्थयह ॥ यहतत्त्ववेत्तापुरुष मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीब्रह्मविद्याकरिकै तिसपदकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जिसपदविषेसर्वकामपरिअवसानकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तथाजिसपदविषे यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारेपुरुषभीप्राप्तहोतेनहीं ॥ तथाअविद्वान्तपस्वीभी प्राप्तहोतेनहीं इति ॥ इसकारणतैंहीं दक्षिणासहित ज्योतिष्टोमादिकर्मोंकूंकरणेहारेकर्मीपुरुषोंतैं भी सो योगीपुरुष हमारेकूं अधिक संमतहै ॥ काहेतैंतेकर्मीपुरुष तथातपस्वीपुरुष तत्त्वज्ञानतैं रहितहोणेतैंमोक्षकेयोग्यहैंनहीं ॥ और आत्माकेपरोक्षज्ञानवालेजेपुरुषहैं ॥ तिनपरोक्षज्ञानीयोतैंभी सो अपरोक्षज्ञानवाला योगीपुरुष हमारेकूं अधिकसंमतहै ॥ इसप्रकार आत्माकेअपरोक्षज्ञानवालेजेपुरुषहैं ॥ जेअपरोक्षज्ञानवालेपुरुष मनोनाशवासनाक्षयकेअभावतैंजीवन्मुक्तिके सुखकूंप्राप्तहुएनहीं ऐसेजीवन्मुक्तितैंरहित अपरोक्षज्ञानीयोंतैं मनोनाशवासनाक्षयवाला जीवन्मुक्तयोगीपुरुषहमारेकूं अधिकसंमतहै ॥ जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्ता जीवन्मुक्तयोगीपुरुष हमारेकूं सर्वतैंअधिकसंमतहै ॥ तिसकारणतैं तूंयोगभ्रष्ट अर्जुन इसकालविषे अधिकप्रयत्नकेबलतैंतत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंकूंसंपादनकरिकैजीवन्मुक्तयोगीहोउ ॥ सोजीवन्मुक्तयोगी (सयोगीपरमोमतः) इसवचनकरिकै पूर्वहमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ ईहां (हेअर्जुन) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे शुद्धताबोधनकरी ॥ ताकरिकै तिसअर्जुनविषे तायोगकेसंपादनकरणेकीयोग्यता सूचनकरी इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ अब सर्वयोगीयोंतैं श्रेष्ठयोगीका कथनकरताहुआ श्रीभगवान् इसषष्ठेअध्यायका उपसंहारकरेहै ॥

(मू० श्लो०) योगिनामपिसर्वेषांमद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान्भजतेयोमांसमेयुक्ततमोमतः ॥ ४७ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेआत्मसंयमयोगोनामषष्ठोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ६ ॥ योगिनाम् । अपि । सर्वेषां । मद्गतेन ।

अंतरात्मना । श्रद्धावान् । भजते । यः । मां । सः । मे । युक्ततमः । मतः ॥ ४७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्हुआ मेरेविषेस्थित अंतःकरणकरिकै मैंपरमेश्वरकूं भजेहै सोपुरुष सर्व योगीयोंकेविषे भी अत्यंतश्रेष्ठ मैंपरमेश्वरकूं संमतहै ॥ ४७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंभगवान्वासुदेवविषे पुण्यकर्मोंकेपरिपाकविशेषतैं उत्पन्नहुईप्रीतिकेवशतैं प्राप्तभयाजोअंतःकरणहै ॥ ताअंतःकरणकरिकै जोपुरुष पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं तथामहात्माजनोंकेसत्संगतैं मेरेभजनविषेहीं अत्यंतश्रद्धावान्हुआ मैंपरमेश्वरकूंभजेहै ॥ अर्थात् ईश्वरोंकाभीईश्वररूप मैंनारायणकूं सगुणकूं अथवानिर्गुणकूं यहकृष्णभगवान् मनुष्यहै तथादूसरेईश्वरोंकेसमानहै याप्रकारकेभ्रमकूंपरित्यागकरिकै जोपुरुष निरंतर चिंतनकरेहै॥सोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं वसुरुद्रआदित्यादिकअन्यदेवतावोंकेभजनकरणेहारे सर्वयोगियोंतैं युक्ततमरूपकरिकै अभिमतहै अर्थात् संपूर्णसमाहितचित्तवालेयुक्तपुरुषोंतैं तिसपुरुषकूं मैंपरमेश्वर अत्यंतश्रेष्ठकरिकैमानताहुं ॥ तात्पर्ययह ॥ योगाभ्यासकेक्लेशकेसमानहुएभी तथाभजनकेआयासकेसमानहुएभी मेरीभक्तितैंरहितयोगीपुरुषोंतैं मेराभक्त अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ और तूंअर्जुनभी हमारापरमभक्तहैं ॥ यातैं तूंअर्जुन विनाहींआयासतैं युक्ततम होणेकूंसमर्थहैं इति ॥ तहां इसषष्ठेअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं इतनाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तहांप्रथम चित्तशुद्धिकेहेतुभूत कर्मयोगकीमर्यादा कथनकरी ॥ तिसतैंअनंतर कऱ्याहुआहैसर्वकर्मोंकासंन्यासजिननैं ऐसेपुरुषकूंकरणेयोग्य अंगोंसहित योगकथनकऱ्या ॥ तिसतैंअनंतर अर्जुनकेआक्षेपकोनिराकरणपूर्वक मनकेनिग्रहकाउपाय कथनकऱ्या ॥ तिसतैंअनंतर योगभ्रष्टपुरुषके पुरुषार्थके शून्यताकी शंकाकूं शिथिलकऱ्या ॥ इतनैंसर्वअर्थकूंकथनकरिकै श्रीभगवान्नैं प्रथमषट्करूपकर्मकांडकूं तथात्वंपदार्थकेनिरूपणकूं समाप्तकरचा॥इसतैंअनंतर (श्रद्धावान्भजतेयोमाम्) इसवचनकरिकै सूचनकऱ्याजोभक्तियोगहै तथा ताभक्तियोगकाविषय जोतत्पदार्थरूपभगवान्वासुदेवहै ॥ तिनदोनोंकेनिरूपणकरणेवासते अगलेषट्अध्यायरूपउपासनाकांड आरंभकऱ्याजावैगा इति॥ ४७ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणाविरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां षष्ठोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ६ ॥ प्रथमंचकांडसमाप्तम् ॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥

इतिषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ सप्तमाऽध्यायप्रारंभः ॥ श्लोक ॥ यद्भक्तिंनविनामुक्तिर्यः सेव्यःसर्वयोगिनाम् ॥ तंवंदेपरमानंदघनंश्रीनंदनंदनम् ॥ अर्थयह ॥ भक्तजनोंकेउद्धारकरणेवास्तै श्रीनंदकेपुत्रभावकूंप्राप्तभयाजो श्रीकृष्णभगवान्है ॥ जिसकृष्णभगवान्कीभक्तितैंविना इनअधिकारीजनोंकूं मुक्तिकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा जोकृष्णभगवान् सर्वयोगीपुरुषोंका सेव्यहै ॥ अर्थात् सर्वयोगीपुरुष जिसका सेवनकरेहैं॥ तथा जोकृष्णभगवान् परमानंदघनहै ॥ तिसकृष्णभगवान्कूं मैं वारंवार वंदनकरूंहूं इति ॥ तहां सर्वकर्मोंकासंन्यासरूपसाधनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोप्रथमषट्क है ॥ ताप्रथमषट्ककरिकैश्रीभगवाननैं योगसहित त्वंपदकालक्ष्यरूप ज्ञेयवस्तु प्रतिपादनकर्‍या ॥ अब ध्येयब्रह्मकाप्रतिपादनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजो यहमध्यका द्वितीयषट्कहै ताद्वितीयषट्ककरिकै श्रीभगवान् तत्पदार्थरूपपरमात्माकूं प्रतिपादनकरैंगा ॥ ताद्वितीयषट्कविषेभी (योगिनामपिसर्वेषांमद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान्भजतेयोमांसमेयुक्ततमोमतः) इसश्लोककरिकै पूर्व कथनकर्‍याजोभगवद्भजनहै ताभगवद्भजनकेव्याख्यानकरणेवास्तै श्रीभगवाननैं यहसप्तमअध्यायप्रारंभकरीताहै ॥ तहां किसप्रकारका भगवत्कास्वरूप भजनकरणेकूंयोग्यहै ॥ तथातिसभगवत्केस्वरूपविषे यहमन किसप्रकारतैं स्थित होवै ॥ यहदोनोंप्रश्न अर्जुनकूं करणेयोग्यथे ॥ परंतु यहदोनोंप्रश्न अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति कर्‍येनहीं ॥ तौंभी परमकृपालुश्रीभगवान् विनाहींपूछेतैं अर्जुनके प्रति तिन दोनोंप्रश्नोंका उत्तर कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ मय्यासक्तमनाःपार्थयोगंयुंजन्मदाश्रयः ॥ असंशयंसमग्रंमांयथाज्ञास्यसितच्छृणु ॥ १ ॥ मयि । आसक्तमनाः । पार्थ । योगं । युंजन् । मदाश्रयः । असंशयं । समग्रं । मां । यथा । ज्ञास्यसि । तत् । शृणु ॥१॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषे आसक्तहैमनजिसका तथामैंएकपरमेश्वरकेशरण ऐसातूं पूर्वउक्तयोगकूं करताहुआ संशयतैंरहित सर्वविभूतिसंपन्न मैंपरमेश्वरकूं जिसप्रकारतैं जानैंगा तिसप्रकारकूं तूं श्रवणकर ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वजगत्की उत्पत्तिस्थितिलयतैंआदिलैके नानाप्रकारकीविभूतियोंकरिकैयुक्त जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषे आसक्तहैमनजिसका ऐसाजोतूंअर्जुनहैं ॥ इसीकारणतैंहीं मैंएकपरमेश्वरकेशरणकूंप्राप्तभयाजोतूंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेराजाकाभृत्यताराजाकेआश्रिततौंहोवैहै परंतु ताराजाविषे आसक्तमनवालाहोवैनहीं ॥ किंतु आपणे स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोविषेहीं आसक्तमनवालाहोवैहै ॥ इसप्रकारका तूं अर्जुनहैनहीं ॥ किंतु तूंअर्जुन तौं मैंएकपरमेश्वरकेहीं आश्रितहैं तथामैंएकपरमेश्वरविषेहीं आसक्तमनवालाहैं ॥ ऐसामुमुक्षु तूंअर्जुन अथवा तुमारेसरीखादूसराभीकोईमुमुक्षु षष्ठेअध्यायउक्तरीतिसैं मनके निरोधरूपयोग